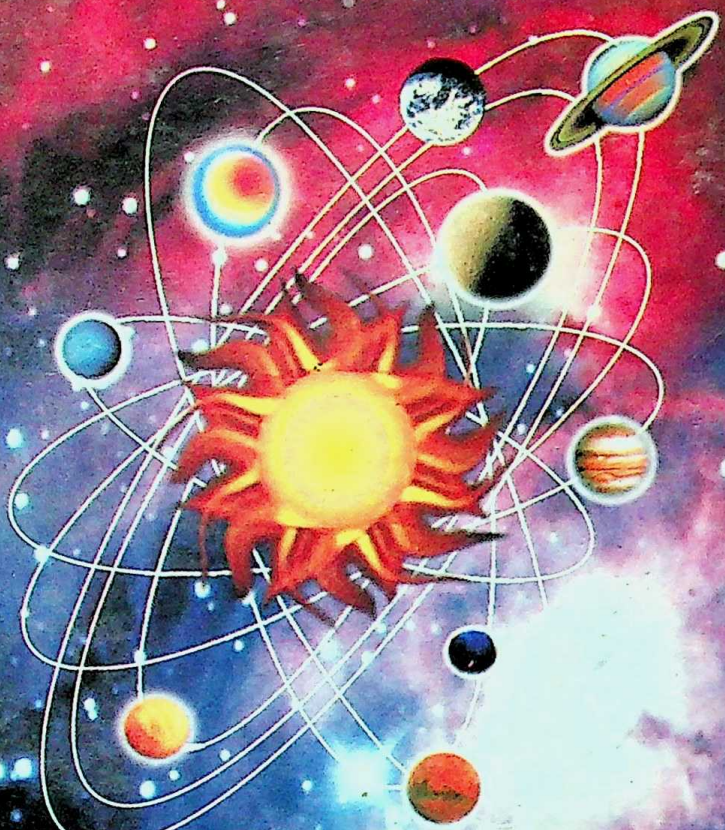
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्पूर्ण

ग्रह नक्षत्र शान्ति रहस्यम्

भाषा टीका



Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गंगाये नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री राधाकृष्णाय नमः

सम्पूर्ण ग्रह नक्षत्र शान्ति रहस्यम्

भाषा-टीका

- ○ वास्तु शान्ति
- ○ नवग्रह शान्ति
- ○ गण्डमूल शान्ति
- ○ गोमुख शान्ति
- ○ जेष्ठा शान्ति
- ○ आश्लेषा शान्ति
- ○ कार्तिक प्रसूति शान्ति
- ○ नाग पूजन

एवं नृसिंह पूजन विधान सहित

पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक' कृत

सरल भाषा टीका सहित

मूल्य : 100/-

प्रकाशक :
बी.एस. प्रमिन्दर
दिल्ली-५१

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार, हरिद्वार-२४९४०१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बी.एस. प्रमिन्दर प्रकाशन
दिल्ली-51

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-249401
फोन-01334-225619

नवीन संस्करण

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

अन्य पुस्तकें वी.पी.पी. से मंगवाये

भागवत पुराण भा.टी. सजिल्द	1000
शिवपुराण भा.टी सजिल्द	1400
देवीभागवत पुराण भा.टी सजिल्द	1400
विष्णु धर्मोत्तर पुराण भा.टी.	4300
ब्रह्माण्ड महापुराण भा.टी.	1800
गणेश महापुराण भा.टी.	1800
श्री वराह महापुराण भा.टी.	1250
श्री वायु महापुराण भा.टी.	1000
श्री पदम महापुराण भा.टी.	20000
श्री स्कन्द महापुराण भा.टी.	10000
श्री लिंग महापुराण भा.टी.	895
श्री ब्रह्म महापुराण भा.टी.	1000
श्री भविष्य महापुराण भा.टी.	1175
श्री हरिवंश पुराण भा.टी.	600
चारों वेद भा.टी. सहित	1400
मंत्र महोदयी भा.टी.	600
मंत्र महार्णव भा.टी.	1500
100 वर्षीय पंचाग	900
यज्ञ मीमांसा	325
दुर्गा उपासना कल्पद्रुम	300
कर्मठ गुरु	110
कर्मकाण्ड प्रदीप	145
निर्णय सिन्धु भा.टी.	800
धर्म सिन्धु भा.टी.	500
व्रतराज भा.टी.	800
भृगु संहिता महाशास्त्र हस्तलिखित	1900
भृगुसंहिता कुण्डलीरहस्य हस्तलिखित	2500
रावण संहिता भा.टी. हस्तलिखित	2500
श्री मार्कण्डेय महापुराण भा.टी.	500
श्री वृहद नारदीय पुराण भा.टी.	800
व्रतोध्यापन रहस्य भा.टी.	200
नृसिंहदेव गढ़वाल तंत्र मंत्र साधना	200
श्री गरुड़ महापुराण सम्पूर्ण भा.टी.	1800
श्री अग्नि महापुराण सम्पूर्ण भा.टी.	650
श्री कालिका महापुराण भा.टी.	1350

कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता, हरिद्वार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निवेदन

संसार में मनुष्य अपने पूर्वजन्म तथा वर्त्तमान जन्म में किये गये शुभाशुभ कर्म तथा नवग्रह नक्षत्रादि के प्रभाव के परिणाम स्वरूप शुभ-अशुभ, सुख-दुःख, धन, सन्तान, भार्या, गृह, आयु आदि फलों को प्राप्त करता है तथापि ग्रहों के अनुकूल न होने पर या सन्तान न होने, सन्तान का गण्डमूल, अभुक्तमूल में जन्म होने पर मनुष्य दुःख को प्राप्त होता है, जिसकी शान्ति करने से ग्रह नक्षत्रादि शुभ फल को प्रदान करते हैं।

प्रिय विद्वत् महानुभाव आपके आशीर्वाद से मैंने इस पुस्तक को आधुनिक शैली में संशोधन, सम्पादन, हिन्दी व्याख्या करके आपके सम्मुख प्रस्तुत किया है जिससे विद्यार्थियों, साधारण विद्वानों को इससे अवश्य ही लाभ होगा, साथ ही अनुष्ठान करने वाले वैदिकों, कर्मकाण्डियों, आचार्यों के लिए यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगी, क्योंकि कठिन परिश्रम से संशोधन कर अनेक जगह सरल भाषा का प्रयोग करके अनुष्ठान प्रेमियों के लिए इस पुस्तक को और भी परम उपयोगी बना दिया है।

प्रस्तुत पुस्तक में गणेश पूजन, संकल्प विधि, कलश, मातृका, ग्रह पूजन के साथ नवग्रह शान्ति, शिव पार्थिव पूजन एवं जप विधि, सन्तान गोपाल मन्त्र एवं जप विधि, २७ नक्षत्रों के जपार्थ मंत्र, संख्या, गण्डमूल, अभुक्त मूल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शान्ति, वास्तु पूजन, नृसिंह पूजन, गायत्री पुरश्चरण एवं जप विधान, पितृ तर्पण आदि प्रयोग को प्रस्तुत किया है। जिसका यथाविधि प्रयोग करने पर अनुष्ठान करने कराने वालों की मनोकामना अवष्य ही फलीभूत होगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है और मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक साधकों के लिए अत्यधिक लाभप्रद होगी।

कृपालु विद्वानों से निवेदन है कि इस पुस्तक में नरधर्मानुसार कोई त्रुटि मुझसे रह गयी हो तो भूल सुधार कर मुझे सूचना देने की कृपा करेंगे, जिससे पुनरावृत्ति में उसका सुधार किया जा सकेगा।

अन्त में मैं सर्वश्री जगतराम जी रतूड़ी जिन्होंने मुझे हर संभव सहायता देकर, श्री जगदीश प्रसाद जी शास्त्री जिन्होंने मुझे अनेक पुस्तकें देकर श्री सुरेश चन्द्र जी नौटियाल (मुखीमठ) जिन्होंने प्रूफ अध्ययन में सहायता देकर तथा ब्राह्मण समाज का आभार प्रकट करता हूँ जिनके अथक सहयोग से इस पुस्तक को पूर्ण कर सका।

९ प्रविष्ठा माघ २०५५
वसंत पञ्चमी
भाष्कर प्रयाग (भटवाड़ी)
उत्तरकाशी

सर्वविद्वज्जनानुरागी
पं. शिवस्वरूप प्रसाद
'याज्ञिक'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

पञ्चगव्य सम्मेलन	७	शनि शान्ति प्रयोग	४७
भूतोत्सारण	९	शनि स्तोत्र	४८
आसन पूजन	१०	राहु शान्ति प्रयोग	५०
स्वस्तिवाचन	१२	केतु शांति प्रयोग	५१
संकल्प	१६	अष्टयोगिनी पूजन	५२
गणपति पूजन	१८	शिव पार्थिव पूजन	५४
वरुण पूजन	२४	महामृत्युंजय कवच	६७
सप्तघृतमातृका पूजन	२७	महामृत्युञ्जय जपविधि	७०
षोडश मातृका पूजन	२७	महामृत्युञ्जय जप मंत्र	७२
अष्टवसु शान्ति	२८	महामृत्युञ्जयाष्टक	७४
नवग्रह शान्ति	२९	सन्तान गोपाल मंत्र	७६
सूर्यादिग्रह शान्ति	२९	श्री बाल रक्षा स्तोत्र	७७
माला संस्कार	३०	वसुदेवकृत कृष्णस्तोत्र	७८
सूर्य शान्ति प्रयोग	३२	नाग पूजन	८०
सूर्य द्वादश नाम	३४	प्रातः नाग स्मरण	८३
आरोग्यार्थ सूर्यार्घ्यदान	३६	रात्रि समय गरुड मंत्र	८३
चन्द्र शान्ति प्रयोग	३९	नक्षत्र शान्ति प्रयोग	८४
भौम शान्ति प्रयोग	४०	गण्डमूल अभुक्त मूलनक्षत्र	९३
ऋणमोचन मंगलस्तोत्र	४१	गोमुख प्रसव शान्ति	९५
बुध शान्ति प्रयोग	४३	मूल शान्ति प्रयोग	९८
बृहस्पति शान्ति प्रयोग	४४	रुद्रसूक्त के १६ मंत्र	
शुक्र शान्ति प्रयोग	४५		१०२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आशु शिशनो के १२ मंत्र	१०४	श्री नृसिंह पूजन	१४१
कृष्णुष्व पाज के ५ मंत्र	१०६	श्रीनृसिंह मंत्र	१४८
रक्षाहेणं के ४ मंत्र	१०६	श्री नृसिंह कवचम्	१४८
पुरणोक्त अभिषक	१११	गायत्री पुरश्चरण प्रयोग	१५१
ज्येष्ठा शान्ति प्रयोग	११४	पुरश्चरण के लक्षण	१५२
आश्लेषा शान्ति प्रयोग	११६	गायत्री देवी यंत्र पूजन	१५८
कार्तिकस्त्री प्रसूता शान्ति	११९	गायत्री शाप विमोचन	१६३
त्रिक प्रसव शान्ति	१२३	चाबीस मुद्राएं	१६४
ग्रहण जनन शान्ति	१२५	जप के बाद अष्ट मुद्राएं	१७१
वास्तु विधान	१२८	चौबीस गायत्री	१७३
पिण्ड निर्माण प्रमाण	१३०	शताक्षर गायत्री मंत्र	१७७
गृहवास्तु पूजन	१३१	पितृ तर्पण प्रयोग	१७७
६४ कोष्ठात्मक देव वास्तु	१३८	देव पूजन सामग्री	१८८

सम्पूर्ण पूजन रहस्य भाषा टीका

लेखक– शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में संध्या सभी देवी–देवताओं के पूजन, शांति पाठ, संकल्प मंत्र, स्वस्तिवाचन, कलश पूजन, नान्दी श्राद्ध, षोडश मातृका पूजन, नवग्रह पूजन, यज्ञ निर्माण पूजन, विष्णु पूजन, शिव पूजन, दुर्गा न्यास विधान पूजन, सर्वतोभद्र देवता स्थापना, अग्नि स्थापना, वारुणी हवन, रुद्र सूक्त, श्री सूक्त, गोदान आशीर्वाद मंत्र, महा मृत्युंजय जप पूजन, संकट नाशक गणेश स्त्रोत, नवनाग स्त्रोत, शनि स्त्रोत, श्रीराम स्तवन बहुत अच्छे ढंग से दी गयी है। प्रत्येक ब्राह्मण प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी पुस्तक आज ही खरीदें। मूल्य– 35/– रुपये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पञ्चगव्य सम्मेलन[१]

गोमूत्र-ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियोयोनः प्रचोदयात्॥

गोमूत्र को ताँबे के बर्तन में डालें।

गोमय-ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

गोमय मिलावें।

पय-ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवावाजस्य सङ्गथे॥

दूध मिलावें।

दधि- दधिक्राब्णो ऽअकारिषंजिष्णो रस्वस्य ब्वाजिनः
सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽ आयू ꣳ षितारिषत्॥

मंत्र से दही मिलावें।

घृत- ॐ तेजो ऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि
प्रियन्देवानामना धृष्टं देवयजनमसि॥

घी मिलावें।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्॥

---

१. पंचगव्य-

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
निर्दिष्टं पंचगव्यन्तु पवित्रं मुनिपुंगवै॥ (वशिष्ठ)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्र द्वारा कुशा से अभिमंत्रित कर लेवें। अभिमंत्रित कर पंचगव्य को छिड़क देवें-

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः तस्मा ऽ अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजन यथा च नः॥

पञ्चगव्य निम्न मंत्र से पी लेवें-

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनं पंचगव्यस्य दहत्यग्नीरिबेन्धनम्॥

अब आचमन करे-**ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। गोविन्दायनमः।**

हाथ धोयें, अब बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अनामिका में पवित्री धारण कर[१] अंगूठा अनामिका से जल अभिमंत्रित करें-

ॐ अपवित्रः पवित्रोर्वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

जल अपने शरीर में छिड़क लें-

---

१. पवित्र धारण-

मंत्रेण धारयेद्विप्रः पवित्रं सर्व कर्मसु।
मंत्रविना धृतं यत्तत् पवित्रं निष्फलं भवेत्॥ (प्रयोगपारिजाते)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसव ऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

॥ भूतोत्सारण ॥

बायें हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से उसे अभिमंत्रित करें-

ॐ रक्षोहणं बलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेद-महन्तं बलगमुत्किरामि। यम्ये समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमस-बन्धुर्निचखानेदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखात्कृत्याङ्किरामि॥

ॐ रक्षोहणो वो बलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो बलगहनो ऽ वनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनो वस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वाँ वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वाँ बलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ॥

ॐ रक्षसां भागो ऽसि निरस्त ꣳ रक्ष ऽ इदमह रक्षोऽभितिष्ठामीदमह ꣳ रक्षो ऽ धमं तमो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नयामि। घृतेन द्यावा पृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहाकृते ऽ ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्॥ ॐ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥

अब पूर्वादि दिशाओं में सरसो बिखेर दे-[१]

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजा (जप) कर्म समारभे॥

पूर्वादि दिशाओं में गन्धाक्षत आदि से पूजन कर लेवें।

॥ आसन पूजन ॥

ॐ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। जल छोड़ दें।

ॐ पृथिवी त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

---

१. भूतशुद्धि-

भूत शुद्धि विहिनेन जपपूजादिकं कृतम्।
सर्वं निरर्थकं विद्धि विपरीत फलार्थदम्॥ (वशिष्ट संहितायाम्)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

आसन का पूजन कर--

[१]**घण्टा पूजन**-ॐ सुपर्णो ऽसि गरुत्माँस्त्रिवृते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोमऽआत्मा छन्दा ꣳ स्यङ्गानि यजु ꣳ षि नाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णो ऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥ ॐ घण्टायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शंख पूजन-शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुण दैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिंविद्यादग्रे गंगा सरस्वतीम्॥ त्रैलोके यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छखंप्रपूजयेत्॥ यस्य नादेन दैत्यानां बलहानिर- जायत। देवानां ववृधे तेजो यात्यधर्मश्च संङ्क्षयम्॥

दीप पूजन[२]-ॐ अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् रुक्मो

---

१. स्नाने धूपे तथा दीपे नैवेद्ये भूषणे तथा।
घण्टानादं प्रकुर्वीतं तथा नीराजने ऽपि च॥ (यामले)

२. विनादीपेन सफला कर्मसिद्धर्न जायते।
अतः प्रकाशको दीपः पूर्वस्थाप्यो यथाविधि॥ (तन्त्रसार)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्चसा वर्चस्वान्। सहस्त्रदा ऽ असि सहस्त्रायत्वा॥

ब्राह्मण पूजन-ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः। सबुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ब्राह्मणों का पूजन गन्धाक्षत आदि से कर प्रार्थना करे-

यदर्चनं कृतं विप्रं तव विष्णुस्तद् रूपिणः।
प्रार्थना मम दीनस्य विष्णुवेतु समर्पणम्॥

यजमान का तिलक ब्राह्मण इन मंत्रों द्वारा करे-

ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषंचरतंपरितस्थुषः रोचन्ते रोचना- दिवि। युञ्जन्त्यस्यकाम्याहरीविपक्षसारथे। शोणा घृष्णू नृवा हसा॥

॥ स्वस्तिवाचन ॥

हाथ में पुष्प अक्षत लेवें-ॐ आनोभद्राः क्रतवोयन्तु विश्वतोदब्धासो ऽ अपरीतासऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ꣳ रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना ꣳ सख्यमुपसे दिमा वयं देवा न ऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण ॐ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥३॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्॥४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा ऽ अवसागमन्निह॥७॥ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥ शतमिन्नु शरदो ऽ अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता सपुत्रः।
विश्वे देवा ऽ अदितिः पंच जना ऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि॥११॥ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु शन्नः कुरु प्रजाभ्यो ऽ भयं नः पशुभ्यः॥१२॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न ऽआ सुव॥१३॥ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधि पति ँ हवामहे ब्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासिगर्भधम्॥१४॥ अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रि-कांकाम्पीलवासिनीम्॥१५॥ शुशान्तिर्भवतु॥ ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

इस प्रकार चतुर्दश नमस्कार कर गणेश का ध्यान करे- लाल पुष्प दूर्वा एवं लाल अक्षत हाथ में लेवें-

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये॥४॥
अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥५॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूति र्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम॥६॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मा ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्ताना योगक्षेम वहाम्यहम्॥७॥
स्मृते सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वरा।
देवा दिशंतु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥९॥
विनायकं गुरु भानु ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणाम्यादौ सर्व कार्यार्थ सिद्धये॥१०॥
तदैव लग्नं सुदिनं तदैव तारावलं चन्द्रवलं तदैव।
विद्यावलं दैववलं तदैव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥११॥
सर्वमंगल मांगल्ये! शिवे! सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि! नारायणि! नमोस्तुते॥१२॥

हाथ में रखे पुष्प अक्षतादि को गणेश को चढ़ा देवें।

संकल्प[1]

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोह्निद्वितीये परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तैकदेशे काशी कुरुक्षेत्र

१. संकल्प आवश्यकता-
संकल्पेन विना कर्म यत् किंचित् कुरुते नरः।
फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्धक्षयो भवेत्॥ (संस्कार भाष्करे)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयागादि नाना तीर्थ युक्त अमुक जनपदे तत् जनपदान्तर्गते अमुक मण्डले अमुकग्रामे पतित पावनी श्री गंगा- यमुनयोर अमुक दिग्विभागे श्री विक्रमादित्यसमयतो प्रभवादि षष्ठि संवत्सराणां मध्ये अमुकनाम संवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे, अमुक करणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त पुण्यफल प्राप्त्यर्थं अस्माकं सर्वेषां सकुटुम्बानां क्षेमस्थित्यायुरारोग्य एश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं त्रिविध तापोपशमनार्थं लाभार्थं क्षेमार्थं विजयार्थं मनकामना सिद्ध्यर्थं समस्त दुरितोपशान्त्यर्थम् श्री परमेश्वर प्रीतये अमुक संङ्ख्या अमुक जपात्मकं तदङ्गत्वेन निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपति पूजनं कलश पूजनं मातृका पूजनं, ग्रहपूजनं आचार्यादि ऋत्विग्वरणं सग्रहमखं अद्यारभ्य अमुक दिवस पर्यन्तं करिष्ये॥

ब्राह्मणो के हाथ में यजमान यज्ञ सूत्र बांध देवे तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मण भी यजमान के हाथ में रक्षा सूत्र बांध देवे। गणपति आदि देवताओं का पूजन पंचोपचार[१] अथवा षोडषोपचार[२] से करें-

गणपति पूजन

ॐ गणानान्त्वेति प्रजापति ऋषिः यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहन- ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्॥ गणपतये नमः आवाहयामि॥

प्रतिष्ठान-ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्य-ज्ञमिमंतनोत्वरिष्टंयज्ञ ꣳ समिमन्दधातु। विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ॥ प्रतिष्ठापन कर आसन

---

१. पंचोपचार पूजन- (जाबालिः)

ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम्।
नीराजनं प्रणामश्च पंचपूजोपकारकाः॥

अन्यच्च- गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं पंचते क्रमात्॥

२. षोडषोपचार-

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम्। मधुपर्कार्पणं स्नानं वसनाभरणानिच॥ सुगन्धसुमनौ धूपौ दीपो नैवेद्यमेव च। माल्यानुलेपनै चैव नमस्कारो विसर्जनम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवे-ॐ वर्मोऽस्मि समानामुद्यतामिव सूर्यः। इमंतमभित्तिष्ठामि यो मां कश्चाभिदासति॥ पाद्य से पैर धो लेवें-ॐ एतावानस्यमहिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि॥ अर्घ्य- धामन्ते विश्वं भुवनमाधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषिः। अपामनीके समिथे य ऽ आभृतस्तम-श्याम मधुमन्तं त ऽ ऊर्मिम्॥ आचमनीय जल समर्पण करें-ॐ इमम्मे वरुणश्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥

पयस्नान-ॐ पयसो रूपं यद्यवा दघ्नो रूपं कर्कन्धूनि। सोमस्य रूपं वाजिन ꣳ सौम्यस्य रूपमामिक्षा।

दधिस्नान-ॐ दधिक्राव्णो ऽ अकारिषंजिष्णो-रश्वस्य वाजिनः। सुरभि नोमुखा करत्प्रण ऽ आयू ꣳ षितारिषत्॥

घृतस्नान-ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

मधु स्नान-स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्व दिवः स ꣳ स्पृशस्पाहि मधु मधु मधु॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शर्करा स्नान-ॐ अपा ꣳ रस मुद्वयस ꣳ सूर्येसन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्ययोरसस्तंवो गृहणाम्युत्त- ममुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टंगृह्णां मेषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

गन्धोदक स्नान-ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्य परिधि रस्यग्निरिड ऽ ईडितः॥

उद्वर्तस्नान-ॐ अ ꣳ शुनाते ऽ अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषापरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदायरसो ऽअच्युत॥

तीर्थोदकस्नान-ॐ ये तीर्थानिप्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः। तेषा ꣳ सहस्त्रयोजने वधन्वानितन्मसि॥

शुद्धोदक स्नान-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो-मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो-रुणस्तेरुद्राय पशुपतये कर्णायामा ऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

वस्त्र-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म

दशोपचार-

अर्ध्यपाद्यंचाचमनं स्नानं वस्त्रनिवेदनम्।
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दश क्रमात्। (ज्ञानमालायाम्)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरुथमासदयत्स्वः। वासो ऽ अग्नेविश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो॥

यज्ञोपवीत-ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

गन्ध-ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनंस्त्वाम्बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

अक्षतॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया ऽ अधूषत। अस्तोषतस्वभानवो विप्रा न विष्ट्यामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥

पुष्प-ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा ऽ इव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः॥

दूर्वांकुर-ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

सौभाग्य द्रव्य-ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुंज्यायाहेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ꣳ सम्परिपातुविश्वतः॥

धूप-ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं यो ऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वाम्रः देवानामसि वह्नितम ꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीप-चन्द्रमा ऽ अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृह ꣳ हरिरेति कनिक्रन्दत्॥

नैवेद्य-ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्र दातारं तारिष ऽ ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

ताम्बूल-ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः। श्येनस्येव ध्रजतो ऽ अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जातरित्रतः स्वाहा॥

ऋतुफल-ॐ याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पायाश्चपुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥

दक्षिणा-ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः। तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्॥

दीप-ॐ आरात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुरप्रायि-धामभिः। दिवः सदा ꣳ सिबृहतीवितिष्ठस ऽ आत्वेषं वर्त्तते तमः॥

विशेषार्घ्य-रक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य-रक्षक। भक्तानां अभयं कर्ता त्राताभव भवार्णवात्॥ द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो। वरद त्वं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरं देहि वाच्छितं वाच्छितार्थद। अनेन सफलार्घ्येण फलदो ऽस्तु सदा मम॥

प्रार्थना-विध्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥ भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय॥ विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्त प्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णु रूपाय ते नमः। नमस्ते रुद्र रूपाय करिरूपाय ते नमः॥ विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्म चारिणे। भक्त प्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥ त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्त प्रियेति सुखदेति फल प्रदेति। विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥ लम्बोदरं! नमस्तुभ्यं सततं मोदकं प्रियः। निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्व कार्येषु सर्वदा॥ प्रार्थना समर्पण कर एक आचमन जल छोड़ दें-**अनया पूजया सांङ्ग सपरिवारः श्रीमहागणपतिः प्रीयतां ममः॥**

परिक्रमा- एकां चण्ड्या रवौ सप्त तिस्त्रो दद्याद्विनायके।
चतस्रो विष्णवे दद्याच्छिवेसार्द्ध परिक्रमा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरुण पूजन

यजमान पहले भूमि का स्पर्श करें-ॐ महीद्यौः पृथिवी च न ऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम् पिपृतान्नो भरीमभिः॥ अब यव डाल दें- ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजन् पारयामसि॥ यव के ऊपर कलश स्थापन मंत्र-ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्षोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयि॥ कलश को जल से भर लेवें- ॐ वरुणस्योस्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽ ऋत सदनमसि वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद॥ गन्ध प्रक्षेपण-त्वां गन्धर्वा ऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥ धान्यप्रक्षेपण-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोऽसि॥ सर्वोषधी कलश में डाल देवें-ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बभ्रूणामह ॐ शतं धामानि सप्त च॥ कलश में दूर्वा डाल देवे- ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥ कलश में कुशा डाल देवें-ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥ कलश में सप्तमृतिका डालने का मंत्र- ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ पूंगीफल कलश में डालें-ॐ याः फलीनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणिः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चत्व ॐ हसः॥ पंचरत्न डालने का मंत्र-[१] ॐ परिवाज पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥ दक्षिणा डालने का मंत्र-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ पञ्चपल्लवों को कलश में रख देवे-ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथयत् सनवथ

१. कनकं हीरकं नीलं पदम्रागश्च मौक्तिकम्।
अभावे सर्वरत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूरुषम्।। कलश में मोली बांध देवें-**ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।** अब पूर्ण पात्र को कलश के ऊपर रख देवें-**ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा ऽ इष मूर्ज ꣳ शतक्रतो।।** नारियल पर लाल वस्त्र लपेट कर मोली से बांध देवे। गंधादि लगाकर नारियल को कलश के ऊपर रखें-**ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्म ऽ इषाण सर्वलोकम्म ऽ इषाण।।** पूजन का विनियोग -**ॐ तत्वायामिति शुनषेफ ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता वरुणावाहने पूजने विनियोगः।** एक आचमन जल छोड़ देवे। वरुण आवाहन करने का मंत्र-**ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ꣳ समा न आयुः प्रमोषीः। ॐ भुर्भूवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीपनैवेद्यं समर्पयामि।** वरुण कलश का पूजन कर प्रार्थना करें- **देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वतोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राण प्रतिष्ठिता।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णु त्वं च प्रजापति।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा सपैत्रृका।।
त्वयितिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः। त्वत्
प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।। सानिध्यं कुरु
मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।। नमो नमस्ते स्फटिक
प्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय। सुपास हस्ताय
झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।। पाशपाणे
नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक। यावत् कार्य समाप्ति
स्या त्तावत्वं सुस्थिरोभवः।।

सप्त घृत-मातृका पूजन

ॐ श्रीश्चलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

षोडश मातृका पूजन

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातर लोकमातरः।।
धृतिपुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गणेशेनाधिका ह्येता वरदा भव पाणयः॥

पूजन पञ्चोपार या षोडशोपचार से कर प्रार्थना करे-

गणेश संयुक्ता देव्यो गौर्यादिमातृका स्मृताः।
प्रसीदन्तु हि कल्याणों निर्विघ्नं कुरुतावयम्।

अष्टवसु पूजन

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारं देवस्त्वासविता पुनातु। वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाः कामधुक्षः॥

ॐ ध्रुवाय नमः॥१॥ ॐ धराय नमः॥२॥ ॐ सोमाय नमः॥३॥ ॐ आपाय नमः॥४॥ ॐ अनिलाय नमः॥५॥ ॐ अनलाय नमः॥६॥ ॐ प्रत्यूषाय नमः॥७॥ ॐ प्रभासाय नमः॥८॥ ध्रुवाद्यष्टवसवे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥

पूजन कर प्रार्थना कर लेवें-

ॐ दिव्यवस्त्रादिव्यदेहा दिव्यमाला विभूषिता।
वसवो ऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा॥

॥ इति अष्टवसु पूजन ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवग्रह शान्ति

ॐ ग्रहा ऽ ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वो ऽ हमिष मूर्ज ꣳ समग्रभमुपयाम गृहीतो ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। सम्पृच्चौ स्थः सं मा भद्रेण पृङ्क्तं विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङ्क्तम्॥ ॐ सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। भौमाय नमः। बुधाय नमः। बृहस्पतये नमः। शुक्राय नमः। शनये नमः। राहवे नमः। केतवे नमः। गन्धं अक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि॥ पूजन करके प्रार्थना-ॐ ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतौ बुधश्चगुरुश्च शुक्र शनि राहु केतु सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥

सूर्यादिग्रहशान्तिः

जब सूर्यादिग्रह विपरीत फल देने वाले हों अथवा जन्म लग्न से, वर्ष लग्न से, गोचर, चौथे स्थान, अष्टम स्थान, द्वादश स्थान, अनिष्ट स्थान तथा तृतीय, एकादश स्थान में स्थित ग्रहों से शुभ फल की प्राप्ति हेतु ग्रह पूजन निम्नवत् करें-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकल्प-देशकालौ संकीर्त्य अद्ये० शुभपुण्य तिथौअमुकगोत्रो ऽमुक शर्मा (वर्मा वागुप्तो) ऽहं मम श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं मम कलत्रादिभिः सह जन्मराशेः सकाशात् नामराशे सकाशाद्वा जन्मलग्नात् वर्षलग्नात् गोचराद्वा चतुर्थाष्टमद्वादशाद्यनिष्टस्थानस्थित सूर्येणसूचितं सूचयिष्यमाणं च यत् सर्वारिष्टं तत् विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादशशुभ-स्थानस्थितददुत्तम फल प्राप्त्यर्थं तथा दशान्तरदशोपदशाजनित पीडाल्पायुर-द्यिदेवाधिभौतिकं आध्यात्मिक जनित क्लेश निवृत्तिपूर्वक शरीरारोग्यार्थं श्री सूर्यादिग्रह देवता प्रसन्नार्थं ग्रह शान्ति (जप[१]) करिष्ये।

तिल जल छोड़कर पहले जप के लिए माला का संस्कार कर लेवें-

माला संस्कार

जप के लिए संस्कारित माला का होना अत्यन्त आवश्यक है, यदि माला का संस्कार न किया गया हो तो निम्न प्रकार से माला के संस्कार करें-

---

स्थानभेद से जप फल-गृहे जपं समं विद्याद् गोष्ठे शतगुणं भवेत्।
नद्या शतसहस्त्रस्यादनन्तं शिव सन्निधौ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहले माला को कुशोदक सहित पंचगव्य से धो देवें-
ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लं ॡं ए ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं वं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं।

माला पंचगव्य से धोकर के पीपल के पत्ते के ऊपर स्थापित कर देवें। पुनः जल से धो देवें-
ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्यौजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥

चन्दन चढ़ाने का मंत्र-
ॐ वाम देवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बल प्रमथनाय नमः सर्व भूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

धूप चढ़ाने का मंत्र-ॐ अघोरेभ्यो ऽ थघोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते ऽ अस्तु रुद्र रूपेभ्यः॥

कस्तूरी चन्दन लेपन मंत्र-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

प्रत्येक मणि (रुद्राक्ष दाना) को दस या एक सौ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बार मंत्रित करने का मंत्र-

ॐ ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपति ब्रह्माशिवो मे ऽ अस्तु सदा शिवोऽम्॥

मेरु को एक सौ बार मंत्रित करने का मंत्र-

ॐ अघोरेभ्यो ऽ थघोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते ऽ अस्तु रुद्र रूपेभ्यः॥ माला[१] का पूजन कर प्रार्थना करे-

महामाये महामाले सर्वशक्ति स्वरूपिणि। चतुर्वर्ग- स्त्वयिन्यस्तस्मान्मे सिद्धिदाभव॥ निर्विघ्नं कुरुमाले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीदमम सिद्धये॥

॥ इति माला संस्कार ॥

॥ सूर्य शान्ति प्रयोगः ॥

ॐ आ कृष्णेनेति मंत्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरस ऋषिः सूर्योदेवता त्रिष्टुप्छन्दः सूर्य प्रीतये सूर्यपूजने (जपे) विनियोगः॥ रक्त पुष्प हाथ में लेकर सूर्य का ध्यान-

१. स्वहस्तग्रथिता माला स्वहस्ताद् घृष्ट चन्दनम्।
स्वहस्तलिखितं स्तोत्रं शक्रस्यापिश्रियं हरेत्॥ (चा.नी.)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदयगिरिमुपेतं भाष्करं पद्महस्तं निखिल भुवननेत्रं रत्नरत्नोपमेयम्। तिमिरकरिमृगेन्द्रं बोधकं-पद्मिनीना सुरवरमभि वन्दे सुन्दरं विश्ववंद्यम्॥

स्वर्ण निर्मित सूर्य प्रतिमा को पुष्प अर्पण करें।

आवाहन-आवाहयेतं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्व-वाहंद्विमणिग्रहेशं। सिन्दूरवर्णं प्रतिमाव भासं भजामि सूर्यं कुलवृद्धिहेतवः॥

प्रतिष्ठापन-ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यप गोत्र रक्तवर्ण भोः सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सूर्याय नमः श्री सूर्यं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥

श्री सूर्य भगवान का पूजन जल, पंचामृत, गन्ध ाक्षत, रक्त पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवें।

प्रार्थना-नमो धर्म विधात्रेहि नमो कर्मसु साक्षिणे। नमो प्रत्यक्ष देवाय भाष्कराय नमो नमः॥

सूर्यदान के द्रव्य-सोना, सवत्सगोदान, गुड़,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताम्र पात्र, लाल वस्त्र, गेहूं, मसूर दाल, लाल पुष्प। पूजन दान रविवार के दिन करना श्रेष्ठ है। सूर्य पीड़ा निवृत्ति के लिए माणिक्य धारण करें। जप के लिए मंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः॥

जप संख्या ७०००।

॥ सूर्य द्वादश नामः ॥

ॐ आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः।
तृतीयं भाष्कर प्रोक्तं चतुर्थं तु प्रभाकरः॥१॥
पञ्चमं तु सहस्त्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः।
सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं तु विभावसुः॥२॥
नवमं दिनकृत्प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकम्।
एकादशं त्रयीमूर्तिः द्वादशं सूर्यएव च॥३॥
द्वादशादित्य नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः।
दुःख प्रणाशनं चैव सर्वदुःखं च नश्यति॥४॥
दद्रुकुष्ठहरं चैव दारिद्र्यं हरते ध्रुवम्।
सर्वतीर्थ प्रदं चैव सर्वकाम प्रवर्धनम्॥५॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय भक्त्या नित्यमिदं नरः

ग्रहयाग में अग्निनाम- आदित्यै 'कपिलो' नाम 'पिंगल' सोम उच्यते।
'धूम्रकेतु स्तथा भौमे 'जाठराग्नि' र्बुधे स्मृतः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सौख्यमायु स्तथारोग्यं लभते मोक्षमेव च॥६॥
अग्निमीले नमस्तुभ्यमिषेत्वोर्जे स्वरूपिणे।
अग्ने आयाहि वीतस्त्वं नमस्ते ज्योतिषां पते॥७॥
शं नो देवी नमस्तुभ्यं जगच्चक्षुर्नमोऽस्तुते।
पञ्चमायोपवेदाय नमस्तुभ्यं नमो नमः॥८॥
पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भ समद्युतिः।
सप्ताश्व रथसंयुक्तो द्विभुजः स्यात्सदा रविः॥९॥
आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिन दिने।
जन्मान्तर सहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते॥१०॥
एक चक्रो रथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः।
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः॥११॥

प्रातः काल सूर्य के द्वादश नाम उच्चारण से सूर्य कृत पीड़ा की निश्चित रूप से निवृत्ति होती है, तथा दुःख नाश, कुष्ठ आदि हरण, दारिद्र्य नाश एवं सुख प्राप्ति के लिए उपरोक्त पाठ अवश्य करें॥

॥ इति सूर्य द्वादश नाम ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। आरोग्यार्थं सूर्यार्घ्यदान ।।

सूर्योदय के समय सम्पूर्ण ज्वर एवं नेत्र रोग से रक्षा हेतु एक पात्र में जल तथा जल में लाल चन्दन, लाल पुष्प, अक्षत रखकर पुनः एक तांबे के बर्तन से सूर्य के हंसादि नाम से प्रत्येक बार अर्घ्य के दिये जल को बड़े पात्र अथवा जल में दान करें-

ॐ हंसाय नमः।।१।। ॐ भानवे नमः।।२।।
ॐ सहस्त्रांशवे नमः।।३।। ॐ तपनाय नमः।।४।।
ॐ तापनाय नमः।।५।। ॐ रवये नमः।।६।।
ॐ विकर्तनाय नमः।।७।। ॐ विवस्वते नमः।।८।।
ॐ विश्वकर्मणे नमः।।९।। ॐ विभावसवे नमः।।१०।।
ॐ विश्वरूपाय नमः।।११।। ॐ विश्वकर्त्रे नमः।।१२।।
ॐ मार्तण्डाय नमः।।१३।।ॐ मिहिराय नमः।।१४।।
ॐ अंशुमते नमः।।१५।। ॐ आदित्याय नमः।।१६।।
ॐ उष्णगवे नमः।।१७।। ॐ सूर्याय नमः।।१८।।
ॐ अर्यमणे नमः।।१९।। ॐ व्रघ्नाय नमः।।२०।।
ॐ दिवाकराय नमः।।२१।।ॐ द्वादशात्मने नमः।।२२।।

गुरो चैव 'शिखी' नाम शुक्रे भवति 'हाटकः'।
शनैश्चरे 'महातेजा' राहोश्चैव 'हुताशनः'।।
केतूनां तु 'महारौद्रो' वह्निस्याद् ग्रहभेदतः।। (कुशकण्डिकाभाष्ये)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सप्त हयाय नमः॥ २३॥ॐ भाष्कराय नमः॥२४॥
ॐ अहस्कराय नमः॥२५॥ ॐ खगाय नमः॥२६॥
ॐ सुराय नमः॥२७॥ ॐ प्रभाकराय नमः॥२८॥
ॐ श्रीमते नमः॥२९॥ ॐ लोकचक्षुषे नमः॥३०॥
ॐ ग्रहेश्वराय नमः॥३१॥ ॐ लोकेशाय नमः॥३२॥
ॐ लोकसाक्षिणे नमः॥३३॥ ॐ तमोरये नमः॥३४॥
ॐ शाश्वताय नमः॥३५॥ ॐ मुचये नमः॥३६॥
ॐ गभस्तिहस्ताय नमः॥३७॥ ॐ तीव्रांशवे नमः॥३८॥
ॐ तरणये नमः॥३९॥ ॐ सुमहोरुणये नमः॥४०॥
ॐ द्युमणये नमः॥४१॥ ॐ हरिदश्वाय नमः॥४२॥
ॐ अर्काय नमः॥४३॥ॐ भानुमते नमः॥४४।
ॐ भयनाशनाय नमः॥४५॥ ॐ छन्दोऽश्वाय नमः॥४६॥
ॐ वेद वेद्याय नमः॥४७॥ ॐ भास्वते नमः॥४८॥
ॐ पूष्णो नमः॥४९॥ ॐ वृषाकपये नमः॥५०॥
ॐ एकचक्ररथाय नमः॥५१॥ॐ मित्राय नमः॥५२॥
ॐ मन्देहारये नमः॥५३॥ॐ तमिस्त्रहन्त्रे नमः॥५४॥
ॐ दैत्यहन्त्रै नमः॥५५॥ ॐ पापहर्त्रे नमः॥५६॥
ॐ धर्माय नमः॥५७॥ ॐ प्रकाशकाय नमः॥५८॥

नृसिहार्कवराहाणां तांत्रिकं वैदिकं तथा।
विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्॥ (देवी भागवत)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ हेलिकाय नमः॥५९॥ ॐ चित्रभानवे नमः॥६०॥
ॐ कलिघ्नाय नमः॥६१॥ ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः॥६२॥
ॐ दिक्पतये नमः॥६३॥ ॐ पद्मिनीनाथायनमः॥६४॥
ॐ कुशेशयकराय नमः॥६५॥ॐ हरये नमः॥६६॥
ॐ घर्मरश्मये नमः॥६७॥ ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः॥६८॥
ॐ चण्डांशवे नमः॥६९॥ ॐ कश्यपात्मजाय नमः॥७०॥

इस प्रकार उपरोक्त नाम से प्रत्येक अर्घ्य के साथ प्रणाम करते हुए सूर्यार्घ्य दान से सम्पूर्ण ज्वर, नेत्र रोग, शोक आदि दूर होते हैं।

॥ इति आरोग्यार्थ सूर्यार्घ्यदान॥

सूर्य गायत्री

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय
धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥

जप के बाद अर्कयुक्त पायस घी से दशांश हवन करे।[१]

॥ इति सूर्य शान्ति प्रयोग ॥

जपाद्दशांशतो होमस्तर्पणं तद्दशांशतः।
मार्जनं तद्दशांशेन दशांशद्विप्रभोजनम्॥ (परशुरामकारिकायाम्)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ चन्द्रशान्ति प्रयोगः ॥

विनियोग-ॐ इमं देवा इति मंत्रस्य वरुण ऋषिः अग्निदेवता सोम प्रीतये सोमपूजने (जपे) विनियोगः॥

ध्यानम्

श्वेत पुष्प लेकर चन्द्रमा का ध्यान-

श्वेताम्बरः श्वेत विभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरोद्विवाहु।
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातुदेवः॥

प्रतिष्ठापन-ॐ इमन्देवा ऽ असपत्न ꣳ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते जेष्ठ्याय महते ज्यानराज्यायेन्द्र सेन्द्रियाय। इममुख्य पुत्रममुख्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वो ऽ मीराजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा॥ चन्द्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥

चन्द्र का पूजन जल, दूध, गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, दक्षिणा आदि से कर देवें।

चन्द्रदान के द्रव्य-श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, दधि,

नवग्रह समिधा-

अर्कः पलाशखदिरावपमार्गोऽथ पिप्पलः।
उदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्चसमिधः क्रमात्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घी, शंख, चावल, मोती, चान्दी, कपूर, सोना। पूजन सोमवार के दिन श्रेष्ठ होता है।

चन्द्र पीड़ा निवृत्ति के लिए मोती धारण करें।

चन्द्र के लिए जप मंत्र-ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः॥

जप संख्या-११०००।

चन्द्र गायत्री-ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात्॥

जप के बाद पलाशयुक्त पायस घी से दशांश हवन करें

॥ इति चन्द्र शान्ति प्रयोग॥

॥ भौम शान्ति प्रयोगः ॥

विनियोग-ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

रक्त पुष्प हाथ में लेकर भौम का ध्यान-

ध्यानम्-रक्तमाल्याम्बर धरः शक्तिशूल गदाधरः।
चतुर्भुजो मेष गमो वरदः स्याद्धरासुतः॥

प्रतिष्ठापन-ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भौमाय नमः।। भौम इहागच्छ इहतिष्ठ भौमं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

मंगल का पूजन जल, दूध, गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीपक नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवें। **भौमदान के द्रव्य**- मूंगा, गेहूं, मसूर, गुड़, सोना, रक्त वस्त्र, लाल पुष्प, ताम्र।।

पूजन मंगलवार के दिन करना श्रेष्ठ है। भौम पीड़ा निवृत्ति के लिए मूंगा धारण करें। मंगल के लिए जप मंत्र- **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।।**

जप संख्या-१००००।

भौम गायत्री-ॐ भूमिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि। तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

जप के बाद खादिर युक्त पायस घी से दशांश हवन करें।

अथ

।। ऋणमोचक मंगल स्तोत्र ।।

मंगल ऋण हरने एवं द्रव्य प्रदान करने वाला ग्रह है। मंगल के नाम उच्चारण से सम्पूर्ण ऋण की निवृत्ति एवं धन प्राप्ति तथा रोग मुक्ति होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मंगलो भूमि पुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्म विरोधकः॥१॥

लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपा करः॥
धरात्मजः कुजौ भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥२॥

अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ता ऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥३॥

एतानि कुजनामानी नित्यं यः श्रद्धयापठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रममाप्नुयात्॥४॥

धरणी गर्भसंभूतं विद्युत्कांति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥५॥

स्तोत्रं अगारकस्यैतत्पठनीयं सदानृभिः।
न तेषां भौमजा पीड़ा स्वल्पापि भवतिक्वचित्॥६॥

अंगारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सल।
त्वां नमामिममाशेषमृणमाशु विनाशय॥७॥

ऋणरोगादि दारिद्र्यं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भयक्लेश मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥८॥

अतिवक्त्र दुराराध्य भोगमुक्त जितात्मनः।
तुष्टोददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्॥९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विरंचिशक्र विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्वेन ग्रहराजो महाबलः॥१०॥
पुत्रान्देहि धनंदेहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रुणां च भयात्ततः॥११॥
एभिर्द्वादशाभिः श्लोकेर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा॥१२॥

॥ इति ऋणमोचक मंगल स्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

॥ बुध शान्ति प्रयोगः ॥

विनियोग-उद्बुध्यस्वेति मंत्रस्य परमेष्ठि प्रजापति ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बुधो देवता बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

जया पुष्प हाथ में लेकर बुध का ध्यान-

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजोदण्डधरश्चहारी।
चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिहाधिरुढो वरदो बुधश्च॥

प्रतिष्ठापन-ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥
बुधाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

बुध का पूजन जल, दूध, गन्धाक्षत, पुष्प, धूप,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीपक, नैवेद्य से कर देवे। दक्षिणा चढ़ा देवें।

बुध दान के द्रव्य-जया पुष्प, हरित वस्त्र, कांस्य मूंग, सुवर्ण, पन्ना, कपूर।

बुध का पूजन बुधवार के दिन करें।

बुध पीड़ा निवृत्ति के लिए पन्ना धारण करे।

बुध जप मंत्र-ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः॥

जप संख्या- ९०००।

बुध गायत्री-ॐ चन्द्रसुताय विद्महे रोहिणी प्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥

जप के बाद अपामार्ग मिश्रित पायस घी से दशांश हवन करें।

॥ इति बुध शान्ति प्रयोग ॥

॥ बृहस्पति शान्ति प्रयोगः ॥

विनियोग-बृहस्पतेति मंत्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मादेवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

पीत पुष्प हाथ में लेकर बृहस्पति का ध्यान-**पीताम्बरः पीतवपुः किरीटि चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्ष सूत्रं च कमण्डलुश्च दण्डं च विभ्रद्वरदोस्तु मह्यम्॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिष्ठापन-ॐ बृहस्पते ऽ अतियदर्य्योऽअर्हा-द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवस ऽ ऋत प्रजात् तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्॥ बृहस्पते नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

बृहस्पति दान के द्रव्य-पीले पुष्प, पीले वस्त्र, सोना, खाण्ड, हल्दी, मोदक, लवण, चना आदि। बृहस्पति पूजन बृहस्पतिवार को करना श्रेष्ठ है। बृहस्पति पीड़ा निवृत्ति के लिए पुखराज धारण करें।

बृहस्पति जप मंत्र-ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः॥

जप संख्या- १६०००।

बृहस्पति गायत्री-ॐ अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥

जप के बाद पीपल युक्त पायस घी से दशांश हवन करें।

॥ इति बृहस्पति शान्ति प्रयोग ॥

॥ शुक्रशान्ति प्रयोगः ॥

विनियोग-अन्नात्परिस्रुतेति मन्त्रस्य प्रजापतिऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शुक्रोदेवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्वेत पुष्प लेकर शुक्र का ध्यान-श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटि चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्ष सूत्रं च कमण्डलुश्च दण्डं च बिभ्रद्वरदोस्तुमह्यम्॥

प्रतिष्ठापन-ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रिय मिदम्पयोमृतम्मधु॥ शुक्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि॥

शुक्र का पूजन जल, दूध, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवें।

शुक्रदान के द्रव्य-श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, चावल, घी, सोना, हीरा, दूध, धेनु, चांदी आदि। शुक्र पीड़ा निवृत्ति के लिए हीरा धारण करे।

शुक्र जप मंत्र-ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः॥

जप संख्या-१९०००।

शुक्र गायत्री-भृगुवंश जाताय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥

जप के बाद औदुम्बरयुक्त पायस घी से दशांश हवन करें।

॥ इति शुक्र शान्ति प्रयोग ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। शनि शान्ति प्रयोगः ।।

विनियोग-शन्नो देविति मंत्रस्य, सिन्धुद्वीप ऋषि गायत्री छन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

ध्यान-नीलांबरः शूलधरः किरीटि गृध्रास्थित स्त्रासकरो धनुष्मान्। चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदास्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी।।

प्रतिष्ठापन-ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये शय्योरभिस्त्रवन्तु नः।।

शनैश्चराय नमः आवाहयामि, स्थापयामि पूजयामि।।

शनि का पूजन जल, दूध, गन्ध अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवें।

शनिदान के द्रव्य-कृष्ण पुष्प, कृष्ण वस्त्र, नील, तिल, गुड़, तेल, उड़द, लोहा, सोना आदि। शनि पूजन शनिवार के दिन करें।

शनि पीड़ा निवृत्ति के लिए नीलम धारण करें।

शनि जप मंत्र-ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।

जप संख्या-२३०००।

शनि गायत्री-ॐ कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जप के बाद शमीयुक्त पायस घी के दशांश हवन करें।

एक लोहे के पात्र में तेल रखकर उसका पूजन कर, अपने मुख की छाया देखकर, कृष्ण तिल उसमें डाल देवे। छाया पात्र दान कर दें।

॥ शनिस्तोत्रम् ॥

विनियोग-अस्य श्री शनैश्चर स्तोत्रस्य, दशरथ ऋषिः, शनैश्चरो देवता, त्रिष्टुप्छन्दः, शनैश्चर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

दशरथ उवाच-कोणोऽतको रौद्रयमो ऽथ वभ्रुः कृष्णशनिपिंगल मन्द सौरिः। नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥१॥ सूरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गंधर्व विद्याधर पन्नगाश्च। पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥२॥ नरानरेन्द्राः पशवोमृगेन्द्रा वन्याश्चये कीटपतंगभृगाः। पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्री रवि नन्दनाय॥३॥ देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेना निवेशाः पुरपत्तनानि। पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥४॥ तिलैर्यवैर्माष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुडान्नदानै लोहेन नीलाम्बरदानतो वा। प्रीणाति मंत्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥५॥ प्रयागकूले यमुनातटेवा सरस्वती पुण्यजले गुहायाम्। यो योगिनां ध्यान गतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥६॥ अन्याप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्ठस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्। गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥७॥ स्त्रष्टा स्वयं भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी। एकस्त्रिधा ऋग्यजुः साममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरवि- नन्दनाय॥८॥ शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुवांधवैश्च। पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाण पदं तदंते॥९॥ कोणस्थ पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोंऽतको यमः। सौरि शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः॥१०॥ एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। शनैश्चर कृता पीड़ा न कदाचित् भविष्यति॥११॥

दशरथोक्त शनैश्चर स्तोत्र पाठ से शनिजनित पीड़ा दूर होती है तथा शनिवार के दिन शनि स्तोत्र पाठ करने से पुत्र प्राप्ति, कीर्तिलाभ आदि की प्राप्ति होती है।

॥ इति शनैश्चर स्तोत्र सम्पूर्णम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। राहु शान्ति प्रयोगः।।

विनियोग-कयानश्चित्रेति मंत्रस्य वामेदव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवताः, राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

पुष्प लेकर राहु का ध्यान-नीलाम्बरो नीलवपु किरीटिकरालवक्त्रः करवालसूली। चतुर्भुजश्-चक्रधरश्च राहुः सिहासनस्थो वरदोस्तुमह्ययम्।।

प्रतिष्ठापन- ॐ कयानश्चित्रऽ आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता।। राहवे नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।।

राहू का पूजन जल, दूध, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवे।

राहु दान के द्रव्य-मेंढ़ा, काला वस्त्र, कम्बल, गोमेद, लोहा, सोना, तिल, ताम्र, सप्तधान्य, नारियल आदि।

राहु पीड़ा निवृत्ति के लिए गोमेद धारण करे।

राहु जप मंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः राहवे नमः।।

जप संख्या- १८०००।

राहु गायत्री-ॐ नीलवर्णाय विद्महे सैहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्। जप के बाद दूर्वायुक्त घी पायस से दशांश हवन करें।

।। इति राहु शान्ति प्रयोगः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ केतु शान्ति प्रयोगः॥

विनियोग-ॐ केतुं कृण्वन्निति मंत्रस्य, मधुच्छन्द ऋषिः गायत्रीच्छन्दः, केतुर्देवता केतु प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

पुष्प लेकर ध्यान-

धूम्रोद्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृधासनस्थो विकृताननश्च।
किरीट केयूर विभूषितोयः सदास्तु मे केतु गणः प्रशान्तः॥

प्रतिष्ठापन-केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ केतवे नमः। आवहयामि स्थापयामि, पूजयामि॥

केतु का पूजन जल, दूध, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवें।

केतु दान के द्रव्य-कृष्ण वस्त्र, कस्तूरी, शस्त्र, कम्बल, बकरा, तिल, सोना, सप्तधान्य आदि।

केतु पीड़ा निवृत्ति के लिए वैडूर्य धारण करें।

केतु मंत्र-स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः॥

जप संख्या-१८०००।

केतु गायत्री-ॐ अत्रवाय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतु प्रचोदयात्।

जप के बाद कुशयुक्त पायस घी से दशांश हवन करें।

॥ इति केतु शान्ति प्रयोगः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्ट योगिनी पूजन

१-मंगला-विनियोग-परिवृक्तेवेति मुद्गल ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मंगला देवता मंगलावाहने विनियोगः। एक आचमन जल छोड़ दें।

मंत्र-ॐ परिवृक्ते वपति विद्यमान ॐ पीप्याना-कूचक्रेणैव सिञ्चम। एष्यैष्या चिद्रथ्या जयेम सुमंगलं सिनवदस्तु सातम्॥

२-पिंगला-विनियोग-अस्मिन्निति काश्यप-ऋषिर्गायत्री छन्द पिंगला देवता पिंगला वाहने विनियोगः॥ जल छोड़ दें।

मंत्र-ॐ अस्मिन् पिशंगमिन्दवो दध ातावेनमादिशे यो अस्मभ्यरावा॥

३-धान्या-विनियोग-धन्येति भरद्वाजऋषि-स्त्रिष्टुप्छन्दो धन्या देवता धन्यावाहने विनियोगः॥ जल छोड़ दें।

मंत्र-ॐ धन्याचिद्धित्वे धिषणावष्टि प्रदेवाञ्जन्म- गृणतेयजध्वै। वेपिष्टो अंगिरसां यद्धविप्रोमधुच्छन्दो भवतिरेभ इष्टौ॥

४-भ्रामरी-विनियोग-अपहतरक्षस इति जरत्कर्णऋषिर्जगतीछन्दो भ्रामरी देवता भ्रामर्य्यावाहने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनियोगः॥ जल छोड़ दें।

मंत्र-ॐ अपहत रक्षसोभंगुरावतः स्कभायत निर्ऋतिसन्धतामतिम्। अनारोयसर्ववीरंसुनोतनं देवाव्यंभरतश्लोकमद्रयः॥

५-भद्रिका-विनियोग एतानीति ऐलूषऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो भद्रिका देवता भद्रिकावाहने विनियोगः॥ जल छोड़ दें।

मंत्र-ॐ एतानि। भद्राकलशक्रिमकुरुश्रवणोददतु मघानिदानइन्द्रोमघवानः। सोअस्त्वयं च सोमो हृदि यं बिभर्मि॥ जल छोड़ दें।

६-उल्का-विनियोग-उद्व इति काण्वायनावृषी गायत्री छन्द उल्का देवता उल्कावाहने विनियोगः॥

जल छोड़ दें। मंत्र-उद्व आजदंगिरोभ्य आविष्कृणवन् गुहासती अर्वाचं ननु देबलम्।

७-सिद्धा-विनियोग-सिद्धा इति अग्निर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सिद्धा देवता सिद्धावाहने विनियोगः॥ जल छोड़ दें।

मंत्र-ॐ सिद्धा अग्नेधियो अस्मे सनुत्रीर्यत्राय-सेदम। आ नित्यहोताऋतावास रोहिदश्वः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुरुक्षुर्युभिरस्मा। अहभिर्वाम मस्तु॥

८-संकटा-विनियोग-प्रसाक्षातिरितिदीर्घतम ऋषिर्जगति छन्दः संकटा देवता संकटा वाहने विनियोगः।

जल छोड़ दें।

मंत्र-ॐ प्रसाक्षितिरसुरया महिप्रियऋता-वनावृतमाघोषथोवृहत्। युवंदिवोबृहतोदक्षमाभुवगांन-ध्रुर्षुपयुञ्जाथे अपः॥

योगिनी का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप दीपक, नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवें। मुन्था क पूजन मुन्थेश के समान करें।

॥ इति अष्ट योगिनी पूजन॥

॥ अथ शिव पार्थिव पूजन प्रयोग॥

शिव पार्थिव पूजन के लिए प्रातःकाल नित कर्मो से निवृत्त होकर मृत्तिका के लिए पहले भूमि का पूजन निम्नवत् करें-

आगच्छ पृथिवी देवित्वद्रूपमृत्तिकामिमाम्।
गृहिस्यामि हि लिङ्गार्थं प्रसन्नाभव सर्वदा॥

ॐ भूम्यै नमः॥ भूमि का पूजन करके 'भूम नमः' से प्रणाम करके शस्त्र से मृतिका को खोद लें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मृतिका निम्न मंत्र से ग्रहण करें- **ॐ उद्धृताऽसि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृतिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च॥ 'ॐ हराय नमः'**

इस मंत्र से मृतिका को लेकर घर आवे और पवित्र स्थान में कुशा के ऊपर मृतिका को रखकर उत्तर मुंह बैठक भस्म से त्रिपुण्ड धारण कर रुद्राक्ष धारण[१] करे। आसन पूजन करके भूतशुद्धि गणेश स्मरण कलश मातृका पूजन कर ग्रह पूजन कर लेवे। तत्पश्चात पार्थिव लिङ्ग पूजन हेतु संकल्प करें-

संकल्प

अद्यपूर्वोच्चरित० एवं ग्रहगण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ ममोपात्तदुरितक्षय द्वारा त्रिविध तापोपशमनार्थं चतुर्विध पुरुषार्थफल प्राप्त्यर्थं अमुक कामना सिद्ध्यर्थं श्री सदा शिव प्रीत्यर्थं च यथामिलितोपचार द्रव्यैः न्यासपूर्वक श्रीपार्थिव लिङ्ग पूजनमहं करिष्ये।

मृतिका का पहले चूर्ण बना लेवे-

मंत्र-ॐ सद्योजातं प्रपद्यामिसद्योजाताय वै नमोनमः। भवे भवेनातिभवे भवस्वमां भवोद्भवाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमः॥ मंत्र से चूर्ण करके जल से मृतिका को सींच देवे। **मंत्र- ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः, कलविकरणायनमो बल विकराणाय नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमोमनोन्मनाय नमः॥** जल को मिट्टी में मिलाकर गूंद देवें,

मंत्र-ॐ अघोरेभ्यो ऽ थघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्य सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽ अस्तुरुद्ररूपेभ्यः॥ सम्पूर्ण मिट्टी का गोला बना लेवे। **मंत्र-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥**

अब लिङ्ग निर्माण[१] निम्न मंत्र से करें-**ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वर सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपर्तिबह्मणो ऽ धिपति र्ब्रह्मा शिवो मे ऽ अस्तु सदाशिवोम्॥** ताम्रपात्र में विल्वपत्र रखकर उसके ऊपर यव, अक्षत, पुष्प रखकर पुनः लिङ्ग स्थापना करें।

स्थापना का मंत्र-ॐ सद्य समस्तोघनाशनाय

रुद्राक्ष धारण फल- रुद्राक्ष यस्य गात्रेषु ललाटे च त्रिपुण्ड्रकम्।
स चाण्डालोऽपि सम्पूज्यः सर्ववर्णोत्तमो भवेत्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिनाक धृष्णवे नमः। अब दाहिने हाथ की अनामिका से लिङ्ग स्पर्श करते हुए प्राण प्रतिष्ठा करें। मंत्र- ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं शिवस्य प्राणाः इह स्थितः॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा। भो शिवेहागच्छ इहतिष्ठ॥

विनियोग-अस्य श्री पार्थिवेश्वर मंत्रस्य, ब्रह्माऋषिः, कामसुधा देवता, गायत्री छन्दः, ह्रौं बीजं, ह्रीं नमः कीलकं, मम चतुर्विधफलप्राप्तये श्री पार्थिवेश्वर शिव न्यासे पूजने च विनियोगः॥

एक आचमन जल छोड़ कर हृदयादि न्यास करें[१]-

ॐ ब्रह्मणे नमः शिरसि, ॐ कामदुधा देवतायै नमः हृदि। ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्री पार्थिवेश्वर देवतायै नमः हृदये। ॐ ह्रौं बीजाय

---

१. लिंग निर्माण-

अंगुष्ठमानादधिकं वितस्त्यवधि सुन्दरम्।
पार्थिवं तु भवेलिंगन्यूनं नाधिकं च तत्॥ (मंत्रसहौदधौ)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ नमः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥

करन्यास-ॐ ह्रौं ह्रीं सर्वशक्तिधाम्ने शिवाय अगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ह्रीं सर्वशक्तिधाम्ने शिवाय तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ह्रीं नित्यमलुप्तशक्तिधाम्ने शिवायमध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ह्रीं सर्वज्ञानशक्ति धाम्ने शिवाय अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रौं ह्रीं नित्यानंद शक्ति धाम्ने शिवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं ह्रीं अनन्त शक्तिधाम्ने शिवाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः॥ पुनः षडङ्गन्यास करे-

ॐ ह्रौं ह्रीं शक्तिधाम्ने शिवाय हृदयाय नमः॥

ॐ ह्रौं ह्रीं शक्तिधाम्ने शिवाय शिरसे स्वाहा॥

ॐ ह्रौं ह्रीं नित्यमलुप्तशक्तिधाम्ने शिवाय शिखायै वषट्॥

न्यास फल-

१. यथादेहे तथा देवं न्यासं कृत्वा यथाविधि।
न्यासेन तु भवेत्सोऽपि स्वयमेव जनार्दनः॥ (इत्याग्नेये)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रौं ह्रीं सर्वज्ञान शक्तिधाम्ने शिवाय कवचाय हुम्॥

ॐ ह्रौं ह्रीं नित्यानन्द शक्तिधाम्ने शिवाय नेत्र त्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रौं ह्रीं अनन्त शक्ति धाम्ने शिवाय अस्त्राय फट्।

पूजन-भगवान शंकर की पूजा में पुष्प, विल्वपत्र, अक्षत लेकर भगवान शिव का ध्यान करे-

ध्यायेनित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणेर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

आवाहन-ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽ उतो त ऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

आसन-ॐ या ते रुद्र शिवातनूरघोरा ऽ पापकाशिनी।
तयानस्तन्वाशन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥

पाद्य-ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु माहि ꣳ सीः पुरुषं जगत्॥

अर्घ्य-ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳ सुमना असत्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचमन-अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।

अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्चयातु धान्योऽधराचीः परासुव॥

स्नान-ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत वभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशो वैषाꣳहेडईमहे॥

पयस्नान-ॐ पयः पृथिव्यां पय औषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

पुनः शुद्ध जल स्नान॥

दधि स्नान-ॐ दधि क्राब्णो ऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽ आयूꣳषितारिषत्॥ पुनः शुद्ध जल स्नान॥

घृतस्नान-ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥ पुनः शुद्ध जल स्नान॥

मधुस्नान-ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मधुमत्पार्थिव ॐ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधु मान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ पुनः शुद्ध जल स्नान॥

शर्करा स्नान-ॐ अपा ॐ रसमुद्वयस ॐ सूर्ये सन्त ॐ समाहितम्। अपा ॐ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तमुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णामेषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥ पुनः शुद्ध जल स्नान॥

पंचामृत स्नान-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशे ऽभवत्सरित्॥ पुनः शुद्ध जल स्नान॥

गन्धोदक स्नान-ॐ अ ॐ शुनाते अꣳसुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

शुद्धोदक स्नान-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥

आचमनीय जल-ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यातु धान्यो ऽधराचीः परासुव॥

अभिषेक-पार्थिव शिवलिङ्ग के ऊपर विल्वपत्र रखकर अभिषेक करे जिससे लिङ्ग की मिट्टी न बहे। लिङ्ग का अभिषेक रुद्र सूक्त या महिम्न स्तोत्र से कर पुनः पूजन प्रारंभ करें-

वस्त्र-ॐ असौयोऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयातिनः॥ वस्त्र चढ़ाकर आचमन[१] के लिए जल चढ़ावे।

यज्ञोपवीत-ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय- मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानो ऽहं तेभ्यो ऽ करं नमः। यज्ञोपवीत समर्पित कर आचमन के लिए जल चढ़ावे।

वस्त्र-ॐ सुजातोज्योतिषा सह शर्म वरुथमाऽस- दत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूप ꣳ सव्ययस्व विभावसो॥ उपवस्त्र चढ़ाकर आचमन के लिए जल चढ़ावे।

गन्ध-ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्नोर्ज्याम्।

१. स्नाने वस्त्रे च नैवेद्ये दद्याचमनं तथा।
चकाराद्यज्ञोपवीतान्तेऽपि दद्यात्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥

सुगन्धि द्रव्य-त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

अक्षत-ॐ ब्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

पुष्प-ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥

बिल्वपत्र[१]-ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमोवर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥

काशीवास निवासी च कालभैरव पूजनम्। प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥ दर्शनं विल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्। अघोर पाप संहारं

पत्रं वा यदि वा पुष्पं फल नेष्टम धोमुखम्॥
यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्वपत्रमधोमुखम्॥ (आ.क.सू०)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिल्पपत्रं शिवार्पणम्।। त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्। त्रिजन्म पाप संहार बिल्वपत्रं शिवार्पणम्। अखण्डेर्विल्वपत्रैश्च पूजये शिवशंकरम्। कोटिकन्या महादानं बिल्पपत्रं शिवार्पणम्। गृहाणं बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर। सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुम प्रिय।। उपरोक्त मंत्रों से शिव को एकादश बिल्वपत्र गन्धं लगाकर चढ़ा देवें।

विजया- ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां २ उत। अनेशन्नस्य या ईषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।

शमीपत्र- अमंगलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतश्च ये। दुस्वप्ननाशिनी धन्यां प्रपद्येऽहं शमी शुभाम्।।

धूप-ॐ या ते हेतिर्मिढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्विश्वत्स्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।

दीप-परिते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तुविश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्।।

नैवेद्य-ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्त्राक्ष सतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।

ऋतुफल-ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः॥

ताम्बूल-ॐ नमस्तआयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तवधन्वने॥

दक्षिणा-ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः। तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्॥

एकादश रुद्र पूजन-ॐ अघोराय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥१॥ ॐ पशुपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥२॥ ॐ शिवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥३॥ ॐ विरूपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥४॥ ॐ विश्वरूपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥५॥ ॐ भैरवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥६॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥७॥ ॐ शूलपाणये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥८॥ ॐ कपर्दिने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥९॥ ॐ ईशानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥१०॥ ॐ महेशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजयामि॥११॥ गन्धादि से एकादश रुद्र का पूजन कर देवें।

एकादश शक्ति पूजन - ॐ भगवत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥१॥ ॐ उमादेव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥२॥ ॐ शंकर प्रियायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥३॥ ॐ पार्वत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥४॥ ॐ गौर्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥५॥ ॐ कालिंद्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥६॥ ॐ कोटर्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥८॥ ॐ विश्वेश्वर्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥९॥ ॐ विश्वमात्रे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥१०॥ ॐ शिवायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि॥११॥ एकादश शक्ति का पूजन गन्धादि से कर दें।

कपूर आरती-ॐ आ रात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुर प्रायी धामभिः। दिवः सदा ꣳ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रार्थना-कर चरण कृतं वाक्वायजं कर्मजं वा श्रवण नयन जं वा मानसंवापराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो॥ अनेन पार्थिव लिंग पूजन कृतेन श्री साम्बसदाशिवः प्रीयताम्॥ इति शिव पार्थिव पूजनम्॥

॥ अथमहामृत्युञ्जय कवचम्॥

श्रुणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम्।
महामृत्युञ्जयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम्॥
यं धृत्वा च पठित्वा च यं श्रुत्वा कवचोत्तमम्।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोस्मिमहेश्वरि॥
तदेव वर्णयिष्यामि तवप्रित्या बरानने।
तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने॥

विनियोग-ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय कवचस्य श्री भैरव ऋषिर्गायत्री छन्दः, श्री मृत्युञ्जय देवता, ॐ बीजं, जूं शक्तिः, स कीलकं, हौं इति तत्वं, श्री चतुर्वर्ग फलप्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगः। चन्द्रमण्डल मध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते। तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवोमृत्युञ्जर्योमम।
श्री शिवो वै ललाटं च ॐ ह्रौं भ्रुवो सदाशिव॥२॥
नीलकण्ठोऽवतानेत्रे कपर्दी में ऽवताच्छुति।
त्रिलोचनोवताङ्गण्डौ नाशां में त्रिपुरान्तकः॥३॥
मुखं पीयूषघटभृदोष्टौ मे कृत्तिकाम्बरः।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं बटुक भैरवः॥४॥
कंधरा कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु।
स्कंधौ स्कंदपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु॥५॥
नखान्मे गिरिजानाथः पायादगुलिसंयुतान्।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम॥६॥
कुक्षिं कुबेरवरदः पार्श्वौ मे मारशासनः।
शर्वः पातु तथा नाभिं शूलीपृष्ठंममाऽवतु॥७॥
शिश्नं मे शंकरः पातु गुह्यं गुह्यकवल्ल्भः।
कटिं कालान्तकः पायादूरू मे ऽन्धकघातकः॥८॥
जागरूको ऽवताज्जानू जंघे मे कालभैरवः।
गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौमृत्युञ्जयोऽवतु॥९॥
पादादिमूर्द्ध पर्यंतं सद्योजातो ममावतु।
रक्षाहीनं नामहीनं बपुः पात्वमृतेश्वरः॥१०॥
पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः।
पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः॥११॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एशान्यामीश्वरः पायादाग्नेयां अग्निलोचनः।
नैऋत्यां शंभुरव्यान्मा वायव्यां वायुवाहनः॥१२॥
ऊर्ध्वेवलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः।
दशदिक्षु सदापातु महामृत्युञ्जयश्च माम्॥१३॥
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राण संशये।
पायादों जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः॥१४॥
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्यान्हे भैरवोऽवतु।
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्य चेतनः॥१५॥
अर्द्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः।
सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जू सः हौं मृत्युञ्जयः॥१६॥
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
सर्वमंत्र मयं गुह्यं सर्वतंत्रेषु गोपितम्॥१७॥
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देव देवाधि दैवतम्।
य इदं च पठेन्मंत्र कवचं वाचये त्ततः॥१८॥
तस्यहस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्ट सिद्धयः।
रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रुं जयं लभेत्॥१९॥
जयंकृत्वा गृहे देवि स प्राप्स्यति सुखं पुनः।
महाभये महारोगे महामारीभये तथा॥२०॥
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेन्कवचमादरात्।
सर्वं तत्प्रशम यातिं मृत्युञ्जयप्रसादतः॥२१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धनं पुत्रान्सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्व सम्पदः।
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः॥२२॥
इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु।
गोप्यं सिद्धिपदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥२३॥

॥ इति श्री महामृत्युञ्जयकवचम्॥

॥ अथ महामृत्युञ्जय जप विधिः॥

पवित्र स्थान[१] में आचमन प्राणायाम कर संकल्प करें-

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य॥ ॐ मम आत्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्यर्थं मम (अमुकयजमानस्य वा) शरीरेऽमुक पीड़ा परिहार द्वारा सद्यः आरोग्य प्राप्त्यर्थं श्री महामृत्युञ्जय देवता प्रीतये अमुक संख्यापरिमितं श्री महामृत्युञ्जय मंत्र जपमहं करिष्ये॥

इस प्रकार संकल्प छोड़कर ऋष्यादिन्यास करें-

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मंत्रस्य, वशिष्ठ ऋषिः, श्री मृत्युञ्जय रुद्रो देवता, अनुष्टुप्छन्दः,

---

जपस्थान- शिवस्य संनिधाने च सूर्याग्न्योर्वा गुरोरपि।
दीपस्य ज्वलिस्यापि जपकर्म प्रशस्यते॥ (नारदीये)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हौं बीजम्, जूं शक्तिः। सः कीलकं, मृत्युञ्जय प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ॐ वशिष्ठर्षये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्री महामृत्युञ्जय रुद्र देवतायै नमो हृदये। ॐ हौं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु॥ **अथ कराङ्गन्यासः**-ॐ त्र्यम्बकं अंगुष्ठाभ्यांनमः। ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः। ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मामृतात् करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः॥ **अथ हृदयादि न्यासः**-ॐ हौंजूंसः हृदयाय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः शिरसे स्वाहा। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनं शिखायै वषट्। ॐ उर्वारुकमिवबंधनात् कवचायहुम्। ॐ मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वः भुवः भूः सः जूं हौं त्र्यम्बकं० अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमितिदिग्बधः।

समुद्र तीरे च ह्रदे गिरौ देवालयेषु च।
पुण्याश्रमेषु सर्वेषु जपः कोटिगुणो भवेत्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुष्प लेकर मृत्युञ्जय रुद्र का ध्यान-अरुणकमल कान्ति स्वर्धुनी राजमानं कर कलित कपालं स्वक्षमालां दधानं। कलश अमृत पूर्णं शूल हस्तं ज्वलन्तं त्रिनयनमभिवन्दे मृत्यु मृत्युं महेशं॥१॥

चन्द्रोद्भासित मूर्धजं सूरपतिं पीयूष पात्रं महद् हस्ताब्जेन दधत्सु दिव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्ष सूत्रा कुशां भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे॥२॥

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयंतं शिरो। द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलयेद्वाभ्यां वहन्तं परम्॥ अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं। स्वच्छाभोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे॥३॥

॥ मृत्युञ्जय जप मंत्र॥

४८ वर्णात्मक मृत्युञ्जय मंत्र-ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम् उर्वारुक मिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ॥

५२ वर्णात्मक मृतसजीवनी मंत्र-ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्वः भुवःभू ॐ सः जूँ हौं ॐ॥

शुक्रोपासितमृतसञ्जीवनी मंत्र (तन्त्रसार)- ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं भर्गो देवस्य धीमहि उर्व्वारुकमिव बन्धनात् धियो योनः प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

६२ वर्णात्मक शुक्राराधित महामृत्युञ्जय मंत्र- ॐ हौं ॐ जूँ ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योम्मर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूँ ॐ हौं ॐ॥

जप करने के बाद उत्तर न्यास (पूर्ववत्) करके प्रार्थना-

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥१॥
मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्यु जरारोगैः पीड़ित कर्मबन्धनै॥२॥

प्रार्थना कर एक आचमन जल छोड़ देवें-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनेन महामृत्युञ्जय जपाख्येन कर्मणा श्री श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतामित्यर्पयेत्॥ जप का दशांश हवन[१] कर लेवें।

॥ इति मृत्युञ्जय जपः॥

॥ अथ महामृत्युञ्जयाष्टक॥

ॐ मृत्युञ्जय! परेशान जगदामयनाशन!।
तव ध्यानेन देवेश! मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति॥१॥
पञ्चास्यदोर्दण्डदशाङ्घ्रिनेमदिनेशभालेन्दुयतं गणेशैः।
वामाङ्ग संस्थागिरिजा समेतं वन्दे महामृत्युविनाशरूपम्॥२॥
देवं मृत्यु विनाशनं भयहरं साम्राज्यमुक्तिप्रदम्।
नाना भूतगणान्वितं दिविपदैर्देवैः सदासेवितम्॥
अज्ञानान्धकनाशनं शुभकरं विद्यासु सौख्यप्रदम्।
सर्वं सर्वपतिं महेश्वर हरं मृत्यञ्जयं भावये॥३॥

१. महामृत्युंजय जप में कामनापूर्ति हेतु विशेष होम द्रव्य-
पुत्रार्थे शालिबीजेन धनार्थे बिल्वपत्रकैः।
दूर्वाभिरायुष्यकामस्तु पुष्टिकामस्तु वेतसैः।
कन्या कामस्तु लाजाभिः पशुकामो घृतेनतु।
विद्याकामस्तु पलाशैर्दशाशेन तु होमयेत्।
धान्यकामो यवैश्चैव गुगुलेन रिपुक्षये।
तिलैरारोग्यकामस्तुव्रीहिभिः सुखमश्नुते॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वन्दे ईशानदेवाय नमस्तस्मै पिनाकिने।
आदिमध्यान्त रूपाय मृत्युनाशं करोतु मे।।४।।
नमस्तस्मै भगवते कैलासाचलवासिने।
नमो ब्रह्मेन्द्ररूपाय मृत्युञ्जय प्रसीद मे।।५।।
नमो विष्णवर्क रूपाय नमो ज्ञान स्वरूपिणे।
मृत्युं नाशयतामाशु मृत्युञ्जय प्रसीद मे।।६।।
त्र्यम्बकाय नमस्तुभ्यं पञ्चास्याय नमो नमः।
नमो दोर्दण्डचापाय मम मृत्युं विनाशय।।७।।
नमोऽर्द्धेन्दु स्वरूपाय नमो दिग्वसनाय च।
नमो भक्तार्तिहन्त्रे च मम मृत्यु विनाशय।।८।।
मृत्यृञ्जयाष्टकं दिव्यं त्रिकाले यः पठेन्नरः।
अपमृत्युर्व्रजेत्तस्य सत्यं सत्यं शिवाज्ञया।।९।।
अर्द्धरात्रे जपेनित्यं चतुरशीति संख्यया।
काले मृत्युर्विनश्येत अकालाल्पस्य का कथा।।१०।।
आलस्येनाप्रसङ्गेन श्रद्धाहीनेन चेतसा।।
पठेद्यद्यपकालेषु ध्रुवं मृत्युं निवारयेत्।।११।।

।। इति मत्युञ्जयाष्टकम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। सन्तान गोपाल मंत्रः।।

विनियोग-अस्य श्री सन्तागोपालमन्त्रस्य, नारद ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री गोपालो देवता, मम (यजमानस्यवा) सन्तानगोपाल प्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।।

अथ कराङ्गन्यासः-ॐ देवकीसुत गोविन्द अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वासुदेव जगत्पते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देहिमे तनयं कृष्ण मध्यमाभ्यां नमः। ॐ त्वामहं शरणं गतः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ देवकी सुतगोविन्द वासुदेव जगत्पते कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।।

हृदयादि न्यासः-ॐ देवकी सुत गोविन्द हृदयायनमः। ॐ वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा। ॐ देहिमे तनयं कृष्ण शिखायै वषट्। ॐ त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट्।।

पुष्प लेकर भगवान कृष्ण का ध्यान-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ वैकुण्ठतेजसा दीप्तमर्जुनेन समन्वितम्।
समर्पयंत विप्राय नष्टानानीय बालकान्।।

।। सन्तान गोपाल मन्त्र।।[१]

ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।
प्रार्थना- कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणत क्लेश नाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

।। इति सन्तान गोपाल मंत्र।।

।। श्री बाल रक्षा स्तोत्रम्।।

श्री गणेशाय नमः। श्री कृष्णाय नमः।।
अव्यादजों ऽ घ्रिर्मणिमांस्तव जान्वथोरु
यज्ञोऽच्युतः कटि तटं जठर हयास्य।।
हृत्केशवस्त्वदुरईशइनस्तु कंण्ठं
विष्णुर्भुजं मुखमुक्रम ईश्वरकम्।।१।।
चक्रयगतः सहगदो हरिरस्तुपश्चात्
पार्श्वयोर्मुनिरसी मधुहाजनस्य।।
कोणेशु शंख उरुगाय उपर्युपेन्द्र
स्ताक्ष्यः क्षितौ हलधरः पुरुष समंतात्।।२।।

१. लक्षं जपो ऽ युतं होमास्तिलैर्मधुर संयुतैः।
अर्चा पूर्वोदिता चैवं मंत्रः पुत्रप्रदो नृणाम्।। (मंत्र महोदधौ)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्राणान्नारायणोऽवतु॥
श्वेतद्वीपपतिश्चितं मनो योगेश्वरो ऽवतु॥३॥
पृश्निगर्भश्च ते बुद्धिमात्मानं भगवान्परः।
क्रीडन्तं पातु गोविन्दः शयानं पातु माधवः॥४॥
व्रजंतमव्यद्वेकुंठ आसीनं त्वां श्रियः पतिः।
भुञ्जानं यज्ञभुक्पातु सर्वग्रह भयंकरः॥५॥
डाकिन्यो यातुधान्यश्च कुष्मांडा येऽर्भक ग्रहाः।
भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षरक्षो विनायकाः॥६॥
कोटरारे वतीजेष्ठापूतनामातृकादयः।
उन्मादाये ह्यपस्मारा देहप्राणेन्द्रिय द्रुहः॥७॥
स्वप्नदृष्टा महोत्पाता बृद्धवाल ग्रहाश्चये।
सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोर्नामग्रहण भीरवः॥८॥

॥ इति श्री मद्भागवते दशम स्कंधे गोपीकृत बालरक्षा सम्पूर्णम्॥

॥ वसुदेव कृत श्रीकृष्ण स्तोत्रम्॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराणान्तर्गत)

पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्र अभिलाषा वाले नर-नारी[1] संन्ध्या काल के समय इस स्तोत्र का पाठ अवश्य करें-

१. सिन्धुस्नानं द्रुमच्छेदं बपनं प्रेतवाहनम्।
विदेश गमनं चैव न कुर्याद् गर्भिणी पतिः॥ (ध.शा.)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री गणेशाय नमः॥

वसुदेव उवाच

त्वामतींद्रियमव्यक्तमक्षरं निर्गुणं विभुम्।
ध्यानासाध्यं च सर्वेषां परमात्मानमीश्वरम्॥१॥

स्वेच्छामयं सर्वरूपं स्वेच्छारूपधरं परम्।
निर्लिप्तं परमं ब्रह्म बीजरूपं सनातनम्॥२॥

स्थूलात्स्थूलतरं प्राप्त मतिसूक्ष्ममदर्शनम्।
स्थितं सर्व शरीरेषु साक्षिरूपंअदृश्यकम्॥३॥

शरीरवन्तंसगुणमशरीरं गुणोत्करम्।
प्रकृतिं प्रकृतीशं च प्राकृतं प्रकृतेः परम्॥४॥

सर्वेशं सर्वरूपं च सर्वान्तकरमव्ययम्।
सर्वाधारं निराधारं निव्यूहं स्तौमि किं विभुम्॥५॥

अनन्तः स्तवने ऽ शक्तो शक्ता देव सरस्वती।
यं वा स्तोतुमशक्तश्च पंचवक्त्रः षडाननः॥६॥

चतुर्मुखो वेदकर्ता यं स्तोतुमक्षमः सदा।
गणेशो न समर्थश्च योगिन्द्राणां गुरोर्गुरुः॥७॥

ऋषयो देवताश्चैव मुनीन्द्रमनुमानवाः।
स्वप्ने तेषामदृश्यं च त्वामेवं किं स्तुवन्ति ते॥८॥

श्रुतयः स्तवनेऽशक्ताः किं स्तुवन्ति विपश्चितः।
विहायैवं शरीरं च बालोभवितुमर्हसि॥९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वसुदेव कृतं स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
भक्तिं दास्यमवाप्नोति श्रीकृष्णचरणाम्बुजे॥१०॥
पुत्रं विशिष्टं लभते हरिदासं गुणान्वितम्।
संकट निस्तरेत्तूर्णं शत्रुभीतेः प्रमुच्यते॥११॥

॥ वसुदेवकृतं श्रीकृष्णस्तोत्र सम्पूर्णम्॥

नाग पूजन

नाग शांति के लिए पौर्णमासी पंचमी अथवा आश्लेषा युक्त नवमीं के दिन नाग पूजन शुभ मुहुर्त में करना श्रेयकर होता है। संकल्प-

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं एवं गुणविशिष्टायां पुण्यतिथौ मम सर्प दोष परिहारार्थं नवनाग पूजनं करिष्ये। काँस्यपात्र में तिल अथवा गेहूँ के चूर्ण से सर्प की (नवनाग) आकृति बनाकर पूजन करें-आकृति बनाते हुए सर्प गायत्री का स्मरण करे-**ॐ भुजंगेशाय विद्महे सर्पजाताय धीमहि। तन्नो नागः प्रचोदयात्॥** पुष्प लेकर ध्यान करें-

कर्कोटकनमस्तेस्तु शंखपाल नमोस्तुते।
नागराज महादेव दिव्यरूपाय ते नमः॥
अफणाः फणिनो ये चसविषा निर्विशाश्च ये।
सर्वेवट शयाः सर्पः पुण्यमूर्ते नमोस्तुते॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिष्ठापन-ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अंतरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

नवनागों का पूजन आवाहनादि षोडशोपचार से कर पायस की बलि देवें।

भो सर्प इमं बलि गृहाणममाभ्युदयं कुरु। अब कलश के ऊपर सुवर्ण नाग मूर्ति (प्रतिमा) का पूजन षोडशोपचार से कर प्रार्थना करें-

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमा।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा॥१॥
विष्णुलोके च ये सर्पाः वासुकि प्रमुखाश्च ये।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीता प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥२॥
रुद्रलोके च ये सर्पास्तक्षक प्रमुखास्तथा।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः वरदा सन्तु मे सदा॥३॥
खाण्डवस्यतथादाहे स्वर्गं येच समाश्रिताः।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥४॥
सर्प सत्रे च ये सर्पाः आस्तीके नाभिरक्षिताः।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥५॥
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोट प्रमुखाश्चये।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धर्मलोके च ये सर्पाः वैतरण्यां समाश्रिताः।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥७॥
ये सर्पाः पर्वतीयेषुदरीसंधिषुसंस्थिताः।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥८॥
ग्रामे वा यदिवारण्ये ये सर्पाः प्रचरंतिहि।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥९॥
पृथिव्यां चैव ये सर्पाः अनंताद्यामहाबलाः।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीता प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥१०॥
रसातले च ये सर्पाः अनंताद्यामहावलाः।
नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा॥११॥

यजमान प्रार्थना कर आचार्य का पूजन कर स्वर्ण नाग मूर्ति कलश सहित ब्राह्मण को संकल्प करें-

ॐ अद्येत्यादि० कृतस्य सर्प पूजन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं इमं हेममयं नागं सकलशं वस्त्रं सदक्षिणांतुभ्यमहं सम्प्रददे॥ चूर्ण से बने नाग की आकृति को जलाशय में रख देवें। **अनेन स्वर्गनाग दानेन अनन्तादयो नाग देवताः प्रीयताम्॥** इति नाग पूजनम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रातः नाग स्मरण

अनन्तं वासुकि शेषं पद्मनाभं च कंबलम्।
शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा॥१॥
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मना।
सांयकाले पठेनित्यं प्रातः काले विशेषतः।
तस्य विषभयंनास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥२॥

रात्रि समय गारुड़ मंत्र स्मरण

सर्पापसर्प भद्रं ते दूरगच्छ महाविष।
जन्मेजयस्य यज्ञांते आस्तीकवचनं स्मर॥१॥
आस्तीक वचनं श्रुत्वा यः सर्प न निवर्तते।
शतधा विद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्ष फलं यथा।२॥
यो जरत्कारुणा जातो जरत्कन्या महायशाः॥
तस्य सर्पोऽपि भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष॥३॥
एतान् गारुड़मंत्रास्तु निशायां पठते यदि।
मुच्यते सर्व बाधाभ्यो नात्रकार्या विचारणा॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ शुभम्॥

॥अथ सप्तविंशति नक्षत्रशान्ति प्रयोगः॥

अश्विनी नक्षत्र- इस नक्षत्र के देवता अश्विनी है।

पूजन की विशेष सामग्री-कुमकुम, श्वेत चंदन, पुष्प, चावल, नैवेद्य, गुड, दूध, तिल, घृत कुम्भ, सुवर्ण प्रतिमा आदि।

जप संख्या- ५०००

जपार्थ मंत्र-ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥१॥

भरणी नक्षत्र- इस नक्षत्र के यम देवता हैं, यम पूजन हेतु विशेष सामग्री-अगर, गन्ध, करवीर पुष्प, गुगुल धूप, गुड़ोदन क्षेत्रपाल का पूजन, शर्करा, गौदान, छायापात्र।

जपसंख्या- १००००

जपार्थ मंत्र-ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ꣳ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥२॥

कृतिका नक्षत्र-देवता-अग्नि।

पूजन विशेष साम्रगी-चन्दन, गन्ध, पुष्प, नैवेद्य,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुग्गुल, धूप, घृतदीप, तिल, माष, सुवर्ण, गौदान।

जप संख्या-१००००

जप मंत्र-ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम्॥३॥

रोहिणी नक्षत्र- देवता-प्रजापति।

पूजन विशेष सामग्री-चन्दन, गंध, पुष्प, नैवेद्य, अष्टगंध, दूध, मोदक, धूप, घी, दधि, चावल, गोवत्स।

जपसंख्या-५०००।

जप मंत्र-ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्याऽउपमाऽ-अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥४॥

मृगशिर नक्षत्र-सोम देवता।

पूजन सामग्री-चन्दन, गंध, गुग्गुल, धूप, पुष्प, पायस, नैवेद्य, मधु, घृत दुग्ध, दध्योदन, तण्डुल, सवत्सा गौ।

जपसंख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ सोमो धेनु ꣳ सोमोऽअर्वन्तमाशु ꣳ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्य ꣳ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥५॥

आर्द्रा नक्षत्र-रुद्र देवता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजन सामग्री-हरिद्रा, कुमकुम, गन्ध, पुष्प, गुग्गुल धूप, घी, गन्ध, तिल चूर्ण, मिष्ठान, कृष्ण वस्त्र, वृषभ।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽ उतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥६॥

पुनर्वसु नक्षत्र- देवता, अदिति।

पूजन सामग्री- कुमकुम, गन्ध, पुष्प, गुग्गुल, धूप, घृत, पायस, मोदक, गुड, चना।

जप संख्या- १००००।

जप मंत्र-ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥७॥

पुष्य नक्षत्र-देवता, बृहस्पति।

पूजन सामग्री-कुमकुम, गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य, दध्योदन, शक्कर, पीत वस्त्र, सुवर्ण, गोदान।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ बृहस्पते ऽ अति यदर्यो ऽ अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छवस ऽ ऋतप्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आश्लेषा-गण्डमूल नक्षत्र का पूर्ण पूजन पृष्ठ संख्या ११६ पर देखें।।९।।

मघा नक्षत्र-पितर देवता।

पूजन सामग्री-चन्दन, गंध गुग्गल, धूप, घी, मिष्ठान, तिल, दुग्ध, चावल, श्वेतवस्त्र।

जप संख्या-१००००

जप मंत्र-ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्न् पितरो ऽ मीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।।१०।।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र-भग देवता।

पूजन सामग्री-चन्दन, गन्ध, चम्पक पुष्प, गुग्गल, घृत, पायस नैवेद्य, विल्व, पीतलपात्र, यव, माष, गौ, स्वर्णदान।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।११।।

उत्तराफाल्गुनी-अर्यमा देवता।

पूजन सामग्री-कपूर, कुमकुम, गन्ध, रक्तपुष्प,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घृतपायस नैवेद्य, केशर, सुवर्ण, रजत, गाय दान, अन्न, वस्त्र।

जप संख्या-५०००।

जप मन्त्र-ॐ दैव्या वध्वर्यूऽआ गत ꣳ रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञ ꣳ समंजाथे। तं प्रत्नथा अयं वेनः चित्रं देवानाम्॥१२॥

हस्त नक्षत्र-सविता देवता।

पूजन सामग्री-कुमकुम, रक्तचन्दन, गन्ध, कमल, पायस नैवेद्य, केशर, गोदान, छायापात्र, रक्तवस्त्र सुवर्ण।

जप संख्या-ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दध द्यज्ञपतावबिह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति॥१३॥

चित्रा नक्षत्र-त्वष्टा देवता।

पूजन सामग्री-गुड, तिल पात्र, वृषभ, छायापात्र, हविष्यान्न।

जप संख्या-५०००।

जप मंत्र-ॐ त्वष्टा तुरीपो ऽ अद्भुत ऽ इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धना। द्विपदा छन्द ऽ इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः॥१४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वाती नक्षत्र-वायु देवता।

पूजन सामग्री-लाल गाय, सुवर्ण, पक्वान्नदान

जप संख्या-५०००।

जप मंत्र-वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञं। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः॥१५॥

विशाखा नक्षत्र-इन्द्राग्नि देवता।

पूजन सामग्री-रक्त पीत वस्त्र, कृष्ण वृषभ दान।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ इन्द्राग्नी ऽ आगत ꣳ सुतं गीभिर्नभो वरेण्यम्। अस्यपातं धियेषिता। उपयाम-गृहीतोऽसीन्द्राग्निभ्यां त्वैष ते योनिरिन्द्राग्निभ्यां त्वा॥१६॥

अनुराधा नक्षत्र-मित्र देवता।

पूजन सामग्री-अन्न, सुवर्ण, गोदान, छायापात्र, मोदक, केशर।

जप संख्या-१००००।

जपमंत्र-ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवाय तदृतꣳसपर्यत। दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्य्याय स ꣳ सत॥१७॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्येष्ठा-गण्डमूल नक्षत्र, पूजन पृष्ठ सं. ११४ देखें।।१८।।

मूल-गण्डमूल नक्षत्र, पूजन सं ९३ पर देखें।।१९।।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र-जल देवता।

पूजन सामग्री-श्वेत वस्त्र, सुवर्ण, जलकुम्भ, पद्मपुष्प।

जप संख्या-५०००।

जप मंत्र-अपाघमप किल्विषमप कृत्यामपो रपः। अपामार्ग त्वमस्मदप दुःष्वप्न्य ꣳ सुव।।२०।।

उत्तरषाढ़ा-विश्वेदेवा देवता।

पूजन सामग्री-अन्न, सुवर्णदान, पायस नैवेद्य, चन्दन, पुष्प।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ विश्वेऽअद्यमरुतो विश्व ऽ ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः। विश्वे नो देवा ऽ अवसागमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो ऽ अस्मे।।२१।।

श्रवण नक्षत्र-विष्णु देवता।

पूजन सामग्री-सुवर्णदान, गोदान, छायापात्र, षड्रसनैवेद्य।

जप संख्या-१००००।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जप मंत्र-ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥२२॥

धनिष्ठा नक्षत्र-वसु देवता।

पूजन सामग्री-छत्र, उपानह, सुवर्ण, गायदान, छायापात्र।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं, वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥२३॥

शतभिषा नक्षत्र-वरुण देवता।

पूजन सामग्री-तिल, सुवर्ण, घृत, तेल, अजा, गौदान, अगरधूप।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ वरुणस्योतम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद॥२४॥

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र- अजेकपाद देवता।

पूजन सामग्री-सुवर्ण, रजत, श्वेत, वस्त्र, घृत, दुग्ध।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जप संख्या-५०००।

जप मंत्र-ॐ उतनो ऽ हिर्बुध्न्यः शृणोत्वज ऽ एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऽ ऋतावृधो हुवाना स्तुता मन्त्राः कविशस्ता ऽअवन्तु॥२५॥

उत्तराभाद्रपद-अहिर्बुध्न देवता।

पूजन सामग्री-स्वर्ण, रजत, कृष्णवस्त्र, घृत, दुग्ध।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हि ꣳ सीः। निवर्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय॥२६॥

रेवती नक्षत्र- पूषा देवता।

पूजन सामग्री-पीतल पात्र, रक्तवृषभ, वस्त्र, छायापात्र, घृत, पायस, गुग्गुल, धूप, दधि, कपूर।

जप संख्या-१००००।

जप मंत्र-ॐ पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन स्तोतारस्त ऽ इह स्मसि॥२७॥

नक्षत्र जप करने के बाद दशांश हवन, तर्पण, मार्जन करें

॥ इति नक्षत्र शान्तिः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। गण्डमूल अभुक्त मूल नक्षत्र।।

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती, ये छह नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं। उपरोक्त नक्षत्रों में जन्में हुए बालक या कन्या माता-पिता, कुल या स्वयं अपने शरीर को नष्ट करते हैं। इन नक्षत्रों में जन्मे बालक का शरीर नष्ट न हो तो धन, ऐश्वर्य, सुख, स्त्री लाभ, तपस्वी, मंत्री, सम्पत्ति के स्वामी होते है। गण्डमूल नक्षत्र में जन्में हुए बालक का पिता आठ वर्ष तक मुख न देखे अथवा प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभमुहूर्त के गण्डमूल नक्षत्र की शान्ति के पश्चात् शुभ बेला में पिता बालक का मुख देखे।

अश्विनी नक्षत्र-मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में प्रथम चरण में जन्म से पिता को कष्ट, दूसरे चरण में जन्म से धन नाश, तीसरे चरण में जन्म से भ्रमणशील, चौथे चरण में जन्म से अपने शरीर के लिए कष्टकारी रहता है।।१।।

आश्लेषा नक्षत्र-प्रथम चरण में जन्म से विशेष दोष नहीं, दूसरे चरण से पैतृक धन हानि, तीसरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चरण से माता पिता या सास तथा चतुर्थ चरण में जन्म से पिता के लिए अनिष्टकारी है।।२।।

मघा नक्षत्र-प्रथम चरण से माता पिता को कष्ट दूसरे चरण में जन्म से पिता को कष्ट, तीसरे चरण में जन्म से शुभ फलदायक, चतुर्थ चरण में जन्म से जातक धनवान होता है।।३।।

ज्येष्ठा नक्षत्र-प्रथम चरण में जन्म से बड़े भाई, दूसरे चरण में जन्म से छोटे भाई, तीसरे चरण में जन्म से पिता, चौथे चरण में जन्म से जातक स्वयं नष्ट होता है।।४।।

अभुक्त मूल नक्षत्र-जेष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियां तथा मूल नक्षत्र के प्रारंभ की २ घटियां, कुल चार घटियां, अभुक्त मूल गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में जन्में जातक अनिष्टकारी होते हैं।

मूल नक्षत्र- इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न जातक पिता हानि, दूसरे चरण में माता हानि, तीसरे चरण में जन्म से धन नाश होता है, तथा चौथे चरण में जन्म से शुभ होता है। नक्षत्र की विधि पूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता है।।५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रेवती नक्षत्र- प्रथम चरण में जन्म से राजा के समान वैभवशाली, दूसरे चरण में जन्म से मंत्री के समान सुख धन युक्त, तीसरे चरण में जन्म होने से धनवान, चौथे चरण में जन्म से माता पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।।६।।

उपरोक्त नक्षत्रों में जन्में बालक का पिता नक्षत्र शान्ति करवाकर ही बालक का मुख देखे। नक्षत्र शांति २७वें दिन या जिस दिन जन्म नक्षत्र हो शुभमूहूर्त में नक्षत्र शान्ति करें।

।। गोमुख प्रसव शान्तिः।।

गण्डमूल अभुक्त मूल नक्षत्रों में जन्मे बालक की पहले गोमुख प्रसवोपरांत नक्षत्र शान्ति कार्य करने का विधान शास्त्रकारों ने बताया है। सपत्नीक यजमान पूर्व मुख बैठकर देवता ब्राह्मणों के नमस्कार कर हाथ में जल लेकर संकल्प करे- **ॐ अद्येत्यादि तिथौ अस्य बालकुमारस्य अमुक नक्षत्र** (जन्म के समय के नक्षत्र का नाम उच्चारण करें) **योगोत्पत्तिसूचितारिष्ट शान्त्यर्थं गोमुख प्रसव शान्ति करिष्ये।** आचार्य दिग्रक्षण करे, यजमान आचार्यवरण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे। आचार्य यजमान के घर के बाहर ईशान भाग में श्वेत चूर्ण (आटे) से कमल बनाकर उसके ऊपर धान्य राशी रखकर उसके ऊपर सूर्प (बांस का बना हुआ) में रक्तवस्त्र बिछाकर वस्त्र के ऊपर तिल छिड़क देवें। सूर्प में बालक (जातक) को पूर्वमुख रख देवें। सूत्र से बालक को सूर्प में वेष्टित कर शिशु के पास (ऊपर से) गाय का मुख लाकर के निम्न मंत्रों को पढ़ें-

ॐ योनिं विष्णुः कल्पयतु त्वष्टारूपाणि पिंशतु। प्रजापतिः प्रसिञ्चतु सृष्टा गर्भं दधातु ते॥१॥

धेहि गर्भं सिनीवालि धेहि गर्भं पृथुष्टुके।
ते देवावश्विनौ गर्भमाधत्तां पुष्करस्त्रजौ॥२॥
हिरण्ययीऽअरणीयं अश्विनानिर्मथतः।
गर्भ हवामहे तं ते दशमे मासिसूतवे॥४॥
परापते न जायेत पुनः सुपुत्र आपतत्।
मेस्यै च पुत्र कामायै गर्भं धेहि प्रसूतवे॥४॥

गाय के अंगों का स्पर्श- गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मातस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब आचार्य गाय के मुख के नीचे से शूर्प सहित शिशु को उठाकर जातक की मां को देवे-

विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेण गविनार्यां प्रसूतके। पुत्रान् पुमांसमाधेहि दशमे मासि सूतवे। इसके बाद माता शिशु को पिता के पास देवे, पुनः पिता शिशु को माता के पास देवे, पिता बालक के ऊपर से सूत्र तथा वस्त्र को निकाल कर पुत्र का मुख देख लेवे तथा गायदान आचार्य को दे देवें।

आचार्य पंचगव्य का प्रोक्षण करे- ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥१॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिवमातरः॥२॥ तस्मा ऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः॥३॥

अब पिता बालक के सिर को सूंघ लेवे-

अंगादंगात्संभवसि हृदयादधि जायसे।
आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदां शतम्॥

अब ब्राह्मण पुण्याहवाचन कर लेवे-

यजमान कहे- भो ब्राह्मणाः अस्यकर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवन्तु। ब्राह्मणअस्तुपुण्याहम्॥ पुनः यजमान कहे-भो ब्राह्मणाः अस्य कर्मणः कल्याणं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भवंतो ब्रुवन्तु। ब्राह्मण-अस्तु कल्याणं।। यजमान-भो ब्राह्मणाः अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवंतो ब्रुवन्तु। ब्राह्मण-ऋद्ध्यताम्।। यजमान- भो ब्राह्मणाः अस्यकर्मणः स्वस्ति भवंतो ब्रुवन्तु।। ब्राह्मण- अस्तु स्वस्ति।। यजमान- भो ब्राह्मणाः अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवंतो ब्रुवन्तु।। ब्राह्मण-अस्तु श्री।।

।। मूल शान्ति प्रयोगः।।

जमीन को गोबर से लीप लेवे। चौकी के ऊपर आचार्य गणेश वसुधारा मातृका नवग्रहादि स्थापित करे। हवन वेदी का निर्माण कर लेवे। एक वेदी २४ दल बनाकर वेदी के चारों कोनों में कलश के लिए अष्टदल बनावें। चारों कोनों में ४ कलश ताम्बे के रखे। १ घड़ा चारों कलशों के मध्य चौबीस दल के ऊपर १०० या २७ छेद वाला रखे। घड़ों के नीचे सतनाजा[1] रख देवे। पहले शान्ति पाठ तथा जप पाठ के लिए ५ ब्राह्मणों का वरण, गणेश, मातृका, वसु, ग्रह का पूजन कर लेवे। चौकी व कलश पूजन

सप्तधान्य- यवगोधूम धान्यानि तिलाः कंकुश्चमुद्गकाः।
श्यामाकाश्चणकाश्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्ववत् कर लेवे तथा पांचों कलशों में पूजन के समय इन चीजों को गेर देवे-

१- **पूर्व दिशा के कलश में**-देवदारू, सफेद चन्दन, रक्तचन्दन, कमल गठ्ठे, नीलोफर, कूट, कंगनी, सूठ, नागर मोथा, आंवला, वच्च, सरसों, अगर, तगर, मासी, बालछड़।

२- **दक्षिण के कलश में**-पंचामृत, गजमद गंगाजल, तीर्थोदक, सप्तधान्य, सोना।

३-**पश्चिम के कलश में**-गजस्थान की मिट्टी, वराहोत्खात की मिट्टी, राजद्वार की मिट्टी, रथ के नीचे की मिट्टी, गौशाला की मिट्टी, चतुष्पथ की मिट्टी। तालाब की मिट्टी।

४-**उत्तर दिशा के कलश में**-मोती, मूंगा, माणिक्य, हीरा, नीलम, बड़ पीपल, ढाक, गूलर, जामुन, कदम्ब, नीम, इमली, आम इसी घड़े में २७ नदियों (कुंओं) का जल डाल देवे।

५-**मध्य**- कलश जो सौ या सत्ताइस छेदवाला है उसमें सौ औषधि (जो मिल सके पत्ते, छाल जड़ फूल या फल) डाल देवें। इनके अभाव में विष्णु कांता, सहदेई, तुलसी दल, शतावर, कुशा, केशर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गेर देवें। एक वस्त्र से ढक देवें, वस्त्र के ऊपर अष्टदल बनाकर सोने की नक्षत्र की मूर्ति रख कर कलश चौबीस दल के ऊपर पूर्ण पात्र पर रख देवे-

मध्य कलश में मूल मूर्ति पूजन-सुवर्ण निर्मित प्रतिमा का अग्न्युत्तारण पूर्वक पंचामृत से स्नान करावे।

विनियोग-मोषुण इतिमंत्रस्य घोरः कृण्वो ऋषिर्निर्ऋतिर्देवता गायत्री छन्दः निर्ऋतिस्थापने विनियोगः॥ एक आचमन जल छोड़ देवें।

प्रतिमा स्नान मंत्र- मोषुणः परापरानिर्ऋति-र्दुर्हणाधीत् पदीष्ठ तृष्णाया सह॥ प्रतिमा को वस्त्र पर रखे। भूर्भुवः स्वः भगवन्निर्ऋते इहागच्छ, इहतिष्ठ, इत्यावाह्य संस्थाप्य॥ पूजन करके पुनः पुष्प लेकर हाथ जोड़े-

संस्मरे न्निर्ऋतिं श्याम सुमुखं नर वाहनम्।
रक्षोधिपंङ्गहस्तं दिव्याभरण भूषितम्॥

१-दक्षिण कलश में, इन्द्र के पूजन के लिए विनियोग-ॐ इन्द्रं वो इतिमंत्रस्य, मधुश्च्छन्द ऋषिः, इन्द्रो देवता, गायत्री छन्दः, इन्द्रस्थापने विनियोगः।

पूजन मंत्र-ॐ इन्द्रं वो विश्व तस्परि महामहे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ, सुप्रतिष्ठवरदो भवः॥

२-उत्तर के कलश में वरुण देवता के पूजन के लिए विनियोग-ॐ अप्सुमे इतिमंत्रस्य मेधातिथि-र्ऋषिरापो देवता अनुष्टुप् छन्दः अपांस्थापने विनियोगः।

पूजन मंत्र-ॐ अप्सुमे सोमो ऽ अब्रवीदन्त-र्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभु वमापश्च विश्वभेषजीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आप इहागच्छ इहतिष्ठ इत्यांप स्थापयेत्॥

३-पूर्व के कलश में ब्रह्मा देवता के पूजन के लिए विनियोग-ॐ ब्रह्म जज्ञानमिति गौतम ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दो, ब्रह्मदेवता ब्रह्माऽऽवाहने विनियोगः॥

पूजन मंत्र-ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनआवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्म इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भवः॥

४-पश्चिम दिशा के कलश में विष्णु देवता के पूजन के लिए विनियोग-ॐ इदं विष्णुरिति मेधा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दो विष्णुर्देवता विष्णु आवाहने विनियोगः।।

पूजन मंत्र-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् समूढमस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णु इहागच्छ इहतिष्ठ इति विष्णु संस्थाप्य।। पूजन कर लेवें। अन्य ब्राह्मण रुद्र सूक्त, ॐ आशुः शिशान० के बारह मंत्र, ॐ कृष्णुष्वापाजः० के पांच मंत्र, रक्षोहणं बल० के चार मंत्र, महामृत्युंजय तथा नक्षत्र मंत्र का जप करते रहे-

।। रुद्रसूक्त के १६ मंत्र।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽ उतो त ऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।१।। या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।२।। यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ꣳ सीः पुरुषं जगत्।।३।। शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳ सुमना ऽ असत्।।४।। अध्यवोचदधि वक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥५॥ असौ यस्ताम्रो ऽ अरुण ऽ उत बभ्रुः सुमंगलः। ये चैन ꣳ रुद्रा ऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषा ꣳ हेडऽ ईमहे॥६॥ असौ यो ऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपाऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टो मृडयाति नः॥७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये ऽ अस्य सत्वानो ऽहं तेभ्यो ऽ करं नमः॥८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः ऽपरा ता भगवो वप॥९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ऽ उत। अनेशन्नस्य या ऽ इष व ऽ आभुरस्यनिषङ्गधिः॥१०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वत- स्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य ऽ इषुधिस्तवारे ऽ अस्मन्निधेहि तम्॥१२॥ अवतत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्त्राक्ष शतेषुधे निशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥१३॥ नमस्त ऽ आयु धायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥१४॥ मा नो महान्तमुत मा नो ऽ अर्भकं मान ऽ उक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नो वधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥१५॥ मा नस्तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥१६॥

॥ इति रुद्र सूक्त॥

आशुः शिशनो के १२ मंत्र

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोनिमिष ऽ एकवीरः शत ꣳ सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः॥१॥

संक्रन्दनेनानिमिषेणजिष्णुना युत्कारेण दुश्चवनेन धृष्णुना। तदिन्द्रेण जयत तत्सहद्ध्वं युधो नरऽइषुहस्तेन वृष्णा॥२॥

स ऽ इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी स ꣳ स्रष्टा स युध ऽ इन्द्रो गणेन। सꣳसृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता॥३॥

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्रां २ऽअपबाधमानः। प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेद्ध्यविता रथानाम्॥४॥

बलविज्ञायस्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहमान ऽ उग्रः। अभिवीरोऽअभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित्॥५॥ गोत्रभिदंङ्गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा। इमꣳसजाताऽअनु वीरयध्वमिन्द्रꣳसखायोऽअनु सꣳरभध्वम्॥६॥

अभिगोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः। दुश्चवनः पृतानाषाडयुध्यो ऽस्माक ꣳ सेना अवतु प्र युत्सु॥७॥

इन्द्र ऽ आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणाः यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥८॥ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ ऽआदित्यानां मरुता ꣳ शर्द्धऽउग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषोदेवानां जयतामुदस्थात्॥९॥

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मना ꣳ सि। उद्वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः॥१०॥

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु द्ध्वजेष्वस्माकं याऽइषवस्ता जयन्तु। अस्माकं वीरा ऽ उत्तरे भवन्त्वस्माँ २ऽउ देवाऽ अवता हवेषु॥११

अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि। अभिप्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्॥१२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृष्णुष्व पाजः के ५ मंत्र

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ २ऽइमेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानो ऽ स्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥१॥

तव भ्रमास ऽ आशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः। तपू ꣳ ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो विसृज विष्वगुल्काः॥२॥

प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशोऽ-अस्या अदब्धः। योनो दूरे ऽअघशꣳसो यो ऽ अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरादधर्षीत्॥३॥

उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ २ऽ ओषतात्तिग्महेते। यो नो ऽ अरातिꣳसमिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्॥४॥

ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने। अवस्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून्। अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥५॥

रक्षाहेणं के ४ मंत्र

ॐ रक्षोहणं बलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निचखानेदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि॥१॥

स्वराडसि सपत्नहा सत्रराडस्यभिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा॥२॥

रक्षोहणो वो बलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो बलगहनोऽवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो बलगहनो ऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणो वां बलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां बलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ॥३॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमह ꣳ रक्षसां ग्रीवा ऽ अपिकृन्तामि। यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वा ऽन्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि॥४॥

महामृत्युञ्जय जप पुस्तक से करे।

नक्षत्र जप मंत्र-ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्य मग्नि ꣳ स्वे योनाव भारुषा ताँ विश्वेर्देव ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिविश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ निऋतये नमः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब चौबीस दलों में निम्न देवताओं (नक्षत्रों) का आवाहन करें-(पूर्व से दक्षिण क्रम में)

मूल नक्षत्राधिष्ठित निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ। जेष्ठा नक्षत्रधिष्ठित इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठा। पूर्वषाढ़ा नक्षत्राधिष्ठित वरुण इहागच्छ इह तिष्ठा। उत्तराषाढ़ा नक्षत्राधिष्ठित विश्वेदेवा इहागच्छ इहतिष्ठ। श्रवण नक्षत्राधिष्ठित विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ। धनिष्ठा नक्षत्राधिष्ठित अष्टवसवः इहागच्छ इहतिष्ठ। शतभिषा नक्षत्राधिष्ठित वरुणः इहागच्छ इहतिष्ठ। पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्राधिष्ठित अजैकपाद इहागच्छ इहतिष्ठ। उत्तरभाद्रपदाधिष्ठित अहिर्बुध्न्यइहागच्छ इहतिष्ठ। रेवतिनक्षत्राधिष्ठित पूषन् इहागच्छ इह तिष्ठ। अश्विनी नक्षत्रधिष्ठित अश्विनौ इहागच्छ इह तिष्ठ। भरणि नक्षत्राधिष्ठित यम इहागच्छ इहतिष्ठ। कृत्तिका नक्षत्राधिष्ठित अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ। रोहिणी नक्षत्राधिष्ठित प्रजापते इहागच्छ इहतिष्ठ। मृगशीर्षक्षत्राधिष्ठित सोम इहागच्छ इहातिष्ठ। आर्द्रा नक्षत्राधिष्ठित रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ। पुनर्वसु नक्षत्राधिष्ठित अदिते इहागच्छ इह तिष्ठ। पुष्य नक्षत्राधिष्ठित बृहस्पते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इहागच्छ इहतिष्ठ। आश्लेषा नक्षत्राधिष्ठित सर्प इहागच्छ इह तिष्ठ। मघानक्षत्राधिष्ठित पितरः इहागच्छ इहतिष्ठ। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्राधिष्ठित भग इहागच्छ इहतिष्ठ। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्राधिष्ठित अर्यमन्‌ इहागच्छ इहतिष्ठ। हस्ता नक्षत्राधिष्ठति सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ। चित्रा नक्षत्राधिष्ठित त्वष्टः इहागच्छ इह तिष्ठ। स्वाति नक्षत्राधिष्ठित वायो इहागच्छ इहतिष्ठ। विशाखा नक्षत्राधिष्ठित इन्द्राग्नि इहागच्छ इहतिष्ठ। अनुराधा नक्षत्राधिषित मित्र इहागच्छ इहतिष्ठ।

नक्षत्रों का पूजन पंचोपचार अथवा षोडशोपचार से कर इन्द्रादि दश दिक्‌पाल का आवाहन पूर्वक पूजन कर लेवें। ग्रह पूजन करके अग्नि प्रतिष्ठा कर, ग्रहादि होम करके घृतमिश्रित पायस से नक्षत्र होम करे-

ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यः स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ वसुभ्यः स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ अजैकपदे स्वाहा। ॐ अहिर्बुध्न्याय स्वाहा। ॐ पूष्णे स्वाहा। ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अश्विभ्यां स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ प्रजापतये स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ अदितये स्वाहा। ॐ बृहस्पये स्वाहा। ॐ सर्पाय स्वाहा। ॐ पितृभ्यः स्वाहा। ॐ भगाय स्वाहा। ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा। ॐ मित्राय स्वाहा।

इन्द्रादिदश दिक्पाल होम निम्न प्रकार कर देवें-

ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ कुवेराय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा॥

पायस में तिल डालकर (कृसर पायसः) वक्ष्यमाण होम करे-

ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ क्षेत्राधिपतये स्वाहा। ॐ मित्रावरुणाभ्यां स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। हवनीय द्रव्य (आज्यचरु) से पुनः जपदशांश होम कर देवें। पुनः-

ॐ श्रियै स्वाहा॥ अब उत्तर पूजन कर होमान्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्णाहुति देकर प्रणिता विमोक करके आचार्य सब कलशों के जल को एक बड़े घड़े में डाल देवें। आचार्य शतछिद्र घड़े को लेवे। यजमान बालकुमार सहित बैठ जावे। आचार्य घड़े में शत्मूल अथवा जितने उपलब्ध मूल हो छिद्र वाले घड़े में डाल देवें। अभिषेक के समय यजमान सिर के ऊपर कम्बल अथवा शूर्प रख देवे, परन्तु छींटे यजमान के ऊपर पड़ते रहें। एक ब्राह्मण छिद्र वाले कलश को सपरिवार यजमान के सिर के ऊपर पकड़े रहे। एक ब्राह्मण उसमें अन्य कलशों का जल डालता रहे।

अभिषेक मंत्र-ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥

पुराणोक्त अभिषेक मंत्र

योऽसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गज वाहनः॥
मूलजातं शिशोर्दोषं माता पित्रोर्व्यपोहतु॥१॥

१. _ मूल शान्ति अभिषेक में 'मूलदोषं' ज्येष्ठा शान्ति में 'ज्येष्ठादोषं' आश्लेषा शान्ति में 'सार्पदोषं' ऐसा उच्चारण करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ् मेष बाहनः॥
सप्त जिह्वश्च देवोग्निर्मूलदोष[१] व्यपोहतु॥२॥
योऽसौ दंडधरो देवो धर्मो माहिषवाहनः॥
मूलजातं शिशोर्दोशं व्यपोहतु यमोमम॥३॥
योऽसौ खड्गधरोदेवो निर्ऋतीराक्षसाधिपः॥
प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गंडान्त संभवम्॥४॥
योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः॥
नक्रवाहः प्रचेतानो मूलदोषं व्यपोहतु॥५॥
योऽसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः॥
प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शान्तये॥६॥
योऽसौ निधिपतिर्देवः खड्गभृद्वाजिवाहनः।
मातापित्रोः शिशोश्चैवः मूलदोषंव्यपोहतु॥७॥
योऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः॥
मूलादिसर्वगंडान्तं दोषमाशु व्यपोहतुः॥
विध्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः॥
सर्वदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु शान्तिदाः॥९॥
मूलनक्षत्रजातस्यं मातापित्रोर्धनस्य च॥
भ्रातृज्ञातिकुलोत्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु॥१०॥
पितरः सर्व भूतानां रक्षन्तु पितरः सदा॥
मूल नक्षत्र जातस्य वित्तं च ज्ञातिबांधवान्॥११॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्रो से घड़े के जल का अभिषेक कर देवें।

अभिषेक के बाद पुनः यजमान सपरिवार स्नान कर बालक और पत्नि के साथ वेदी के पास जाकर बैठे। आचार्य पुनः यजमान को तिलक दे-

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः। तिलकंते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये॥

यजमान काँसे के पात्र में घी भरे, छायादान हेतु घी तपा लेवें; तब यजमान सपरिवार उसमें मुंह देखे-

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्यरूपंप्रति-चक्षणाय। इन्द्रो मायाभि पुरुरूप ऽ ईयते युक्ताह्यस्य हरयः शतादशोत्ययं वैहरयोयंवैदशचसहस्त्रणां बहूनिचनन्तातदेतद् ब्रह्मपूर्वमनस्त्रवाह्यजमनुः सर्वानुशासनम्॥ यजमान दक्षिणा सहित आज्यपात्र ब्राह्मण को देवे-

संकल्प-ॐ अद्येत्यादि० देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रो ऽहं अमुकशर्माहं ममामुकनक्षत्रजातस्य बालकस्य गण्डजनित दोषोपशांत्यर्थं मूलशांति श्री महामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं इदं छायापात्रं घृतप्रपूरितं कांस्यपात्र दक्षिणा सहितं यथानामगोत्राय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

देवता विसर्जन-

यान्तु देवगणाः सर्वेस्वशक्त्यापूजितामया।
इष्ट कामप्रसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च॥
गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थान परमेश्वरः।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशनः॥

॥ इति मूल नक्षत्र शान्तिः॥

॥ ज्येष्ठा शान्ति प्रयोगः॥

यजमान पहले पूर्व प्रकार गोमुख प्रसव शांति आचार्य द्वारा करवाकर सपत्नीक आसन पर बैठ जावे, आचार्य यजमान को आचमन देकर आसन पूजनादि करके ब्राह्मण पूजन, शांति पाठ, गणपति पूजन, कलश पूजन, ग्रह पूजन, आदि कर लेवे। श्वेत वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर चावल से अष्टदल बनाकर पूर्ण पात्र के ऊपर कलश स्थापन करे। कलश का पूजन कर पुनः उसके मध्य इन्द्र का आवाहन करे-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवेहवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार इन्द्र का आवाहन पूजन करके अष्ट दल के ऊपर निर्ऋत्यादि छब्बीस नक्षत्राधिपतियों (मूल शान्ति में देखें) का आवाहन पूजन कर अष्ट दल के बाहर इन्द्रादि लोकपाल का पूजन करें। इस अष्टदल के उत्तर में पुनः श्वेत वस्त्र बिछाकर अष्टदल बनाकर मध्य में एक सौ छिद्र वाले कलश को स्थापित करें। चार अन्य कलश चार दिशाओं में पूर्व क्रम में रख देवें। मध्य कलश में पञ्चगव्य छिड़क दें। अन्य सामग्री पूर्ववत् डालकर पूजन करे। कलशों का पूजन क्रम-

मध्य कलश-ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरिमभिः॥

पूर्व कलश-त्वं नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो ऽ अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः ॐ शोशुचानो विश्वाद्वेषा ॐ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।

दक्षिण कलश-त्वं नो ऽ अग्ने तव देव पायुर्भिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्रातातोकस्य तनये गवामस्यनिमेष ॐ रक्षमाणस्तव व्रते॥

पश्चिम कलश-समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरभि मां वाही स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतां

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गणः शम्भूर्मयोभूरभि मां वाहि स्वाहा। अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भू- र्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा।

उत्तर कलश-इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके।

वरुण कलशों का पूजन षोडशोपचार से करके ब्राह्मण मूल शांति अनुसार शांतिसूक्त नक्षत्र मंत्र रुद्रसूक्त आदि का पाठ तथा त्र्यम्बक मंत्र का जप कर ग्रहहोम नक्षत्र होम लोकपाल होम पूर्णाहूति घृतछाया पात्र दान अभिषेक आदि पूर्ववत् सम्पन्न करे।

॥ इति जेष्ठा शान्ति प्रयोगः ॥

॥ आश्लेषा शान्ति प्रयोगः॥

पूर्ववत् यजमान आचार्य द्वारा गोमुख प्रसव शान्ति कर ब्राह्मण का पूजन कर संकल्प करे- **मम अस्य बालकस्य (कुमार्या वा) आश्लेषा नक्षत्र प्रथम-चरणादि जनन सूचित सकलारिष्ट निरसनद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं सग्रहमखाम् आश्लेषा नक्षत्र जनन शांतिं करिष्ये। तदङ्गत्वेन दिग्ररक्षणादि देवतास्थापनादि करिष्ये।** गणेश वरुण ग्रहादि पूजन करके रुद्र कलश का पूजन रुद्रसूक्त से कर देवें। रुद्र कलश के उत्तर में चौबीस दलात्मक कमल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चावलों से बनावें, मध्य कलश स्थापन करें, उसमें शतौषधि उसके अभाव में शतावरी सप्तधान्य (मूलशान्त्यानुसार) रख दें। इस कलश के ऊपर सुवर्ण की सर्पमूर्ति अग्न्युतारण कर प्राण प्रतिष्ठा करके रख कलश पूजन करे-

कलश पूजन मंत्र-ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥

सर्पमूर्ति पूजन मंत्र-ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽ अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

कलश के दक्षिण में बृहस्पति का पूजन मंत्र-

ॐ बृहस्पते ऽ अति यदर्यो ऽ अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छवस ऽ ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

कलश के वाम में पित्र पूजन मंत्र-ॐ उदीरतामवर ऽ उत्परास ऽ उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ऽ ईयुरवृका ऽ ऋतज्ञास्ते नो ऽ वन्तु पितरो हवेषु॥ इस प्रकार प्रतिष्ठा कर पूजन कर देवे। सर्प मूर्ति में विशेष नागों का पूजन क्रम-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अनन्तायनमः। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। ॐ वासुकये नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ कर्कोटकाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ कंबलाय नमः। ॐ शंखपालाय नमः॥ पूजन कर चौबीस दलों में नक्षत्र पूजन कर कुशकण्डिका कर अग्नि पूजन करके ग्रहहोमादि करके घृत मिश्रित पायस से **नमोऽस्तुसर्पेभ्यो०** मंत्र से १०८ आहुति। **बृहस्पतये०** मंत्र से २८ आहुति **उदीरता०** मंत्र से २८ आहुति तथा लोकपालादि आहुति देवें। पुनः पायस में तिल डालकर ८ आहुति देवे-

ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ क्षेत्राधिपतये स्वाहा। ॐ मित्रावरुणाभ्यां स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। पुनः पूर्ववत् अग्नि का उत्तर पूजन करके आचार्य पूर्णाहुति कर मध्य कलश के जल से यजमान का सपरिवार अभिषेक कर देवें। घृत छायापात्र दान कर अन्य कार्य पूर्ववत् सम्पन्न करें। अश्विनी, मघा, रेवती शांति इसी प्रकार करे व नक्षत्र जप मंत्र नक्षत्र शांति में देखें।

॥ इति आश्लेषा शान्ति प्रयोगः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्तिकस्त्री प्रसूता शान्ति

शुभ दिन में यजमान सपत्नीक शुद्ध होकर पूर्व मुख होकर आचमन लेकर आचार्य स्वतिवाचन आदि करे फिर यजमान संकल्प करें-**ॐ तत्सत् अद्यैत्यादि० ज्ञाताज्ञातकायवाङ्मनस्कृत सकल-पापक्षय पूर्वक श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं सौर कार्तिक मासाधिकरणकैत्स्वीय स्त्रीप्रसव-संसूचितैतत्कुमारै तत्पित्राद्यरिष्टोपशमनपूर्वकश्री ब्रह्म प्रभृतिदेवता प्रसादात् व्यवहितोत्तकालिकैतद्-बालकै तत्पित्रादिजनाधिकरणकायुः सुखसम्प-द्रक्षादि सिद्ध्यर्थं श्री ब्रह्मादि पूजन रूपां कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्तिमहंकरिष्ये॥ तदङ्गभूतं गणपत्यादि पूजनं चकरिष्ये॥** आचार्य गणपत्यादि देवताओं का पूजन करा लेवे। वरण सामग्री को लेकर चार ब्राह्मणों का महामृत्युंजय आदि जप हेतु वरण भी कर लेवें-**ॐ अद्येत्यादि पूर्वोच्चारित प्रतिज्ञा सिद्ध्यर्थं क्रियमाणकार्तिक स्वस्त्री प्रसूताशान्त्य-ङ्गत्वेन ब्रह्मविष्णुरुद्र सूर्य यथापरिमितं जपं कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्र अमुकशर्माणं ब्राह्मणं**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जापकत्वेन त्वामहं वृणे। चार वेदी का निर्माण कर पूर्व दिशा में धान्य के ऊपर ब्रह्मा के पूजन हेतु कलश रखें। दक्षिण दिशा में गेहूं के ऊपर विष्णु कलश, पश्चिम दिशा में चावल के ऊपर रुद्र कलश तथा उत्तर दिशा में धान्य के ऊपर सूर्य कलश स्थापन कर पूजन निम्न क्रम से करें-

ब्रह्मा पूजन - आवाहन - **ॐ एह्येहि सर्वामरपूज्यपाद पितामहाधोक्षज पद्मजात। चतुर्मुखध्यानरताष्टनेत्र त्वां ब्रह्म मूर्ते भगवन्नमस्ते॥**

स्थापन-ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। ब्रह्मा का पूजन कर लेवें।

विष्णु पूजन-आवाहन-एह्येहि नारायण दिव्यमूर्ते लक्ष्मीपते दानववंशवह्ने। सुवर्णपृष्ठासन पद्मनाभ जनार्दनस्त्वं भगवन्नमस्ते॥

स्थापन-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्यपा ꣳ सुरे स्वाहा। विष्णु का पूजन कर लेवें।

रुद्र पूजन-आवाहन-एह्येहि भो शंकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शूलपाणे मृत्युंजय श्रीकर नीलकंठ। उमापते भस्म विभूषितांग महेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते॥

स्थापन-ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः बाहुभ्यांमुत ते नमः॥

रुद्र का पूजन कर सूर्य का आहवान करें-

सूर्य पूजन-आवाहन-दिवाकरं सहस्त्रांशु ब्रह्माद्यैरमरैः स्तुतं। लोकनाथं जगच्चक्षु सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

स्थापन- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ सूर्य का पूजन करके ब्राह्मण महामृत्युंजय जप एक लाख अथवा जितना हो सके करके आचार्य अग्निस्थापन कुश कण्डिका कर ॐ प्रजापतये स्वाहा। पुनः प्रायश्चित होम करे-

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवादधमंविमध्यमं ॐ श्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्यामस्वाहा॥ पुनः गणपत्यादि हवन करके निम्न आहुति दें- ॐ सूर्याय स्वाहा॥१॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा॥२॥ ॐ विष्णवे स्वाहा॥३॥ ॐ रुद्राय स्वाहा॥४॥ ॐ शंभवे स्वाहा॥५॥ ॐ ईशाय स्वाहा॥६॥ ॐ पशुपतये स्वाहा॥७॥ ॐ शिवाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वाहा।।८।। ॐ शूलिने स्वाहा।।९।। ॐ महेश्वराय स्वाहा।।१०।। ॐ ईश्वराय स्वाहा।।११।। ॐ शर्वाय स्वाहा।।१२।। ॐ ईशानाय स्वाहा।।१३।। ॐ शंकराय स्वाहा।।१४।। ॐ चन्द्रशेखराय स्वाहा।।१५।। ॐ भूतेशाय स्वाहा।।१६।। ॐ खण्डपरशवे स्वाहा।।१७।। ॐ गिरीशाय स्वाहा।।१८।। ॐ मृडाय स्वाहा।।१९।। ॐ मृत्युंजयाय स्वाहा।।२०।। ॐ कृत्तिवाससे स्वाहा।।२१।। ॐ पिनाकिने स्वाहा।।२२।। ॐ प्रमथाधिपाय स्वाहा।।२३।। ॐ उग्राय स्वाहा।।२४।। ॐ कपर्दिने स्वाहा।।२५।। ॐ श्रीकण्ठाय स्वाहा।।२६।। ॐ शितिकण्ठाय स्वाहा।।२७।। ॐ कपालभृते स्वाहा।।२८।। ॐ वामदेवाय स्वाहा।।२९।। ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा।।३०।। ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा।।३१।। ॐ कृशानुरेतसे स्वाहा।।३२।। ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा।।३३।। ॐ धूर्जटये स्वाहा।।३४।। ॐ नीललोहिताय स्वाहा।।३५।। ॐ स्मरहराय स्वाहा।।३६।। ॐ भर्गाय स्वाहा।।३७।। ॐ त्र्यम्बकाय स्वाहा।।३८।। ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा।।३९।। ॐ गंगाधराय स्वाहा।।४०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महामृत्युंजय मंत्र का जितना जप किया गया है उसका दशांश घी युक्त विल्वपत्र से हवन करें- **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्बारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐ स्वाहा॥**

हवनोपरांत पूर्णाहुति कर यजमान पत्नि सहित बालक को अपने पास बिठाये आचार्य वेदमंत्रों के द्वारा तथा पुराणोक्त मंत्रों द्वारा अभिषेक करें।

यौ सौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृष वाहनः।
कार्तिक स्त्री प्रसूतायाः दोषमासु व्यपोहतु॥

॥ इति कीर्तिकस्त्रीप्रसूताशान्ति ॥

॥ त्रिक प्रसव शान्ति ॥

तीन पुत्रों के बाद यदि कन्या का जन्म हो अथवा/तीन कन्याओं के बाद यदि पुत्र का जन्म हो तो माता-पिता और कुल के लिए अनिष्ट कारक होता है। धन हानि, दुख, कष्ट दूर करने के लिए त्रिकप्रशव शांति का विधान शास्त्रकारों ने बताया है अतः दोष दूर करने के लिए शांति ग्यारहवें या बारहवें दिन या शुभ मुहूर्त में करें-.

देशकालौ संकीर्त्य मम सुतत्रय जन्मान्तरं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कन्याजनन (वा कन्यात्रय जन्मान्तरं पुत्र जन्म) सूचित सर्वारिष्ट परिहार द्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं त्रिक्प्रसवशांतिं करिष्ये। पुनः तदङ्गत्वेन दिग्रक्षणादि देवतास्थापनादि करिष्ये। गणेश वरुण मातृका ग्रह पूजन कर पांच कलश स्थापन करें-ब्रह्मा-ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ इतिब्रह्माणम्॥ विष्णुः-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा॥ इति विष्णुम्॥ त्र्यम्बक-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। इतित्र्यम्बकम्॥ इन्द्र-ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवेहवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ इतिइन्द्रम॥ रुद्र- ॐ नमस्तेरुद्र मन्यव ऽ उतोत ऽ इषवे नमः। बाहभ्यामुतते नमः॥ इतिरुद्रम्॥ पांचों कलशों का पूजन षोडशोपचार से कर अग्नि स्थापन कर ग्रहादि होम के बाद ब्रह्मा, विष्णु, त्र्यम्बक, इन्द्र रुद्र प्रत्येक को १०८ आहुति देकर पूर्णाहूति के बाद आचार्य अभिषेक करे। अभिषेक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के बाद तीन अन्न तथा तीन धातु (स्वर्ण, रजत, ताम्र) का दान ब्राह्मणों को देवे।

अन्न, धातु दान संकल्प-अद्यकृतैतत्त्री-तरशान्त्यङ्गत्वेन श्रीब्रह्मविष्णुरुद्रप्रीतये इदं यथाशक्ति गोधूमाद्यन्नत्रयं (स्वर्णतज ताम्रं) विश्वेदेव दैवतांक (अग्निरुद्रविष्णुदैवता) यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे॥

॥ इति त्रिक प्रसव शान्ति ॥

॥ ग्रहणजननशान्ति ॥

चन्द्र, सूर्य ग्रहण काल में यदि प्रसव हो तो शांति के लिए सूतक निवृत्ति के बाद शुभमुहूर्त में गोमुख प्रसव शान्ति कर ग्रहण शान्ति के लिए ग्रहण काल नक्षत्र की सुवर्ण प्रतिमा, सूर्य की सुवर्ण प्रतिमा तथा राहु की शीशे की प्रतिमा, पूजन स्थल में रख यजमान संकल्प करें-

अद्येत्यादि० मम भार्यायाः सूर्यग्रहण (चन्द्रग्रहण) कालीन प्रसूतिसूचितसर्वारिष्ट-परिहारद्वारा श्रीपरमेश्वर- प्रीत्यर्थं सग्रहमखांशान्तिं करष्ये॥ आचार्य गणेशादि पूजन कर श्वेत वस्त्र के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊपर प्रतिमा को रख पूजन करे।

सूर्य पूजन- आकृष्णेति मंत्रस्य हिरण्यस्तूपागिंरसऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः। सूर्योदेवता सूर्य प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

आवाहान- पद्मासनः पद्मकरोद्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः। दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥

स्थापन-ॐ आकृष्णेनरजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ सूर्याय नमः॥ माणिक्य, गेहूँ, गुड़, ताम्र, रक्त वस्त्रादि से सूर्य का पूजन कर लेवें। चंद्रग्रहण काल में चन्द्र का पूजन करें-

चन्द्र पूजन- इमन्देवेतिमंत्रस्य गौतमऋषिः, सोमोदेवता, विराट छन्दः सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

आवाहन- श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्ड धरो द्विबाहुः। चन्द्रो ऽ मृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥

स्थापन- ॐ इमन्देवा ऽ असपत्न ꣳ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानराज्यायेन्द्र सेन्द्रियाय। इममुख्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वो ऽ मीराजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा॥ सोमाय नमः॥ चन्द्र का पूजन चावल कपूर श्वेत वस्त्र दूध रजत आदि से कर लेवें।

सूर्य या चन्द्र के दक्षिण में राहू का पूजन करे-

कयानश्चित्रेतिमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवता राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

स्थापन- **ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुवदूती सदाबृधः सखा कया शचिष्ठया वृता॥ राहवे नमः॥** तिल, तेल, लोहा, उड़द नारियल आदि से राहू का पूजन कर लें।

नक्षत्र पूजन- ग्रहण काल में जो नक्षत्र हो, मंत्र जप (नक्षत्र शांति से करें) सूर्य या चन्द्र, राहु तथा नक्षत्र जप कर अग्निस्थापन करें। गणपत्यादि हवन कर जप दशांश हवन कर पूर्णाहुति होम पश्चात् आचार्य को प्रतिमादान संकल्प यजमान करे आचार्य अभिषेक करे।

॥ इति ग्रहण जनन शान्ति ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ वास्तु विधान ॥

गृहस्थ के समस्त कार्य गृह के बिना सम्पन्न नहीं होते। अतः गृहस्थियों को पवित्र सुन्दर भूमि में गृह निर्माण[१] करके उसमें निवास कर गृहस्थ के सब कार्यो को सम्पन्न करें। पहले शुभ मुहूर्त में भूमि की परीक्षा कर जल शोधन कर गृहारम्भ करना चाहिये। ग्राम और गृहपति (स्वामी) में मित्रता हो तो गृह निर्माण करना उत्तम होता है। **मैत्री विवाहवत् ज्ञात्वा विपरीता तु नाडिका। गृहं तत्स्वामिनोभैंक्यं मृत्युदं तद् विवर्जयेत्॥** (मुहूर्त भूषण)

पिण्ड जिस नक्षत्र से बनावे, उससे विवाह में जिस प्रकार की गणना का विचार होता है उसी प्रकार गृह तथा गृहस्वामी के ग्रहादि का विचार करना, गृह में विवाह के विपरीत एक नाड़ी होना शुभ है अन्य वर्ण, वैश्य तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट विवाहवत् मेलापक करें। परंतु गृह और गृहस्वामी का एक नक्षत्र न लें।

---

१. स्नागारं दिशि प्राच्यामाग्नेय्यामग्निमन्दिरम्। अवाच्यां शयनागारं नैर्ऋत्यां वस्त्र मंदिरम्। प्रतीच्यं भोजनागारं वायव्यां पशुमन्दिरम्। भाण्डकोशतोतरस्यामैशान्यां देवमन्दिरम्॥ देवानांहि मुखं कार्यं पश्चिमाया सदा बुधैः॥ (आ.क.सू.)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वास्तु नाम-१-ध्वज, २-धूम, ३-सिंह, ४-श्वान, ५-वृष ६-गर्दभ, ७-गज ८-काक वास्तु।

ध्वज वास्तु में द्वार[१] सब दिशाओं में, सिंह वास्तु में पूर्व, दक्षिण, उत्तर द्वार, वृष में पूर्व दक्षिण द्वार, सम वास्तु लेना निषिद्ध है विषम वास्तु लेना शुभ कारक है।

गृहारम्भ मुहूर्त- गृहस्वामी का सूर्य गुरु चन्द्रमा शुभ हों रवि, मंगलवार, चरलग्न, रिक्ता ३०।१।८। तिथि छोड़कर लग्न से १२।८ स्थानों में शुभ तथा ३।६।११। स्थानों में पापग्रह का विचार करके वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन महीनों में तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ है। गृहेश के हाथ से घर की लम्बाई और चौड़ाई गुण कर पिण्ड होता है। पिण्ड को क्रमशः ६।६।६।८।३।८।८।४।८। से गुण कर ८।७।६।१२।८।२७।

द्वार स्थापन- १. द्वारस्योपरि यद् द्वारं द्वारं द्वारस्य सन्मुखम्।
न कार्यं व्यपदं व्ययश्च संकटं तद्दरित्रता।
अश्विन्यां त्र्युत्तरे स्वातौ रोहिण्यां पौष्णभे तथा।
एतानिभानि श्रेष्ठानि द्वारशाखावरोपणे॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१५। २७।१२०। से भाग देकर क्रमशः वास्तु, वार, अंश, धन, ऋण, नक्षण, तिथि, योग और मकान की आयु होती है। शुभ लग्न में ग्रह शुभ हो ता मकान की आयु पूर्ण होती है। जेष्ठ, वैशाख, माघ, फाल्गुन, महीनों में मृगशिर, चित्रा अनुराधा, रेवती, पुष्य, स्वाती, घनिष्ठा, श्रवण, मूल, ३ उत्तरा, रोहिणी, हस्त, नक्षत्रों में नवीन गृह में प्रवेश शुभ होता है।[१] चन्द्र, गुरु, शुक्र, बल देखना भी उत्तम है। रवि, मंगल, रिक्तातिथि का त्याग करें। पुराने घर में प्रवेश के लिए श्रावण, कार्तिक मर्गशीर्ष भी उत्तम है।

पिण्ड निर्माण प्रमाण

गृहे मृण्मये मानत्यक्तं प्रधानं तथा चेष्टिका भितिभागं तदर्धम्। तथा चोपलानां समित्या सदैव प्रकुर्याद् बुध श्चान्यथा वित्तनाशम्॥

(गृह चिन्तामणौ)

मिट्टी के दीवाल में भीत को छोड़कर पिण्ड का नाप करे। ईट के मकान का आधी भीत के नाप

१. गृह प्रवेश के समय-घटं तोय पूर्णं सपुष्पं सदीपं दूर्वाकुरै पल्लवै शोभितं च। कराभ्यां गृहित्वा कुमारी बुधं गां नमस्कृत्य गेहे विशेद् वैमनुष्यः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे, पत्थर के मकान का भीत सहित नाप कर पिण्ड बनवावे, तो शुभ होता है।

भगवान शंकर और अन्धकासुर के युद्ध में शंकर जी के शरीर से जो पसीना गिरा, उससे भूमि और आकाश में भय देने वाला एक प्राणी उत्पन्न हुआ। उसी को देवताओं ने पकड़कर नीचे मुख करके दबा रखा और उसको वर दिया कि तेरी पूजा सब शुभ कार्यों में होगी। अतः इस वास्तु पुरुष की पूजा करना सर्वोत्तम है।

एकाशीति पदं वास्तु गृहकर्मणि शस्यते। चतुः षष्टिपदंवास्तु प्रासादे देव भूभुजाम्।। गृह निर्माण में ८१ पद वास्तु का पूजन करना तथा देवपूजा, राजगृह नगर निर्माण में ६४ वास्तु करना श्रेष्ठ है। अतः हम पहले गृह वास्तु पूजन क्रम लिख रहे हैं-

ग्रह वास्तु पूजन

वास्तु पूजन हेतु पहले संकल्प करें-

अद्ये० मम सर्वोपशान्तिपूर्वक दीर्घायुर्विपुल धनधान्य पुत्रपौत्राद्यनवच्छिन सन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ शत्रुपराजयसदभीष्ट सिद्ध्यर्थं भवनदोष परिहार्थं नानाविधजीवहिंसादिजन्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकलदोष परिहार पूर्वक सर्वारिष्टोपशान्त्यर्थं अस्मिन् गृहे चिरकाल निवासार्थं श्री परमेश्वर प्रीतये सग्रहमखं वास्तु शान्तिं करिष्ये। तदङ्गतया दिग्रक्षणं गणपतिपूजनं कलशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृका पूजनं वसोर्द्धारायुष्यमंत्र जपं नान्दीश्राद्धं नवग्रह पूजनं ब्रह्मा आचार्य ऋत्विग् वरणं च करिष्ये।

गणपत्यादि देवता पूजन के बाद सुवर्ण या रजतमयी वास्तु प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा अग्न्युतारण हेतु पुनः संकल्प-

देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक शर्माहं (सपत्निकोहं) अस्यां वास्तुमूर्तौ अवघातादि दोष परिहारार्थे अग्न्युतारणं देवतासान्ध्यार्थं च प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये। वास्तुमूर्ति को पात्र में रखकर घृत लगाकर पंचामृत की धारा देवे-

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥ प्राणदा ऽ अपानदा व्यानदा वर्चोदाः वरिवोदाः। अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥

उपरोक्त मंत्र से पंचामृत धारा देकर फिर मूर्ति

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उससे द्वार रखने के नक्षत्र तक गिनना, ४ तक लक्ष्मी, ८ अशुभ, ८ शुभ, ३ मृत्यु, ४ सुख की प्राप्ति॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को बायें हाथ में रख दाहिने हाथ से ढककर प्राण प्रतिष्ठा के मंत्र बोलें-

ॐ आं ह्री क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्य वास्तु मूर्तेः प्राणा इह तिष्ठन्तु। ॐ आं ह्रीं क्रौं य र लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेर्जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं य र लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्य वास्तु मूर्तेः वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणपाणिपाद पायुपस्थानि इहागत्यं सुखं चिरंतिष्ठन्तु स्वाहा॥

अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेतीति कश्चन॥ वास्तु पुरुष प्रतिष्ठितो वरदोभव॥ वास्तु मूर्ति को वास्तु वेदी के ऊपर रख दें।

अब वास्तु पीठ के आग्नेय कोण से प्रदक्षिणापूर्वक चार शंकु निम्न मंत्र से रोप लेवें।

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालश्च सर्वतः। अस्मिन् गृहे ऽवतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥ फिर उन कीलों को द्विगुणकृत सूत्र से वेष्टित कर देवें। पुनः आग्नेय कोण से शंकु के पास उड़द भात (दध्योदन) बलि देवें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आग्नेय कोण में-ॐ अग्निभ्यो ऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥

नैर्ऋत्य कोण में-नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥

वायव्य कोण में-ॐ नमो वै वायु रक्षेभ्यो, ये चान्ये तान् समाश्रिताः। बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।

ईशान कोण में-ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः। बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ शंकुओं का पूजन पंचोपचार से कर वास्तु पीठ में दश रेखाओं का (पश्चिम से पूर्व) पूजन-**ॐ शान्तायै नमः। ॐ यशोवत्यै नमः॥ ॐ कान्त्यै नमः। ॐ विशालायै नमः। ॐ प्राणवाहिन्ये नमः॥ ॐ सत्यै नमः। ॐ सुमत्यै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ सुभद्रायै नमः। ॐ सुरथायै नमः।** रेखाओं का पूजन कर देवें। फिर दक्षिण से उत्तर की ओर दस रेखाओं को पूजन-**ॐ हिरण्यायै नमः। ॐ सुव्रतायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ विभूत्यै नमः॥ ॐ विमलायै नमः। ॐ प्रियायै नमः। ॐ जयायै**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमः। ॐ ज्वालायै नमः। ॐ विशोकायै नमः। ॐ इडाये नमः। ॐ रेखादेवताभ्यो नमः मंत्र से पूजन कर वास्तु मण्डल देवताओं का आवाहन स्थापन करें।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानि ह्यस्मान् स्वावेशे अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ॐ शिखिने नमः आवाहयामि, स्थापयामि॥ 'एवं सर्वत्र' ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ जयन्ताय नमः। ॐ कुलिशायुधाय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ सत्याय नमः। ॐ भृशाय नमः। ॐ आकाशय नमः। ॐ वायवे यनमः। ॐ पूष्णे नमः। ॐ वितथाय नमः। ॐ गृहक्षताय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ गन्धर्वाय नमः। ॐ भृंगराजाय नमः। ॐ मृगाय नमः। ॐ पितृभ्यो नमः। ॐ दौवारिकाय नमः। ॐ सुग्रीवाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ असुराय नमः। ॐ शोषाय ॐ पापाय नमः। ॐ रोगाय नमः। ॐ अहये नमः। ॐ मुख्याय नमः। ॐ भल्लाटाय नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ सर्पाय नमः। ॐ अदित्यै नमः। ॐ दित्यै नमः। ॐ आपाय नमः। ॐ सावित्राय नमः। ॐ जयाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ अर्यम्णे नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ विवस्वते नमः। ॐ विबुधाय नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ राजयक्ष्मणे नमः। ॐ पृथ्वीधराय नमः। ॐ आपवत्साय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ चरक्यै नमः। ॐ विदार्यै नमः। ॐ पूतनायै नमः। ॐ पापराक्षस्यै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ अर्यम्णे नमः। ॐ जृम्भकाय नमः। ॐ पिलिपिच्छाय नमः। ॐ पूर्वे इन्द्राये नमः। ॐ आग्नेय्याम् अग्नये नमः। ॐ दक्षिणस्याम् यमाय नमः। ॐ नैर्ऋत्याम् निर्ऋतये नमः। ॐ पश्चिमे वरुणाय नमः। ॐ वायव्याम् वायवे नमः। ॐ उत्तरे कुबेराय नमः। ॐ ईशान्याम् ईश्वराय नमः। ॐ पूर्वेशानयोर्मध्ये ब्रह्मणे नमः। ॐ निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये अनन्ताय नमः। ॐ पूर्वेइन्द्रादुत्तरतः। उग्रसेनाय नमः। ॐ दक्षिणे यमादुत्तरतः डामराय नमः। ॐ पश्चिमे वरुणादुत्तरतः महाकालाय नमः। ॐ उत्तरे सोमादुत्तरतः पिलिपिच्छाय नमः। ॐ पूर्वे हेतुकाय नमः। ॐ आग्नेयाम् त्रिपुरान्तकाय नमः। ॐ दक्षिणे अग्निवैतालाय नमः। ॐ नैर्ऋत्याम् असि वैतालाय नमः। ॐ पश्चिमे कालाय नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ वायव्याम् करालाय नमः। ॐ उत्तरे एकपादाय नमः। ॐ ईशान्याम् भीमरूपाय नमः। ॐ पूर्वेशानयोर्मध्ये खेचराय नमः। ॐ निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये तलवासिन्ये नमः॥ ॐ वास्तु पुरुषाय नमः॥

इस प्रकार आवाहन स्थापन कर प्रतिष्ठा करे-

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास ऽ इह मादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ॥

वास्तुमण्डल देवताभ्यो नमः॥ मंत्र से पूजन कर वास्तुमंडल के मध्य में ताम्र कलश स्थापित कर पूजन करके वास्तुमूर्ति को कलश के ऊपर रख दें।

ॐ वास्तु ध्रुवमूर्तिभ्यां नमः इस मंत्र से पूजन कर प्रार्थना करें-

ॐ वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो॥ मद्गृहे धन धान्यादि समृद्धि कुरु सर्वदा॥१॥ देवेश वास्तु पुरुष सर्व विघ्न विदारण। शान्ति कुरु सुखं देहि यज्ञेऽस्मिन्मम सर्वदा॥२॥ शत मांगल्य नाम से अग्नि पूजन तथा हवन कर बलिदान पूर्णाहूति कर पूर्व से रक्षोघ्न मंत्र द्वारा पल्लवों से युक्त त्रिगुण सूत्र से घर को वेष्ठित कर दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६४ कोष्ठात्मक

॥ देववास्तु मण्डल पूजन॥

संकल्प-अद्ये० अमुक तिथौ अमुक देवप्रतिष्ठायाः सांगता सिद्ध्यर्थं चतुः षष्टिपदे वास्तुपीठे शिखिन्यादि वास्तुमण्डल देवता आवाहन प्रतिष्ठा पूजनं च करिष्ये। वास्तु मूर्ति की प्रतिष्ठा कर पूर्ववत् शंकु रोपकर सूत्र बांध कर बलिदान देवें। फिर वास्तु मण्डल के ऊपर पश्चिम से पूर्व तक नव रेखा का पूजन करे-

ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ यशोवत्यै नमः। ॐ कान्तायै नमः। ॐ सुप्रियायै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ सुभगायै नमः। ॐ सुमत्यै नमः। ॐ इडायै नमः।

फिर दक्षिण से उत्तर की ओर नव रेखा देवता पूजन क्रम- **ॐ धान्यायै नमः। ॐ प्राणायै नमः। ॐ विशालायै नमः। ॐ स्थिरायै नमः। ॐ भद्रायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ निशायै नमः। ॐ विरजायै नमः। ॐ विभवायै नमः। ॐ रेखा देवताभ्यो नमः।** पूजन पंचोपचार से कर वास्तु मण्डल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में नाम मंत्र से चौसठ वास्तु का आवाहन प्रतिष्ठापन क्रम-

ॐ शिखिने नमः। शिखिनम् आवाहयामि, स्थापयामि। ''एवं सर्वत्र''ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ जयन्ताय नमः। ॐ कुलिशायुधाय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ सत्याय नमः। ॐ भृशाय नमः। ॐ आकाशाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ पूष्णे नमः। ॐ वितथाय नमः। ॐ गृहक्षताय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ गन्धर्वाय नमः। ॐ भृंगराजाय नमः। ॐ मृगाय नमः। ॐ पितृभ्यो नमः। ॐ दौवारिकाय नमः। ॐ सुग्रीवाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ असुराय नमः। ॐ शोषाय नमः। ॐ पापाय नमः। ॐ रोगाय नमः। ॐ अहये नमः। ॐ मुख्याय नमः। ॐ भल्लाटाय नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ सर्पाय नमः। ॐ अदित्यै नमः। ॐ दित्यै नमः। ॐ आपाय नमः। ॐ सावित्राय नमः। ॐ जयाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ अर्यम्णे नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ विवस्वते नमः। ॐ विबुधाधिपाय नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ राजयक्ष्मणे नमः। ॐ पृथ्वी धराय नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ आपवत्साय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ चरक्यै नमः। ॐ विदार्यै नमः। ॐ पूतनायै नमः। ॐ पापराक्षस्यै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ अर्यम्णे नमः। ॐ जृम्भकाय नमः। ॐ पिलिपिच्छाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः॥ ॐ वास्तु पुरुषाय नमः॥

प्रतिष्ठापन-ॐ एतं ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुबृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव॥

शिख्यादिवास्तुमण्डल देवताभ्योनमः मंत्र से पूजन करें। वास्तु मंत्र का जप भी ब्राह्मण करे। वास्तु पूजन कर तथा वास्तु जप पूर्ण करके वास्तु मंत्र से दशांश हवन कर बलिदान करके देवताओं का विसर्जन कर देवें।

॥ इतिवास्तु पूजनम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ श्रीनृसिंह पूजन

ध्यान-

कोपादालोल जिह्वं विवृत निजमुखं सोमसूर्याग्निनेत्रम्।
पादादानाभिरक्तप्रभमुपरिसितं भिन्न दैत्येंद्र गात्रम्॥
शंखं चक्रं च पाशांकुश कुलिशगदादारुणानायुद्ध हस्तं।
भीमंतीक्ष्णाग्रदष्ट्रं मणिमय विविधा कल्पमीडेनृसिंहम्॥

भगवान नृसिंह को पुष्प अर्पण कर आवाहन करे-

आवाहन-

ॐ सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमि ꣳ सर्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठदशांगुलम्॥
आवाहनं समर्पयामि॥

आसन-

ॐ पुरुष ऽ एवेद ꣳ सर्वंयद्भूतंयच्चभाव्यम्॥
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
आसनं समर्पयामि॥

पाद्य-

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्यायाँश्च पूरुष। पादोस्य
विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि॥
पाद्यं समर्पयामि॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्घ्य-

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः॥
ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने ऽ अभि।
अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमनी-

ॐ ततोविराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः॥
सजातोऽ अत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः॥
आचमनीयं समर्पयामि॥

स्नानीय जल-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्॥
पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
स्नानीय जलं समर्पयामि॥ पुनः शुद्ध स्नान॥

दूध स्नान-

ॐ पयः पृथिव्यां पय औषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥
दुग्ध स्नानं समर्पयामि॥
पुनः शुद्ध स्नान॥

दधि स्नान-

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ꣳषि तारिषत्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दधि स्नानं समर्पयामि॥ पुनः शुद्ध स्नान।

घृत स्नान-

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसं वसापावानः। पिबतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा॥ दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ घृतस्नानं समर्पयामि। पुनः शुद्ध स्नानं समर्पयामि॥

मधुस्नानं-

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः॥ माध्वीर्नः सन्त्वोषधि॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ मधु स्नानं समर्पयामि॥ पुनः शुद्धोदक स्नान॥

शर्करास्नान-

ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्॥ अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते ते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्॥ शर्करास्नानं समर्पयामि। पुनः शुद्धोदक स्नान॥

पंचामृत स्नान-

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तु पंचधा सो देशे ऽ भवत्सरित्॥ पंचामृत स्नान समर्पयामि। पुनः शुद्धोदक स्नान॥

वस्त्र-

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे॥ छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत। वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

यज्ञोपवीत-

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चो भयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि यज्ञोवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

गन्ध-

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ गन्धं समर्पयामि॥

अक्षत-

ॐ अक्षन्नमिमदन्त ह्यवप्रिया अधूषतअस्तोष-तस्वभानवो विप्रा न विष्टयामती यो जान्विन्द्र ते हरिः॥ अक्षतं समर्पयामि॥

पुष्प-

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्॥ मुखंकिमस्या-सीत् किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ पुष्पं समर्पयामि॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धूप-

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः॥
उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रो अजायत॥
धूपं समर्पयामि॥

दीप-

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत॥
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य-

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकां२ऽ अकल्पयन्॥
नैवेद्यं समर्पयामि नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

फल-

ॐ याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पतिः प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ꣳ हसः।
फलं समर्पयामि॥

दक्षिणा-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेक ऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीद्यामुतेमां कस्मै देवायहविषाविधेम्॥ दक्षिणां समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरती-

ॐ इद ꣳ हविः प्रजंननं मे अस्तुदशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये।। आत्मसनिप्रजासनि-पशुसनिलोकसन्य भयसनि।। अग्निः प्रजांबहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासुधन।। दीपक दिखाकर प्रार्थना करें-

गर्जन्तं गर्जयन्तं निजभुज पटलं स्फोटयन्तं हरन्तम्।
रुप्यन्तं तापयन्तं दिविभुवितिजं क्षेपयन्तं शिरन्तम्।
क्रन्दन्तं रोषयन्तं दिशिदिशिश सततं संरभरत्तं हरन्तम्।
वीक्षन्तं घूर्णयन्तं करनिकरशतैर्दिव्यसिंह नमामि।।

प्रार्थना समर्पण कर देवें।

।। अथ श्री नृसिंह कवचम्।।

विनयोग-ॐ अस्य श्रीलक्ष्मीनृसिंह कवच महामंत्रस्य ब्रह्माऋिषः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनृसिंहोदेवता, ॐ क्षौ बीजम्, ॐ रौं शक्तिः, ॐ ऐं क्लीं कीलकम् मम (यजमानस्यवा) सर्वरोग, शत्रु, चौर, पन्नग, व्याघ्र, वृश्चिक, भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी-शाकिनी, यन्त्र मंत्रादि, सर्व विघ्न निवाराणार्थे श्री नृसिहं कवचमहामंत्र जपे विनयोगः।। एक आचमन जल छोड़ दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। अथ ऋष्यादिन्यासः।।

ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीलक्ष्मी नृसिंह देवताये नमो हृदये। ॐ क्षौं बीजाय नमोनाभ्याम्। ॐ शक्तये नमः कटिदेशे। ॐ ऐं क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। ॐ श्रीनृसिंह कवचमहामंत्र जपे विनयोगाय नमः सर्वाङ्गे॥

।। अथ करन्यासः।।

ॐ क्षौं अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ प्रौं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रौं मध्यमाभयां नमः। ॐ रौं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ज्रौं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

।।अथ हृदयादिन्यास।।

ॐ क्षौ हृदयाय नमः। ॐ प्रौं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रौं शिखायै वषट्। ॐ रौं कवचाय हुम्। ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ज्रौं अस्त्राय फट्।

नृसिंह ध्यान-

ॐ सत्यं ज्ञान सुखस्वरूप ममलं क्षीराब्धि मध्ये स्थित्। योगारूढमति प्रसन्नवदनं भूषा सहस्रोज्वलम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीक्ष्णं चक्र पीनाक शायकवरान् विभ्राणमर्कच्छविं।
छत्रि भूतफणिन्द्रमिन्दुधवलं लक्ष्मी नृसिंह भजे॥

अथ नृसिंह मंत्र

ॐ क्षौं प्रौं ह्रौ रौं ब्रौं ज्रौं नमः स्वाहा।

नृसिंह गायत्री- ॐ वज्र नखाय विद्महे तीक्ष्ण दष्ट्राय धीमहि तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्॥

॥ अथ नृसिंह कवच ॥

ॐ नमोनृसिंहाय सर्वदुष्ट विनाशनाय सर्वजन मोहनाय सर्वराज्यवश्यं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमो नृसिंहाय नृसिंहराजाय नरकेशाय नमो नमस्ते। ॐ नमः कालाय काल द्रष्ट्राय करालवदानाय च। ॐ उग्राय उग्र वीराय उग्र विकटाय उग्र वज्राय वज्रदेहिने रुद्राय रुद्रघोराय भद्राय भद्रकारिणे। ॐ ज्रीं ह्रीं नृसिंहाय नमः स्वाहा। ॐ नमो नृसिंहाय कपिलाय कपिलजटाय अमोघवाचाय सत्यं सत्यं व्रतं महोग्र प्रचण्ड रूपाय। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ॐ ह्रुं ह्रु ह्रु ॐ क्षां क्षीं क्षौं फट् स्वाहा। ॐ नमो नृसिंहाय कपिल जटाय ममः (यजमानस्यवा) सर्वरोगान् बन्ध बन्ध, सर्व ग्रहान् बन्ध बन्ध,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वदोषादीनां बन्धबन्ध, सर्व वृश्चिकादीनां विषं बन्ध बन्ध, सर्वभूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी-शाकिनी, यंत्र मंत्रादीन् बन्ध बन्ध, कीलय कीलय, चूर्णय चूर्णय, मर्दय मर्दय, ऐं ऐं एहि एहि, मम येये विरोधिनस्तान् सर्वान् सर्वतो हन हन, दह दह, मथ मथ, पच पच, चक्रेण, गदा, बज्रेण भष्मी कुरु कुरु स्वाहा॥ ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ह्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रौं नृसिंहाय नमः स्वाहा। ॐ आं ह्रीं क्षौ क्रौं हुं फट्, ॐ नमो भगवते सुदर्शन नरसिंहाय मम (यजमानस्य वा) विजयरूपे कार्ये ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल असाध्यमेनकार्यं शीघ्रं साधय साधय एनं सर्वप्रतिबन्धकेभ्यः सर्वतो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा॥ ॐ क्ष्रौं ॐ नमो भगवते नरसिंहाय एतद्दोषं प्रचण्ड चक्रेण जहि जहि स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते महानृसिंहाय करालवदन दंष्ट्राय मम विघ्नान् पच पच स्वाहा। ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकश्यप वक्षस्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूतप्रेत पिशाच डाकिनी-शाकिनी कालनोन्मूलनाय मम (यजमानस्य वा) शरीरं स्थम्भोद्भव समस्त दोषान् हन हन, शर शर, चल चल, कम्पय कम्पय, मथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मथ हुं फट् ठः ठः।।

ॐ नमो भगवते भो भो सुदर्शन नारसिंह ॐ आं ह्रीं क्रौं क्षौं हुं फट् ॐ सहस्त्रार ममाङ्ग वर्तमान ममुक रोगं दारय दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु ह्रां ह्रीं हुं ह्रैं ह्रौं हुं हुं फट् मम शत्रुं हन हन द्विष द्विष तदपचयं कुरु कुरु मम सर्वार्थ साधय साधय। ॐ नमो भगवते नारसिंहाय ॐ क्षौं क्रौं आं ह्रीं क्लीं श्रीं रां स्फ्रैं ब्लुं यं रं लं वं षं स्त्रां हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमः भगवते नृसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे। अविराभिर्भव वज्रनख वज्रदंष्ट्र कर्माशयान्। रंधय रंधय तमो ग्रस ग्रस ॐ स्वाहा। अभयमभयात्मनि भूयिष्ठाः ॐ क्षौम्। (श्रीमद् भागवत् ५।१९।८८) ॐ नमो भगवते तुभ्य पुरुषाय महात्मने हरिंऽद्भुत सिंहाय ब्रह्मणे परमात्मने। ॐ उग्रं उग्रं महाविष्णुं सकलाधारं सर्वतोमुखम्। नृसिंह भीषणं भद्रं मृत्यु मृत्युं नमाम्यहम्।।

इति श्री नृसिंह पुराणे ब्रह्म सावित्री सम्वादे नृसिंह कवचं सम्पूर्णम।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपरोक्त कवच श्रावण मास शुक्ल पक्ष अष्टमी को पाठ करने से प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति होती है। सात बार पाठ कर रोगी को अभिमंत्रित जल ४० दिन देने से असाध्य रोग ठीक हो जाता है। भूत प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, ग्रहवाधा, दुस्वप्न दूर होते हैं। अन्तिम मंत्र भूर्जपत्र पर लिखकर रवि या मंगल के दिन कण्ठ में धारण करने से अनेक उपद्रव शान्त होते हैं इसके पाठ मात्र से अन्न-धन, पुत्र-पौत्र प्राप्ति, शत्रुपराजय तथा अनेक संकट दूर होते हैं।

॥ गायत्री पुरश्चरण प्रयोग ॥

चन्द्र अनूकूल के समय शुक्ल पक्ष में[१] शुभ मास में[२] विल्ममूल, तीर्थ में, जलाशय समीप, कुलीन, सत्यवादी, वेद ज्ञाता, सन्ध्या स्नान नित्य करने वाले, क्रोध न करने वाले, ब्राह्मणों को पुरश्चरण (जप) हेतु आमंत्रित कर गायत्री पुरश्चरण प्रारंभ करे। गुरु

गायत्री पुरश्चरण तिथी-

१. पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा।
त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ता सर्व कर्मसु॥

२. गायत्री पुरश्चरण मास-वैसाखे श्रावणे वापि आश्विने कीर्तिके तथा।
फाल्गुनेमार्गशीर्षे वा मंत्रीकुर्यात्पुरस्क्रियाम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुक्र अस्त में, रिक्ता, भौम, व्यतिपात कृष्ण पक्ष में जप प्रारंभ न करें।

पुरश्चरण के लक्षण-

पूजा त्रैकालिकी नित्यं जपस्तर्पण मेव च।
होमो ब्राह्मण भुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते॥

संकल्प हेतु जल हाथ में लेकर-

अद्येा० देशकालौ संकीर्त्य मम सकलपापक्षय द्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं चतुर्विंशतिलक्ष (अथवा जितना जप करना हो) **जपात्मक गायत्री पुरश्चरण स्वयं विप्रद्वारा वाऽहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन गणपति पूजनं, कलशाराधनं, पुण्याहवाचनं नान्दिश्राद्धं मातृका पूजनं, वसुधारा पूजनं, सूर्यादिनवग्रह देवता पूजनं आचार्यदिजपकर्तृ वरणं च करष्ये।**

यजमान आचार्य ऋत्विक् वरण करे। यजमान को सपत्नीक आचार्य रक्षा सूत्र बांध कर गणपत्यादि देवताओं का पूजन कर देवे। पुनः जल लेकर संकल्प-

देशकालौ संकीर्त्य मया प्रारब्धस्य सग्रहमख गायत्री पुरश्चरण कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं अस्या भगवत्याः श्री गायत्री देव्याः यन्त्रस्य प्रतिष्ठां करिष्ये।

फिर पंचगव्य से गायत्री यंत्र को धो देवें एवं अग्न्युत्तारण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा कर पुनः शुद्ध जल से यंत्र को धोकर आसन के ऊपर रख यंत्र गायत्री का उच्चारण विप्र एवं आचार्य करे-

ॐ यंत्र राजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्। यंत्र गायत्री द्वारा यंत्र का आवाहन कर पुनः यंत्र स्थित देवताओं का आवाहन करे-**ॐ आदित्य स्वरूपायै श्री गायत्री देव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१॥ ॐ भगवत्यै श्री गायत्री देव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥२॥ ॐ भगवत्यै श्री सावित्री देव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३॥ ॐ भगवत्यै श्री सरस्वत्यै देव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥५॥ ॐ विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥६॥ ॐ रुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥७॥ ॐ श्री गायत्री देव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८॥ ॐ श्री सावित्री देव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥९॥ ॐ श्री सरस्वत्यै देव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१०॥ ॐ श्री ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥११॥ ॐ विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१२॥ ॐ**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१३॥ ॐ आदित्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१४॥ ॐ भाष्कराय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१५॥ ॐ भानवे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१६॥ ॐ रवये नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१७॥ ॐ उषायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१८॥ ॐ प्रज्ञायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥१९॥ ॐ प्रभायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥२०॥ ॐ सन्ध्यायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥२१॥ तत्सवितुर्ब्रह्मात्मने हृदयाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥२२॥ ॐ वरेणियं विष्णवात्मने शिरसे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥२३॥ ॐ भर्गोदेवस्य शिखायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥२४॥ ॐ धीमहि कवचाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥२५॥ ॐ धियो यो नः नेत्रत्रयाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥२६॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि(पूर्व)॥२७॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि(पश्चिम)॥२८॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि(उत्तर)॥२९॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि(दक्षिण)॥३०॥ ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पह्लादिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३१॥ ॐ प्रभायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३२॥ ॐ नित्यायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३३॥ ॐ विश्वम्भरायै नमः नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३४॥ ॐ विलासिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३५॥ ॐ प्रभावत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३६॥ ॐ जयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३७॥ ॐ शान्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३८॥ ॐ कान्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥३९॥ ॐ दुर्गायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४०॥ ॐ सरस्वत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४१॥ ॐ विश्वरूपायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४२॥ ॐ विशालायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४३॥ ॐ ईशायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४४॥ ॐ व्यापिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४५॥ ॐ विमलायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४६॥ ॐ तमोपहारिण्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४७॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४८॥ ॐ विश्वयोन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥४९॥ ॐ जयावहायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥५०॥ ॐ पद्मालयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥५१॥ ॐ परायै नमः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवाहयामि स्थापयामि॥५२॥ ॐ शोभायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥५३॥ ॐ पद्मरूपायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥५४॥ ॐ ब्राह्मये नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥५५॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥५६॥ ॐ कौमार्यै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥५७॥ ॐ वैष्णव्यै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥५८॥ ॐ वाराह्यै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥५९॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६०॥ ॐ चामुण्डायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६१॥ ॐ अरुणायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६२॥ ॐ सूर्याय नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६३॥ ॐ सोमाय नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६४॥ ॐ भौमाय नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६५॥ ॐ बुधाय नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६६॥ ॐ गुरवे नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६७॥ ॐ शुक्राय नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥६८॥ ॐ शनैश्चराय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥६९॥ ॐ राहवे नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥७०॥ ॐ केतवे नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥७१॥ ॐ इन्द्राय नमः
आवाहयामि स्थापयामि॥७२॥ ॐ अग्नये नमः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवाहयामि स्थापयामि॥७३॥ ॐ यमाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥७४॥ ॐ निर्ऋतये नमः आवाहयामि स्थापयामि॥७५॥ ॐ वरुणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥७६॥ ॐ श्री वायवे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥७७॥ ॐ श्री कुबेराय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥७८॥ ॐ श्री ईशानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥७९॥ ॐ श्री ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८०॥ ॐ श्री अनन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८१॥ श्री वज्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८२॥ ॐ श्री शक्तये नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८३॥ ॐ श्री दण्डाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८४॥ ॐ श्री खड्गाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८५॥ ॐ श्री पाशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८६॥ ॐ श्री अंकुशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८७॥ ॐ श्री गदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८८॥ ॐ श्री त्रिशूलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥८९॥ ॐ श्री अब्जाय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥९०॥ ॐ श्री चक्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि॥९१॥ ॐ यंत्र देवताओं का आवाहन कर हाथ में अक्षत लेकर प्रतिष्ठा कर लेवें- **ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तनोत्वरिष्टं यज्ञ ॐ समिमं दधातु। विश्वे देवास ऽ इह मादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ॥

॥गायत्री देवी यंत्र पूजन॥

आवाहन-ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। सभूमि ॐ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

आसन-ॐ पुरुष ऽ एवेद ॐ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति॥

पाद प्रक्षालन-ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

अर्घ्य[१]-त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽ अभि॥

आचमनीय जल-ततो विराडजायत विराजो ऽ अधिपूरुषः। स जातो ऽ अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः॥

मधुपर्क-ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम ॐ रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण

अर्घ्य- आपः क्षीरं कुशाग्राणि दधि चन्दनमक्षताः।
दूर्वाः सिद्धार्थकाश्चेति ह्यष्टांगोह्यार्घ उच्यते॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योनादोसानि॥ (मधुपर्कान्ते आचमनीयं)

पयस्नान-ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ औषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ पय स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

दधिस्नान-ॐ दधिक्राब्णो ऽ अकारिषं जिष्णो रश्वस्यव्वाजिनः। सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रण ऽ आयु ꣳ षितारिषत्॥ गायत्री देव्यै नमः दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयमि॥

घृत स्नान- ॐ घृतेनाञ्जन्त्सं पथो देवयानान् प्रजानन्वाज्यप्येतु देवान्॥ अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्ता ꣳ स्वधामस्मै यजमानाय धेहि। पुनः शुद्धोदक स्नानं॥

मधु स्नान- ॐ स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्व दिवः सꣳस्पृशस्पाहि। मधु मधु मधु॥ पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

शर्करा स्नान- ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्ययोरसस्तम्बो गृह्णाम्युतममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्त्वा जुष्ट्टं गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्ट्टतमम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शर्करास्नानान्ते पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

गन्धोदकस्नान-ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातुविश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधि रस्यग्निरिडऽ ईडितः॥

श्री गायत्री देव्यै नमः गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

उद्वर्तस्नान- ॐ अ ꣳ शुनाते ऽ अ ꣳ शुः पृच्यताम्परुषापरुः। गन्धस्ते सोममवतुमदाय रसो ऽ अच्युतः॥ उद्वर्तस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान-ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि-यन्ति सस्त्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधासो देशेऽभवत्सरित्॥

शुद्धोदक स्नान-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽ रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥ गा० दे० न० शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्र-ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ व० स०।

चन्दन-ॐ त्वां गन्धर्वा ऽ अखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान् न्यक्ष्माद-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुच्यत॥ गायत्री देव्यै नमः चन्दनं समर्पयामि॥

सिन्दूर-ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा व्वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ꣳ सं परिपातु विश्वतः॥ सिन्दूरं समर्पयामि॥

अक्षत-अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठया मती योजान्विद्र ते हरी॥ गायत्रीदेव्यै नमः अक्षतं समर्पयामि॥

पुष्प-ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरूपादाऽउच्येते॥ पुष्पं समर्पयामि॥

पुष्पमाला-ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः॥ पुष्पमालां समर्पयामि।

धूप-ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं व्वयं धूर्व्वामः॥ देवानामसि व्वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥ धूपं आघ्रापयामि॥

दीप-ॐ अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान्। सहस्त्रदा ऽ असि सहस्त्राय त्वा॥ दीपं दर्शयामि॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नैवेद्य-ॐ नाभ्या ऽ आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ ऽ अकल्पयन्॥ गायत्री देव्यै नमः नैवद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि॥

ऋतुफल-ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽ-अपुष्पायाश्च पुष्पिणिः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥ गायत्रीदेव्यै नमः ऋतुफलं समर्पयामि॥

दक्षिणा-दक्षिणामारोह त्रिष्टुप् त्वावतु बृहत्साम पञ्चदश स्तामा ग्रीष्म ऽऋतुः क्षत्रं द्रविणम्॥ दक्षिणां समर्पयामि।

गायत्री देवी का पूजन कर कर्पूर आरती कर लेवे-

ॐ इद ꣳ हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्व्वगण ꣳ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतो ऽ अस्मासु धत्त॥ आरात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ꣳ सि बृहति व्वितिष्ठ्ठस ऽ आ त्त्वेषं वर्त्ततेतमः॥

॥ इति गायत्री पूजनम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। गायत्री शाप विमोचन।।

प्रथम विनियोग-ॐ अस्य श्री ब्रह्मशाप विमोचन मन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता प्रजापतिर्ऋषिः। भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता। गायत्रीच्छन्दः। ब्रह्मशाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।। एक आचमन जल छोड़ दें।

ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः। तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः।। ॐ देवि गायत्री त्वं ब्रह्मशापद् विमुक्ता भव।।

द्वितीय विनियोग-ॐ अस्य श्री वसिष्ठ शाप विमोचन मंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता श्रीवसिष्ठ ऋषिः। शक्तिर्देवता गायत्रीच्छन्दः। श्री वसिष्ठशाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।। पुनः एक आचमन जल छोड़ दें।

सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः। आत्मज्यो- तिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम्।। ॐ देवि गायत्री त्वं वसिष्ठ शापद् विमुक्ता भव।।

तृतीय विनियोग-ॐ अस्य श्री विश्वा- मित्र शाप विमोचनमंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता

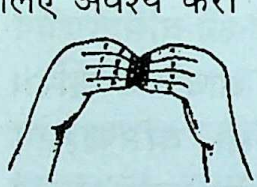
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्वामित्रऋर्षिः। विश्वामित्रानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता। वाग्देहा गायत्रीच्छन्दः । विश्वामित्रशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः। पुनः एक आचमन जल छोड़ दें।

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिम्। तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये यन्मुखान्निः सृतोऽखिलवेदगर्भः। ॐ देवि गायत्री त्वं विश्वामित्र शापद् विमुक्ता भव॥

जप करने से पहले २४ मुद्रा जप की सिद्धि के लिए अवश्य करें।



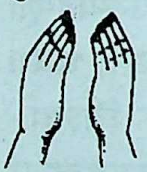
(१) सुमुखम्

(१) सुमुखम्-दोनों हाथों की अँगुलियों को मोड़कर परस्पर मिलायें।



(२) सम्पुटम्

(२) सम्पुटम्-दोनों हाथों को फुलाकर मिलायें।

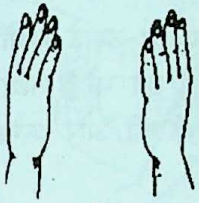


(३) विततम्

(३) विततम्-दोनों हाथों की हथेलियाँ परस्पर सामने करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



(४) विस्तृतम्

(४) विस्तृतम्-दोनों हाथों की अंगुलियाँ खोलकर दोनों को कुछ अधिक अलग करे।



(५) द्विमुखम्

(५) द्विमुखम्-दोनों हाथों की कनिष्ठिका से कनिष्ठिका तथा अनामिका से अनामिका मिलाये।



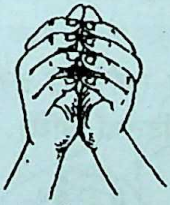
(६) त्रिमुखम्

(६) त्रिमुखम्-पुनः दोनों मध्यमाओं को मिलाये।



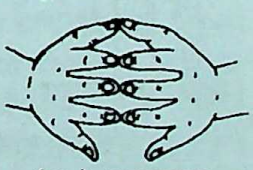
(७) चतुर्मुखम्

(७) चतुर्मुखम्-दोनों तर्जनियाँ और मिलायें।



(८) पंचमुखम्

८) पंचमुखम्-दोनों अँगूठे और मिलाये।

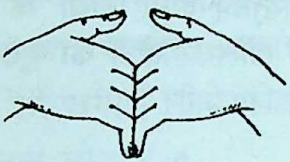


(९) षण्मुखम्

(९) षण्मुखम्-हाथ वैसे ही रखते हुए दोनों कनिठिष्काओं को खोले।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



(१०) अधोमुखम्

(१०) अधोमुखम्-उलटे हाथों की अंगुलियों को मोड़े तथा मिलाकर नीचे की ओर करें।



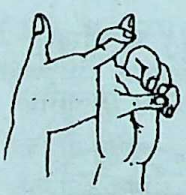
(११) व्यापकांजलिम्

(११) व्यापकांजलिम्-वैसे ही मिले हुए हाथों को शरीर की ओर घुमाकर सीधा करें।



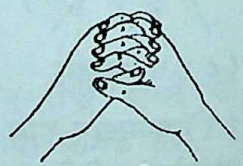
(१२) शकटम्

(१२) शकटम्-दोनों हाथों को उलटाकर अंगूठे से अंगूठा मिलाकर तर्जनियों को सीधा रखते हुए मुट्ठी बांधे।



(१३) यमपाशम्

(१३) यमपाशम्-तर्जनी से तर्जनी बांधकर दोनों मुट्ठियाँ बांधे।

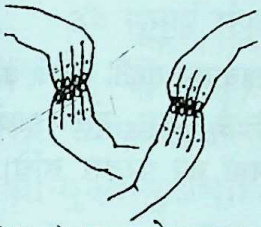


(१४) ग्रथितम्

(१४) ग्रथितम्-दोनों हाथों की अँगुलियों को परस्पर गूँथे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

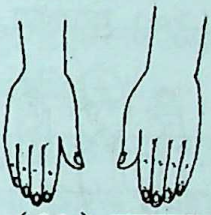
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



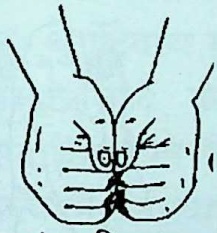
(१५) उन्मुखोन्मुखम्

(१५) उन्मुखोन्मुखम्-हाथों की पाँचों अँगुलियों को मिलाकर प्रथम बायें पर दाहिना, फिर दाहिने पर बायाँ हाथ रखे।

(१६) प्रलम्बम्- अँगुलियों को कुछ मोड़ दोनों हाथों को उलटाकर नीचे की ओर करे।



(१६) प्रलम्बम्



(१७) मुष्टिकम्

(१७) मुष्टिकम्-दोनों अँगूठे ऊपर रखते हुए दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर मिलाये।

(१८) मत्स्यः-दाहिने हाथ की पीठ पर बायाँ हाथ उलटा रखकर दोनों अँगूठे हिलाये।



(१८) मत्स्यः



(१९) कूर्मः

(१९) कूर्मः-सीधे बायें हाथ की मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिका को मोड़कर उलटे दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका को उन तीनों अँगुलियों के नीचे रखकर तर्जनी पर दाहिनी कनिष्ठिका और बायें अँगूठे पर दाहिनी तर्जनी रखे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



(२०) वराहकम्

(२०) वराहकम्-दाहिनी तर्जनी को बायें अँगूठे से मिला, दोनों हाथों की अँगुलियों को परस्पर बाँधे।



(२१) सिंहाक्रान्तम्

(२१) सिंहाक्रान्तम्- दोनों हाथों को कानों के समीप करे।



(२२) महाक्रान्तम्

(२२) महाक्रान्तम्-दोनों हाथों की अँगुलियों को कानों के समीप करे।



(२३) मुद्गरम्

(२३) मुद्गरम्-मुट्ठी बाँध, दाहिनी कुहनी बायीं हथेली पर रखे।



(२४) पल्लवम्

(२४) पल्लवम्-दाहिने हाथ की अँगुलियों को मुख के सम्मुख हिलाये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुः पञ्च मुख तथा॥ षण्मुखाधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्॥ प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मोवराहकम्। सिहक्रान्तं महाक्रांतं मुद्गरं पल्लवं तथा॥ (एतामुद्रा चतुर्विंशाद् जपादौ च प्रदर्शयेत्)

हृदयादि न्यास-ॐ तत्सवितुर्बह्यात्मने हृदयाय नमः। ॐ वरेणियं विष्णवात्मने नमः शिरसे स्वाहा। ॐ भर्गोदेवस्य रुद्रात्मने शिखायै वषट्। ॐ धीमहि ईश्वरात्मने कवचाय हुम्। ॐ धियोयोनः सदाशिवात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ प्रचोदयात् सत्यात्मने अस्त्राय फट्॥

करन्यास-ॐ तत्सवितुर्बह्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वरेणियं विष्णवात्मने तर्जनीभ्यां नमः। ॐ भर्गोदेवस्य रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां नमः। ॐ धीमहि ईश्वरात्मने ऽनामिकाभ्यां नमः। ॐ धियो यो नः सदाशिवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ प्रचोदयात् सत्यात्मने करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः॥

माता गायत्री का ध्यान-

ॐ मुक्ता विद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्॥ गायत्रीं वरदाभयांकुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं। शंखंचक्रमथार विन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे। जप के लिए माला को मूल मंत्र से प्रक्षालित कर प्रार्थना-ॐ मांमाले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वविन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव। ॐ अविघ्नं कुरुमाले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले[1] च सिद्ध्यर्थ प्रसीद मम सिद्धये॥

जपार्थ मंत्र-

ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं[2] भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

गायत्री मंत्र का अर्थ-**भूः**=सत्, **भुवः**=चित्, **स्वः**=आनन्दस्वरूप, **सवितुः** देवस्य=सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्मा के, **तत् वरेण्यं भर्गः**=उस प्रसिद्ध वरणीय तेज का (हम) ध्यान करते हैं, **यः**=जो परमात्मा, **नः**=हमारी, **धियः**=बुद्धि को (सत् की ओर), **प्रचोदयात्**=प्रेरित करे।

---

१. यक्षरक्षः पिशाचाश्च सिद्धविद्याधरा गणाः।
यस्मात्प्रभावं गृह्णान्ति तस्माद् गुह्यं तु कारयेत्॥

२. पाठकाले वरेण्यं स्याज्जपकाले वरेणियम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हृदय के पास माला रखकर जप प्रारंभ करे। पुरश्चरण में जप संख्या चौबीस लाख[१] मंत्र जप कर अथवा जप संख्या (जितना करना हो) पूर्ण करे, दैनिक जप पूर्ण होने के बाद प्रार्थना-**ॐ त्वं माले सर्व देवानां प्रीतिदाशुभदाभव।**

शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

अष्ट मुद्रा-सुरभिर्ज्ञानवैराग्यं योनिः शंखोऽथ पंकजम्। लिंग निर्वाणकं चैव जपान्तेष्टौ प्रदर्शयेत्॥ (पुनः जप के बाद अष्ट मुद्रा जप सिद्धि के लिए करें।)



(१) सुरभी

(१) सुरभि-दोनों हाथों की अँगुलियाँ गूंथकर बायें हाथ की तर्जनी से दाहिने हाथ की मध्यमा, मध्यमा से तर्जनी, अनामिका से कनिष्ठिका और कनिष्ठिका से अनामिका मिलाये।

(२) ज्ञानम्-दाहिने हाथ की तर्जनी से अँगूठा मिलाकर हृदय में तथा इसी प्रकार बायाँ हाथ बायें घुटने पर सीधा रखे।



(२) ज्ञानम्



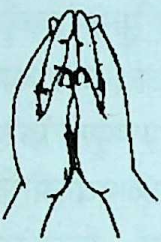
(३) वैराग्यम्

(३) वैराग्यम्-दोनों तर्जनियों से अँगूठे मिलाकर घुटनों पर सीधे रखे।

२. पाठकाले वरेण्यं स्याज्जपकाले वरेणियम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



(४) योनिः

(४) **योनि**-दोनों मध्यमाओं के नीचे से बायीं तर्जनी के ऊपर दाहिनी अनामिका और दाहिनी तर्जनी पर बायीं अनामिका रख दोनों तर्जनियों से बाँध, दोनों मध्यमाओं को ऊपर रखे।



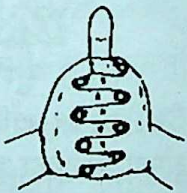
(५) शंखः

(५) **शंख**-बायें अंगूठे को दाहिनी मुट्ठी में बांध, दाहिने अंगूठे से बायीं अंगुलियों को मिलाये।



(६) पंकजम्

(६) **पंकजम्**-दोनों हाथों के अंगूठे तथा अंगुलियों को मिलाकर ऊपर की ओर करे।



(७) लिंगम्

(७) **लिंगम्**-दाहिने अंगूठे को सीधा रखते हुए दोनों हाथों की अंगुलियों को गूंथकर बायां अंगूठा दाहिने अंगूठे की जड़ के ऊपर रखे।



(८) निर्वाणम्

(८) **निर्वाणकम्**-उलटे बायें हाथ पर दाहिना हाथ सीधा रख, अंगुलियों को परस्पर गूंथ, दोनों हाथ अपनी ओर से घुमा, दोनों तर्जनियों को सीधा कान के समीप रखे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्ट मुद्रा के बाद हाथ में जल लेकर-**अनेन यथाशक्ति संकल्पानुसारं कृतेन जपकर्मणा भगवती श्री गायत्री देवी प्रीयतां न मम:** जल छोड़ दें। जप के बाद जप स्थान की मृत्तिका का तिलक कर दें।[१]

जल छोड़कर प्रार्थना-**ॐ गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्। महेश्वरी।।** जप के बाद दशांश हवन बलिदान तर्पण मार्जन कर गायत्री देवी का विर्जन करें।।

इति गायत्री पुरश्चरण प्रयोग

चौबीस गायत्री

१-ब्रह्म गायत्री-

(ॐ भूर्भुवः स्वः) ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्।।१।।

२-शिव गायत्री-

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे। महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।२।।

---

१. यस्मिन् स्थाने जपं कृत्वा शक्रो हरतिजज्जपम्।
तन्मृदा लक्ष्य कुर्वीति ललाटे तिलकाकृति।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३-विष्णु गायत्री-

ॐ नारायणाय विद्महे। वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥३॥

४-रामगायत्री-

ॐ दाशरथाय विद्महे। सीतावराय धीमहि।
तन्नो राम प्रचोदयात्॥४॥

५-लक्ष्मण गायत्री-

ॐ दाशरथाय विद्महे।
उर्मिलेशाय धीमहि तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्॥५॥

६-कृष्णगायत्री-

ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे।
वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्॥६॥

७-नृसिंह गायत्री-

ॐ नृसिंहाय विद्महे। वज्रदन्ताय धीमहि।
तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्॥७॥

८-जल गायत्री-

ॐ जल बिंबाय विद्महे। नीलपुरुषाय धीमहि।
तन्नो ऽम्बु प्रचोदयात्॥८॥

९-सूर्य गायत्री-

ॐ भास्कराय विद्महे। दिवाकराय धीमहि।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१०-अग्नि गायत्री-

ॐ महाज्वालाय विद्महे। अग्निमग्नाय धीमहि।
तन्नः अग्निः प्रचोदयात्॥१०॥

११-पृथ्वी गायत्री-

ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे। ध रामूर्तये धीमहि।
तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात्॥११॥

१२-नारायण गायत्री-

ॐ नारायणाय विद्महे। शेष शायिने धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥१२॥

१३-हनुमद्गायत्री-

ॐ अंजनीजाय विद्महे। वायुपुत्राय धीमहि।
तन्नो वीरः प्रचोदयात्॥१३॥

१४-गरुड़ गायत्री-

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे। स्वर्णपक्षाय धीमहि।
तन्नो गरुड़ प्रचोदयात्॥१४॥

१५-देवी गायत्री-

ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे। महाशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥१५॥

१६-गोपाल गायत्री-

ॐ गोपीप्रियाय विद्महे। वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो गोपः प्रचोदयात्॥१६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१७-परशुराम गायत्री-

ॐ जमदग्नाय विद्महे।
महावीराय धीमहि। तन्नो विप्रः प्रचोदयात्॥१७॥

१८-तुलसी गायत्री-

ॐ तुलसी पत्राय विद्महे। विष्णु प्रियाय धीमहि।
तन्नोवृन्दा प्रचोदयात्॥१८॥

१९-गुरु गायत्री-

ॐ परब्रह्मणे विद्महे। गुरु देवाय धीमहि।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥१९॥

२०-आकाश गायत्री-

ॐ आकाशाय विद्महे। नभो देवाय धीमहि।
तन्नो खं हि प्रचोदयात्॥२०॥

२१-चन्द्र गायत्री-

ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे।
अमृततत्वाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात्॥२१॥

२२-हंस गायत्री-

ॐ परमहंसाय विद्महे। महत्तत्वाय धीमहि।
तन्नो हंसः प्रचोदयात्॥२२॥

२३-लक्ष्मी गायत्री-

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे। विष्णुप्रियायै धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥२३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२४-गंगा गायत्री-

ॐ भागीरथ्यै च विद्महे। विष्णुपद्यै च धीमहि। तन्नो गंगा प्रचोदयात्॥२४॥

॥ शताक्षर गायत्री मंत्र॥

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्यधीमहि धियो योनः प्रचोदयात्॥ ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहाति वेदः। सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेन सिन्धु दुरित्याग्निः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्। उर्व्वारुक मिवबन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥

॥ पितृ तर्पण प्रयोग ॥

देवर्षि मनुष्य पितृतर्पण प्रयोग[१]

आचमन लेकर बायें हाथ में जल रखकर कुशपवित्र धारण कर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुष्ठ से अभिमंत्रित करे-**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षः सबाह्याभ्यन्तर शुचिः॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥**

१. देवकार्य द्विजातीनां पितृकार्यं विशिष्यते।
दैव ही पितृकार्यस्य पूर्वमाप्यायन श्रुतम्॥ (मनु० ३/२०३)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जल सिर में छिड़क कर हाथ में जल कुश तिल लेकर संकल्प-**ॐ अद्येत्यादि पूर्वोच्चारित एवं गुण विशेषेण विशिष्ठायां शुभ पुण्य तिथौ ऽमुक गोत्रोऽमुकशर्माहं ममामुक गोत्रस्य श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।** पूर्व मुख हो हाथ जोड़कर तीन बार पितृ गायत्री का स्मरण-**ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥**

अक्षत से आवाहन-**ब्रह्मादयः सुरा सर्वेऋषयः सौनकादयः। आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदर वर्तिनः॥**

इसके बाद ताँबे के पात्र में श्वेत चन्दन जौ तुलसी के पत्ते सफेद फूल सहित तीन कुशाओं को रख देवें।

देव तर्पण-पूर्व दिशा को मुख करके अक्षत जल से तीन कुशा[१] सहित जनेऊ सव्य रख कर दक्षिण घुटना जमीन पर लगाकर एक एक अंजली जल देव-तीर्थ (दाहिने हाथ की अंगुलियों से किसी पात्र या नदी में डाल दे। **ॐ**

१. जपे होमे तथा दाने स्वाधाये पितृतर्पणे।
अशून्यं तु करं कुर्यात्सुवर्ण रजतैः कुशैः॥ (मार्कण्डेय)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ गणपति स्तृप्यन्ताम्। ॐ ब्रह्मास्तृप्यन्ताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यन्ताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत् सरः सावयव स्तृप्यन्ताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसितृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूत ग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्॥

ऋषि तर्पण- पहले जैसे ही निम्नांकित मंत्रों से ऋषियों को भी एक एक अञ्जलि जल दें[१]-

१. एकैकमंजलि देवा दौ द्वौ तु सनकादयः।
अर्हन्तिपितरस्त्रींस्त्रींस्त्रिय एकैकमंजलिम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ मरीचिस्तृप्यन्ताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यन्ताम्। ॐ अंगिरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुलहस्तृप्यन्ताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यन्ताम्। ॐ वशिष्ठस्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यन्ताम्। ॐ भृगुस्तृप्यन्ताम्। ॐ नारदस्तृप्यन्ताम्॥

दिव्य मनुष्य तर्पण–उत्तर मुंह कर जनेऊ मालाकार कर दो कुश, जल, अक्षत ले घुटने मोड़ सीधा काय तीर्थ से (कनिष्ठिका के मूल भाग से) दो दो अञ्जलियां दें- **ॐ सनकस्तृप्यताम्। ॐ सनन्दनस्तृप्यन्ताम्। ॐ सनातनस्तृप्यन्ताम्। ॐ कपिल स्तृप्यन्ताम्। ॐ आसुरिस्तृप्यन्ताम्। ॐ वोढुस्तृप्यन्ताम्। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यन्ताम्॥**

दिव्यपितृ तर्पण– मुंह दक्षिण दिशा, अपसव्य, बायां घुटना जमीन पर लगाकर तिल[१] कुश हाथ में लेकर पितृतीर्थ (अंगूठे और तर्जनी के मध्य) से तीन तीन अंजलियां दें–

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तस्मैस्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा

१. सप्तम्यां रविवारे च ग्रहे जन्मदिने तथा।
भृत्य पुत्रकलत्रार्थी न कुर्यात्तिल तर्पणम्॥ (मरीचि)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमः। ॐ सोमस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः। ॐ यमस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधानमः। ॐ अर्यमा पितर तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः। ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्य स्वधा नमः। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्य स्वधा नमः। ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्य स्वधा नमः॥

यम तर्पण- उपरोक्त प्रकार से ही निम्नलिखित चौदह नामों से तीन तीन अंजलियां दें-

ॐ यमाय नमः (३) ॐ धर्मराजाय नमः (३)। ॐ मृत्यवे नमः(३)। ॐ अन्तकाय नमः (३)। ॐ वैवस्वताय नमः (३)। ॐ कालाय नमः (३)। ॐ सर्व भूतक्षयाय नमः(३)। ॐ औदुम्बराय नमः (३)। ॐ दध्नाय नमः (३)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नीलाय नमः (३)। ॐ परमेष्ठिने नमः (३)। ॐ वृकोदराय नमः (३)। ॐ चित्राय नमः (३)। ॐ चित्रगुप्ताय नमः (३)॥

मनुष्य पितृ तर्पण- हाथ में पुष्प लेकर पितरों का आवाहन कर तिल के साथ तीन-तीन अंजलियां दें-

आवाहन-ॐ उशन्तस्त्वा निधी मह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत ऽ आ वह पितृन्हविषे ऽअत्तवे॥ ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वाताः पथिभिर्देव यानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥ पुष्प चढ़ाकर अंजलियां दें-

अमुकगोत्रः अस्मत्पिताः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्य- तामिदं तिलोकदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः तस्मैस्वधा नमः॥ अमुक गोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मैस्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः॥ अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मैस्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी गायत्रीरूपा तृप्यतामिदं तिलोकदं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमः, तस्यै स्वधा नमः॥ अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी सावित्रीरूपा तृप्यतामिदं तिलोकदं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यैस्वधा नमः॥ अमुक गोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकीदेवी सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं तिलोकदं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः॥

पितृतीर्थ से निम्न मंत्रों से पुनः जल दें-

ॐ उदीरतामवर ऽ उत्परास ऽ उन्नमध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय ऽ ईयुरवृका ऽ ऋतज्ञास्ते नो ऽ वन्तु पितरो हवेषु॥१॥

ॐ अंगिरसो नः पितरो नवग्वा ऽथर्वाणोभृगवः सोम्यासः। तेषां वय ꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सोमनसे स्याम॥२॥

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभि र्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु ते ऽवन्त्वस्मान्॥३॥

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयन् मे पितॄन्॥४॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृप्यन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥५॥

ॐ ये चेहपितरो येच नेह याँश्च विद्मयाँ २ऽ उ च न प्रविद्म त्वं वेत्थ यतिते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ ꣳ सुकृतं जुषस्व॥६॥

ॐ मधुवाता ऽ ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥७॥

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥८॥

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ऽ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तुनः॥९॥

ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

पुनः प्रार्थना करें-

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो द्वेष्मैतद्वः पितरो वासःऽआधत्त॥

द्वितीय गोत्र तर्पण-ननिहाल के नाना आदिका तर्पण पहले की भांति तिल से तीन-तीन अंजलि पितृतीर्थ से दे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमुकगोत्रः असमन्मातामहः अमुकः वसुरूपस्तृप्यता- मिदं तिलोदकं तस्मै स्वधानमः, तस्मै स्वधानमः तस्मैस्वधानमः॥

अमुक गोत्रः अस्मद्प्रमातामहः अमुकः रुद्ररूपस्तृप्यतामिदंतिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः॥

अमुक गोत्रः अस्मद् वृद्धप्रमातामहः अमुकः आदित्यरूपस्तृप्यतामिदंतिलोदकं तस्मैस्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः॥

अमुकगोत्राः अस्मन्मातामही अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधानमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः॥

अमुकगोत्राः अस्मत्प्रमातामही अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः॥

अमुकगोत्राः अस्मद्वृद्धप्रमातामही अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यतादिकं तिलोकदं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधानम, तस्यै स्वधा नमः॥

अन्यतर्पण-ॐ ज्येष्ठास्तृप्यन्ताम् ॐ कनिष्ठा स्तृप्यन्ताम्। ॐ ज्ञातय स्तृप्यन्ताम्। ॐ आत्मबान्धवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्तृप्यन्ताम्। ॐ पितृबान्धवा स्तृप्यन्ताम्। ॐ मातृ बान्धवास्तृप्यन्ताम्।। भूदेवास्तृप्यन्ताम्। भू मनुस्यास्तृप्यताम्।।

पुनः सव्य होकर सीधा बैठकर देव तीर्थ से निम्न श्लोकों से जलांजलि दे-

देवासुरास्तथा नागा यक्षा गन्धर्व किन्नराः। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धा कूष्माण्डास्तरवः खगाः। जलेचरा भूनिलया वायाधाराश्च जन्तवः। तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुना खिलाः।। पुनः अपसव्य होकर दक्षिण मुखकर पितृतीर्थ से जल दे-

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया।।
येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्य जन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वेतृप्तिमायान्तु मद्दत्तेन तिलाम्बुना।।
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः।
तेषां हि दत्तमक्षयमिदमस्तु तिलोदकम्।।
आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षिपितृमानवः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः।।
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वस्त्र निष्पीडन[१]-तर्पण होने के बाद वस्त्र की चार तह कर उसमें तिल जल छोड़कर बायीं ओर निचोड़े।

मंत्र-ये के चास्मत् कुले जाताः अपुत्रा गोत्रिणो मृताः। ते गृह्णान्तु मयादत्तं वस्त्रनिष्पिडनोदकम्॥

भीष्म तर्पण-इसके बाद पीतृतीर्थ से कुशा लेकर भीष्मपितामह को जल दे-

भीष्मः शान्तनवोवीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्॥

समर्पण-अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षि मनुष्य पितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान नारायणः प्रीयतां नममः। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु॥ विष्णवे नमः विष्णवे नमः विष्णवे नमः॥

सूर्य अर्घ्य देकर भगवान नारायण की प्रार्थना-

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति श्रुतिः॥
दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्राद्ध चनोमाव्यगमद्वहु देयं च नो ऽस्त्विति॥

॥इति पितृतर्पण प्रयोग सम्पूर्ण॥

---

१. वस्त्रं चतुर्गणीकृत्य पीडचेच्य जलाद्वहिः।
वामकोष्टे निक्षिप्य द्विराचम्य शुचिर्भवेत्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देव पूजन सामग्री

श्रीफल, गंगाजल, अक्षत, दूध, यज्ञोपवीत, दही, सौभाग्यद्रव्य, घी, पुष्प, पुष्पमाला, शहद, इलायची, शक्कर, पीली सरसों, केशर, कपूर, चन्दन, दूर्वा, सिन्दूर, कुमकुम, तुलसी पत्ते, मौली, विल्वपत्र, धूप, गेहूँ का आटा, अगरबत्ती, नारियल, पंचपात्र आचमन, ताम्बूल, कुशा के आसन, पूंगीफल, वस्त्र, प्रतिमा, कलश, जौ, पंचरत्न, पंचपल्लव, सप्तधान्य, सप्तमृत्तिका, वरण सामग्री, रुद्राक्ष माला, अक्षत, तिल, गोमूत्र, गोमय, ग्रह पूजन सामग्री, ग्रह समिधा आदि।

वास्तु पूजन सामग्री-नाग, प्रतिमा, कांसे की थाली, चावल रंगने हेतु रंग-लाल, हरा, पीला, काला। हवन सामग्री, समिधा, इत्यादि। **नक्षत्र शान्ति हेतु अन्य सामग्री**-चार कलश ताम्बे के एक घड़ा सौ या सत्ताइस छेदवाला, सतनाजा, पांच ब्राह्मणों के लिए वरण सामग्री, गाय, सूर्प, वस्त्र, नक्षत्र, मूर्ति, देवदारु, सफेद चन्दन, रक्त चन्दन, कमल गठ्ठे, नीलोफर, कूट, कंगनी, सूठ, नागर, मोथा, आंवला, वच्च, अगर, तगर, मासी, बालछड़, गजमद, तीर्थेदक, सोना, मूंगा, माणिक्य, हीरा, सत्ताइस नदियों का जल, एक सौ औषधि, विष्णुकांता, सहदेइ आदि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वृहद कवच संग्रह

संग्रहकर्ता: श्री शिवस्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में सूर्य, नारायण, गोपाल, गायत्री, दिव्य काली, हनुमान, गणेश, श्री शरीरोग्यप्रदं दिव्य सूर्य कवचम्, दुर्गा, सरस्वती, तुलसी, अन्नपूर्णा, महालक्ष्मी, नृसिंह, राधा, धनदा, बटुक भैरव, सुदर्शन, दत्तात्रेय कवच, मृत संजीवनी, प्रत्यंगिरा, दस महाविद्याओं के अलग-अलग, श्री कुण्डिलनी, यमुना, गंगा, परशुराम आदि कवचों का संग्रह किया गया है।

कवच का अर्थ है जिसके धारण करने से शरीर की रक्षा हो, कवच कोई भी लौकिक या परलौकिक, हमारी नित्य-उपासना पूजा में प्रार्थना आदि मंत्र, ध्यान की पूजा रहती है। एक अति प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ रुद्रयामल तंत्र के उत्तर तंत्र में शिवजी से भगवती द्वारा कवच महात्म्य के बारे में पूछे जाने पर शिवजी बताते हैं कि-

नाम्नाः शत गुणं स्तोत्र ध्यान तस्माच्छतादिकं।
तास्माच्छाताधि के मन्त्रः कवचं तच्छताधिकम्।।

अर्थात नाम से स्तोत्र सौ गुणा, स्तोत्र से अधिक ध्यान फलदायक हैं, ध्यान से सौ गुणा मंत्र लाभ देते हैं और मंत्र से भी सौ गुणा अधिक कवच पाठ से होता है।

प्रत्येक परिवार में रखने योग्य पुस्तक मूल्य 100/- रु0

भगवान वेदव्यास कृत

श्रीमद्भागवत महापुराणा सप्ताह कथा

(सुखसागर) लेखक-भक्त शिरोमणि ईश्वर दयाल जी

श्रीमद्भागवत में भागवत का महात्य, भगवान के 24 अवतारों की पूरी कथा, सृष्टि की रचना, भक्त ध्रुव प्रहलाद की भक्ति,- नरको-स्वर्गो का वर्णन, देवासुर संग्राम, श्री कृष्ण लीला का पूरा वर्णन सरल हिन्दी भाषा में दिया गया है। प्रत्येक घर में रखने योग्य पुस्तक। **मूल्य-160/- रु० फोन-01334-225619**

सत्यनारायण व्रत कथा भाषा टीका मूल्य 30/-

कर्मसिंह अमरसिंह, हरिद्वार फोन-01334-225619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवान वेदव्यास

श्रीमद्भागवत महापुराणा सप्ताह कथा

(सुखसागर) लेखक-भक्त शिरोमणि ईश्वर दयाल जी

श्रीमद्भागवत में भागवत का महात्य, भगवान के 24 अवतारों की पूरी कथा, सृष्टि की रचना, भक्त ध्रुव प्रहलाद की भक्ति, नरको-स्वर्गों का वर्णन, देवासुर संग्राम, श्री कृष्ण लीला का पूरा वर्णन सरल हिन्दी भाषा में दिया गया है। प्रत्येक घर में रखने योग्य पुस्तक। मूल्य-160/- रु० फोन-01334-225619

सत्यनारायण व्रत कथा भाषा टीका मूल्य 30/-

कर्मसिंह अमरसिंह, हरिद्वार फोन-01334-225619

श्री गरुड पुराण (महर्षि वेदव्यास कृत)

मृत्य होने पर मनुष्य कहाँ जाता है, किस अवस्था में रहता है, आत्मा का अस्तित्व है या नहीं, परलोक में जीव का अवस्थान किस प्रकार रहता है, यह सभी जिज्ञासा आदिम युग से ही मानव को आन्दोलित करती रही है। इन सब प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भगवान वेद व्यास जी द्वारा दिया गया है। यही कारण है कि आज भी गरुड़ पुराण का पाठ मन की शान्ति के लिए किया जाता है। सरल हिन्दी बहुत मोटे अक्षरों में बड़ा। 125/-रु०

गरुड़ पुराण प्रेत कल्प (संस्कृत हिन्दी)	100/-रु०
नासकेतोपख्यान भा.टी.	50/- रु०

शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी (सम्पूर्ण रुद्रीपाठ)

लेखक-शिव स्वरूप 'याज्ञिक'

अनेक स्तोत्र पाठ विधि स्वर सहित 45/-

कर्मसिंह अमरसिंह, हरिद्वार फोन-01334-225619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

for
Scanning
30/11/2024

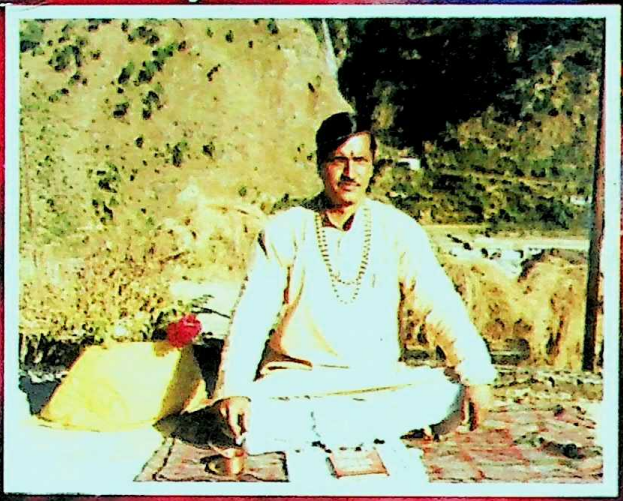
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पं० शिव स्वरूप याज्ञिक भटवारी (उत्तरकाशी)



पंडित विद्वानो के लिए पढ़ने योग्य पुस्तकें

1. सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्
2. बृहत नित्यकर्म पद्धति
3. सम्पूर्ण हवन रहस्यम्
4. पूजा भास्कर
5. श्री सुक्त (भाषा टीका)
6. अन्तेष्टी कर्म रहस्य (भाषा टीका)
7. रुद्राष्टाध्यायी
8. षटवर्गीय जन्म पत्रिका
9. गरुड़ पुराण (भाषा टीका)

कर्म सिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता, हरिद्वार

Digital Preservation Foundation, Chandigarh